Vol.20, Issue 7 | Annual Subscription ₹ 420

May 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

# रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Rotary

# नियमित रूप से *रोटरी न्यूज़* प्राप्त करने के लिए अपने पते का नवीनीकरण कीजिए

| Subscription in charge | District numbers |
|---|---|
| **Kalpana**<br>*kalpana@rotarynewsonline.org* | 2982, 3020, 3054, 3090, 3100, 3170, 3181, 3182, 3190, 3250, 3262 |
| **Sasikala**<br>*sasi@rotarynewsonline.org* | 2981, 3012, 3110, 3120, 3141, 3142, 3201, 3211, 3212, 3261, 3291 |
| **Valli**<br>*valli@rotarynewsonline.org* | 3000, 3030, 3060, 3070, 3080, 3131, 3132, 3232, 3240 |
| **Anuvarshini**<br>*anu@rotarynewsonline.org* | 3011, 3040, 3053, 3150, 3160, 3202, 3231 |

आप हमारे सब्सक्रिप्शन प्रमुख सेंथिल कुमार से *senthil@rotarynewsonline.org* पर संपर्क कर सकते हैं

आप इस नंबर 044-42145666 या 9840078074, पर कॉल कर सकते है और आप अपने मंडल के सब्सक्रिप्शन प्रभारी से पूछ सकते है और शिकायत दर्ज करवा सकते है।

लेकिन इन सबसे पहले, इन बातों को सुनिश्चित कर लीजिए:

1. आपने अपने क्लब को *रोटरी न्यूज* के शुल्क का भुगतान कर दिया हो।
2. क्लब ने रोटरी न्यूज ट्रस्ट को शुल्क भेज दिया हो।
3. हो सके तो ईमेल और फोन नम्बर के साथ, सही पिनकोड वाला पूरा पता और आपका नाम हमें दे दिया गया हो।

कोविड महामारी की चुनौतियों के बावजूद, *रोटरी न्यूज* ट्रस्ट की टीम नियमित रूप से हर महीने समय पर पत्रिका निकालती और आप तक पहुँचाती है। हम यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश कर रहे है कि हमारे सभी अभिदाताओं को समय पर पत्रिका मिल जाए। लेकिन हमें अभी भी शिकायतें मिल रही है कि आप में से कुछ लोगों को उनकी प्रतियां प्राप्त नहीं हो रही है।

### उसके निम्न कारण हो सकते है:

- पते में परिवर्तन, जिसकी जानकारी हमें नहीं हो। यदि आपको आपकी प्रति प्राप्त नहीं हो रही है, तो कृपया हमें तुरंत एक मेल भेजें, अपना नवीनतम पता संलग्न करें, और यदि पता नहीं बदला है तो सही पिन कोड के साथ पुराना पता भेजिए। हमसे rotarynews@rosaonline.org पर संपर्क कीजिए।
- कृपया इस बात को याद रखें कि भले ही आपकी नवीनतम जानकारी रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय के पास हो, लेकिन हमारे पास उस डेटा तक पहुंच नहीं है। रो ई की गोपनीयता नीति के कारण, उस डेटा को प्राप्त करने के बारम्बार किए गए प्रयास विफल रहे है। इसलिए कृपया हमसे सीधे संपर्क कीजिए।
- आपको आपकी प्रति ना मिलने पर कृपया अपने डाकिए या पोस्ट ऑफिस से पता कीजिए।
- क्लब के अधिकारी, सदस्यों द्वारा क्लबों को छोड़ने या नए सदस्यों के जुड़ने की जानकारी हमसे नियमित रूप से साझा कीजिए। आपके द्वारा क्लब छोड़ चुके सदस्यों की जानकारी ना मिलने पर, उन्हें पत्रिका मिलती रहेंगी, वो भी बिना भुगतान किए। और जो नया सदस्य जुड़ता है, उसे अपने सब्सक्रिप्शन शुल्क का भुगतान करने के बावजूद भी पत्रिका नहीं मिलेगी, क्योंकि रोटरी न्यूज ट्रस्ट कार्यालय के पास उस नए सदस्य की कोई जानकारी नहीं होगी।
- इस बात का भी ध्यान रखिए कि किसी भी एक रोटरी पत्रिका - The Rotarian (जो अब रोटरी हो गई है), या एक क्षेत्रीय पत्रिका, की सदस्यता लेना सभी रोटेरियनों के लिए अनिवार्य है जैसा कि मैनुअल ऑफ़ प्रोसीजर में रो ई द्वारा निर्धारित किया गया है। ऐसा नहीं करने पर क्लब को निलंबित किया जा सकता है।

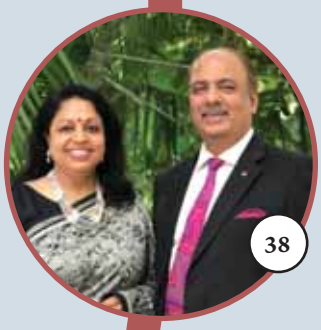

# विषयसूची


**12 मानवीय मूल्यों के लिए साइकलिंग**

युवा रोटेरियन नरेश कुमार ने चेन्नई से हैम्बर्ग सम्मेलन तक 8,646 किमी तक साइकिल चलाई।

**20 आइए रोटरी को एक ऐसा पसंदीदा संगठन बनाएं जिसे प्रचार, विपणन की जरूरत ना पड़े: RIDE वेंकटेश**

*रोटरी न्यूज़* को दिए गए एक साक्षात्कार में, नवनिर्वाचित रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश ने अपनी व्यक्तिगत और रोटरी यात्रा साझा की।

**32 हमारी संस्था के विकास के लिए अपनी रोटरी के किस्से कहानियां सुनाएं: जेनिफर जोन्स**

ज़ोन इंस्टिट्यूट, *द ओडिसी*, में RIPN जेनिफर जोन्स ने किलिमंजारो की चोटी पर चढ़ने के अपने दिलचस्प विवरण से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

**36 WASH परियोजनाओं का विस्तार**

भारत के रोटेरियनों द्वारा नियोजित आगामी WASH कार्यक्रमों का विवरण।

**38 कोविड टीकाकरण महत्वपूर्ण है, लेकिन पोलियो उन्मूलन तो हमारे डीएनए में है**

अंतर्राष्ट्रीय सभा के उद्घाटन सत्र में रो ई निदेशक कमल संघवी के साथ RIPE शेखर मेहता और राशी की एकांत वार्ता हुई।

**60 घर पर 'काला सोना' बनाएं**

अपने रसोई घर के कचरे से अपने पौधों के लिए उर्वर खाद बनाना सीखें।

**64 गीता दत्त गीतो की बैलेरीना**

इस अद्वितीय गायक ने 1940 और 1950 के दशक के दौरान बॉलीवुड को कुछ सबसे खुशनुमा गीत दिए।

**70 पीस ऑन एअर्थ, मर्सी टू**

ऑस्ट्रेलियाई उद्यमी स्टीव किलीली की पुस्तक जो इस बात की झलक प्रस्तुत करती है कि क्यों देश युद्ध में लिप्त होते है।


**कवर पर** : रोटेरियन नरेश कुमार, जो अपने एक दौड़ कार्यक्रम में चेन्नई से हैम्बर्ग साइकलिंग करते पहुंचे।

# आपके पत्र

## प्रसाधिका प्रशिक्षण पर प्रेरक कहानी

रो ई मंडल 3232 द्वारा प्रायोजित परियोजना 'सुंदरी' की खूबसूरत कवर फोटो देखकर खुशी हुई, जिससे 100 नि:शक्त लेकिन ऊर्जावान युवतियों की ज़िंदगियाँ बदल जाएगी। अपने लेख में संपादक ने सजीव ढंग से युवा नेतृत्वकर्ताओं द्वारा दुनिया में परिवर्तन लाने का वर्णन किया है। रो ई निदेशकों ने मातृ एवं शिशु देखभाल के महत्व को अच्छी तरह से समझाया है। यह पढ़कर दुख हुआ कि महामारी के कारण 11 मिलियन लड़कियाँ स्कूल जाना बंद कर सकती है। अंतर्राष्ट्रीय सभा 2021 में रोटरी नेतृत्वकर्ताओं द्वारा दिए गए भाषण प्रेरणादायक है। *सजावटी मछलीपालन के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना* दिलचस्प है। फिनलैंड की प्रधान मंत्री सना मरीन और हिंदुस्तानी संगीत के गायक भीमसेन जोशी पर लेख दिलचस्प है। अपशिष्ट प्रबंधन के 5R एक उपयोगी लेख है।

*फिलिप मुलापोने एम टी,*
*रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211*

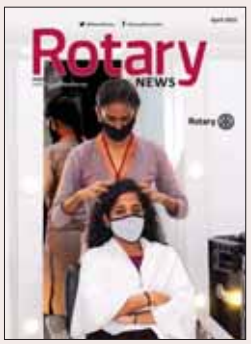


एक बार फिर रशीदा और उनकी टीम ने हमें एक सर्वोत्तम संस्करण दिया है। LBW लेख ने मुझे मेरे स्कूली जीवन की याद दिला दी। संपादकीय में क्यूबा के एक डॉक्टर द्वारा किए जा रहे अच्छे काम पर प्रकाश डाला गया है जिसे रोटरेकटरों को पढ़ना चाहिए। संपादक खबरों को सूंघ लेती है जिससे हमें कई विषयों पर मूल्यवान जानकारी मिलती है। न्यासी प्रमुख के आर रविन्द्रन का अन्य संगठनों के साथ क्लब की साझेदारी करने के आग्रह का स्वागत है। प्रसाधिकाओं के प्रशिक्षण पर जयश्री की कवर स्टोरी शानदार है। यह जानकर अच्छा लगा कि पीडीजी रेखा शेट्टी ने इस परियोजना की शुरुआत की। मैं यह जानकर हैरान था कि महामारी के कारण 11 मिलियन लड़कियां इस साल स्कूल नहीं जा सकीं। नए रोटरी मॉडल पर मुत्तुकुमारण का लेख दिलचस्प था।

*नन नारायणन,*
*रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000*

अप्रैल अंक शिक्षाप्रद लेखों का एक संग्रह है। कवर पेज प्रेरणादायक है। रो ई मंडल 3232 ने 100 लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्रशिक्षित करने का अच्छा काम किया है। प्रभावशाली युवाओं पर संपादक का लेख उतना ही उपयोगी है जितना गंगा नदी पर और मंडल के नेतृत्वकर्ताओं के प्रशिक्षण पर लिखे गए लेख उपयोगी है। क्लब परियोजनाओं का कवरेज हम सभी को प्रेरणा देते है। पंडित भीमसेन जोशी भारतीय संगीत के एक दिग्गज थे। हम उन पर लिखे गए लेख के लिए आभारी है।

*अनुज अग्रवाल,*
*रोटरी क्लब चांदौसी सिटी स्टार - मंडल 3100*

कवर फोटो और परियोजना की कहानी महिलाओं के सशक्तिकरण पर रोटरी के दृष्टिकोण के बारे में बहुत कुछ कहती है। रोटरी क्लब भुवनेश्वर एकाम्र क्षेत्र ने सजावटी मछली पालन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आजीविका को बढ़ाया है। रोटरी क्लब पटियाला मिडटाउन द्वारा वंचित महिलाओं को दिया जा रहा सिलाई प्रशिक्षण तारीफ़ के काबिल है।

*नवीन रमेश गर्ग, रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090*

अप्रैल अंक हमेशा की तरह ही दिलचस्प है; रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने अंतर्राष्ट्रीय सभा 2021 में DGE और DGN को संबोधित करते हुए धरती की रक्षा के लिए रोटेरियनों की सेवाओं का विस्तार करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

*आर श्रीनिवासन,*
*रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000*

रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने अपने संदेश में उचित रूप से कहा है कि रोटरेकटर अच्छा काम करते है जो कहीं न कहीं रोटेरियनों द्वारा कीय जाने वाले काम के बराबर ही है। मैं संपादक से सहमत हूँ कि महिलाओं को केवल 1987 से रोटरी में स्थान दिया गया था जिसमें वाकई में बहुत देर हो गई थी। हालांकि, हम पहली महिला रो ई अध्यक्ष (जेनिफर जोन्स) देखने के लिए उत्सुक है जो 2022-23 में कार्यभार संभालेंगी। कोयंबटूर के गियर मैन पर लेख सूचनाप्रद है।

*एस मुनियांदी,*
*रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000*

पोलियो पर PRIP राजेंद्र साबू की यादें दिलचस्प थी। कवर पेज पर अंतिम पोलियो पीड़ित रुखसार की फोटो उपयुक्त और यादों से भरी हुई थी। RIPE शेखर मेहता के साक्षात्कार में उनके व्यक्तित्व के कुछ आकर्षक पहलू सामने आए।

*वी जी देवधर, रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030*

*रोटरी न्यूज* अब एक बहुआयामी पत्रिका बन गई है। मार्च अंक में जाम्बिया मलेरिया परियोजना, भारतीय फार्मा और परिहार्य बहरेपन के अवसरों पर विविध लेख मौजूद थे।

*सौमित्र चक्रवर्ती,*
*रोटरी क्लब कलकत्ता इनोवेशन - मंडल 3291*

मैं हमेशा *रोटरी न्यूज* की प्रतीक्षा में रहता हूँ; पहले मैंने चेन्नई के दुगर टॉवर में काम किया और बाद में बेंगलुरु चला गया। तब रशीदा भगत संपादक का पदभार संभाला चुकी थी। *द हिंदू* का नुकसान रोटरी का फायदा है।

*मुरली कृष्णन,*
*रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड - मंडल 3190*

# आपके पत्र

## कोयंबटूर का 'गियर मेन'

निस्वार्थ सेवा करने वाले कोयम्बटूर के 'गियर मैन' पर लिखे लेख का दिल से स्वागत है क्योंकि यह बताता है कि कैसे कुछ लोगों ने बदले में बिना किसी चीज़ की अपेक्षा किए सेवा को अपना व्यवसाय बना लिया है। यह अच्छी बात है कि *रोटरी न्यूज* ने सुब्रमण्यन पर एक लेख प्रकाशित किया; यह वास्तव में एक सराहनीय उपलब्धि है। ऐसे ही काम करते रहिए।

*Rm मुत्तुकरुप्पन*
*रोटरी क्लब संकरपुरम - मंडल 2982*

रो ई निदेशक कमल संघवी ने भारत में बढ़ते जल संकट (मार्च अंक) को दर्शाने के लिए कई आँकड़े प्रस्तुत किए है। उन्होंने उचित रूप से कहा है कि जहाँ प्यास से बहुत कम लोग मरते है, वहीं लाखों लोग जलजनित बीमारियों से मर जाते है। जल और स्वच्छता परियोजनाओं के लिए रोटरी का पांच वर्षीय लक्ष्य सराहनीय है।

*डॉ पॉन मुथइयाँ*
*रोटरी क्लब अडूथुरई - मंडल 2981*

## उत्कृष्ट मार्च अंक

मार्च अंक अच्छी तरह से डिजाइन किया हुआ और जानकारीपूर्ण था। भारत की अंतिम पोलियो पीड़ित रुखसार खातून को साइकिल दान करने के लिए रोटरी क्लब हावड़ा को बधाई, जिसकी साइकिल की सवारी करते हुए की फोटो को कवर पेज पर उचित रूप से प्रकाशित किया गया है। कोयम्बटूर के एक व्यक्ति, सुब्रमण्यम को समाज में उनके योगदान के लिए सलाम। एक सुंदर पत्रिका के लिए धन्यवाद।

*श्रद्धा पी,*
*रोटरी क्लब ठाणे ग्रीन सिटी - मंडल 3142*

मार्च अंक में बहुत सारी दिलचस्प सामग्री थी। संपादक का संदेश *एक सर्वोत्कृष्ट नेता* शानदार था। साथ ही, *पोलियो मुक्त भारत की 10वीं वर्षगांठ का समारोह* पर लिखी गई रिपोर्ट शानदार थी। टीम रोटरी न्यूज़ द्वारा लिखित लेख रुखसार के लिए साइकिल उत्कृष्ट था। निस्वार्थ सेवा करने वाले कोयम्बटूर के 'गियर मैन' पर लिखी गई जयश्री की रिपोर्ट सभी के लिए प्रेरक है।

*डेनियल चित्तिलापिल्ली,*
*रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3201*

मैं पोलियो मुक्त भारत के 10 साल की उपलब्धि पर किए गए कवरेज की सराहना करता हूँ। सामूहिक फोटो में दिवंगत रो ई निदेशक वाई पी दास की तस्वीर ने मेरे दिल को छुआ। वह एक समर्पित रोटेरियन थे और रोटरी की मानवीय परियोजनाओं में उनका योगदान अविस्मरणीय है। भारत के पोलियो मुक्त होने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

*डॉ सुरेश के सबलोक*
*रोटरी क्लब नाहन सिरमौर हिल्स - मंडल 3080*

मार्च के संपादकीय (*एक सर्वोत्कृष्ट नेता*) ने रोटरी में लैंगिक असंतुलन पर उचित रूप से ध्यान केंद्रित किया है। यह सराहनीय है कि RIPN जेनिफर जोन्स इस असंतुलन को ठीक करने का लक्ष्य रख रही है। लेकिन लैंगिक असमानता केवल रोटरी में ही नहीं बल्कि हर जगह मौजूद है। कोई भी राष्ट्र अपनी महिलाओं की उपेक्षा करके प्रगति नहीं कर सकता।

*राज कुमार कपूर*
*रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080*

## लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता दें

हालांकि कोविड की वजह से लड़कियों की शिक्षा प्रभावित हुई है, लेकिन रोटेरियन जागरूकता पैदा करके या सभी प्रकार के संस्थानों में स्कूली शिक्षा को नि:शुल्क करने की सेवा प्रदान करते हुए बदलाव ला सकते है। प्रोजेक्ट पॉजिटिव हेल्थ की तरह ही लड़कियों की शिक्षा एक ऐसा मुद्दा होना चाहिए जिसके लिए बिना किसी लैंगिक भेदभाव के टीआरएफ अनुदान उपलब्ध होने चाहिए।

*अरुण कुमार दास*
*रोटरी क्लब बरीपदा - रो ई मंडल 3262*

हमें खुशी है कि आपने *रोटरी प्लस* में हमारे चार कोविड टीकाकरण शिविर को जगह दी। यह हमारे क्लब के सदस्यों को प्रोत्साहित करेगा। धन्यवाद।

*मनोज आर कुमार,*
*रोटरी क्लब आगरा - मंडल 3110*

## टीआरएफ निधि एकत्रित करने का एक नवीन तरीका

एक क्लब अध्यक्ष के रूप में, मैं टीआरएफ संग्रहण हेतु किए गए अपने प्रयोग को साझा करता हूँ। मैंने पहली बार टीआरएफ में 1000 डॉलर दान किए। फिर मैंने व्हाट्सएप और फेसबुक पर अपने दोस्तों और अन्य रोटेरियनों से दान करने का अनुरोध किया और टीआरएफ के बारे में जानकारी साझा की। मैंने कहा कि मैं 10 डॉलर के चेक भी स्वीकार करूंगा। जैसे ही मुझे चेक मिलने लगे, मैंने उनके नाम व्हाट्सएप ग्रुपों पर प्रकाशित कर दिए। एक महीने में, मैंने दान के रूप में 3,000 डॉलर एकत्रित किए। मेरा लक्ष्य इस महामारी के दौरान टीआरएफ के लिए 5,000 डॉलर एकत्रित करना है।

*मधुकर डोईफोड़े,*
*रोटरी क्लब बारसी - मंडल 3132*

We welcome your feedback. Write to the Editor:
**rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.**
Mail your project details, along with hi-res photos,
to **rotarynewsmagazine@gmail.com**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** in our website **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

# विनिमय कार्यक्रम और अधिक मजबूत होंगे

कई वर्षों से, सुज़ैन और मैं अपने घर में रोटरी यूथ एक्सचेंज में आए छात्रों की मेजबानी कर रहे है। जब छात्रों और परिवारों को सुरक्षित रखने हेतु COVID-19 की वजह से रोटरी के विनिमय कार्यक्रमों को निलंबित कर दिया, तो हमें बहुत दुख हुआ, विशेष रूप से प्रतिभागियों के लिए, क्योंकि उन वर्षों को दोहराया नहीं जा सकता। आशा के साथ भविष्य को देखते हुए, हम यूथ एक्सचेंज के अधिकारियों, मेजबान परिवारों और अन्य स्वयंसेवकों को बीते वर्षों में किए गए उनके योगदान के लिए धन्यवाद देते हैं।अनेक अनिश्चितताओं की वजह से, हम छात्रों, परिवारों एवं स्वयंसेवकों को जोड़ने आभासी विनिमय के लिए मंडलों को प्रोत्साहित कर रहे है।

जो लोग रोटरी यूथ एक्सचेंज में भाग लेने में भाह नहीं ले पाते है, उनके लिए रोटरी में अन्य अवसर है। New Generations Service Exchange (NGSE) एक रोटरी कार्यक्रम है जिसे व्यापक स्तर पर पहचान मिलनी चाहिए: यह 18 से 30 वर्ष की आयु के लोगों के लिए सामुदायिक सेवा में व्यक्तिगत रूप से या एक समूह के माध्यम से भाग लेने एवं प्रशिक्षण अनुभव प्राप्त करने का एक उत्कृष्ट अवसर है। तीन साल पहले अपने NGSE के अनुभव के दौरान जिम्बाब्वे के एक रोटरेक्टर सिमुकई मत्शाल्गा रेट्ज़बर्ग में हमारे साथ रहे थे।

*जब मैंने New Generations Service Exchangeकार्यक्रम के लिए आवेदन किया, तो मुझे आभास नहीं था कि मैं एक जीवन परिवर्तक अनुभव में भाग लेने जा रहा हूं। इस कार्यक्रम ने मुझे इस अवसर के अलावा बहुत कुछ दिया है। इसने मुझे तेजी से असफल होने, जल्दी सीखने और खुद के होने के महत्व के बारे में सिखाया। मेरे कुछ सबसे बेहतरीन अनुभव खाने की मेज पर हुए। यह समझने में मुझे कई हफ्तों का समय लगा कि एक अजनबी भी मेरा उतना ही अच्छे से ध्यान रख सकता है जितना कि रोटरी परिवार के इन सदस्यों ने रखा। जिन लोगों से मैं मिल उन सभी से सीखे गए नम्रता के सबक से मैं प्रेरित हुआ। मुझे एक नई संस्कृति समझ में आई और मैंने महसूस किया कि जो चीजें हमें लोगों के रूप में अलग करती है वे हमारे अनुभव, और कई बार, हमारी गलत धारणाएं होती है। पेशेवर रूप से, इसने मुझे एक इंजीनियर के रूप में अपनी क्षमताओं पर विश्वास दिलाया। अन्य संगठनों द्वारा संभाली गई मुश्किलों को देखने के बाद मुझे एहसास हुआ मेरे देश में चुनौतियों को हल करने के लिए सबसे अच्छा व्यक्ति मैं था। उत्तरी जर्मनी से घर लौटते हुए, मैंने एक पदोन्नति को अस्वीकार कर दिया, अपनी नौकरी छोड़ दी, और एक पारिवारिक व्यवसाय शुरू किया - एक ऐसा निर्णय जो मैं पहले डर की वजह से कभी नहीं ले पाता। मैं रोटरी परिवार का ऋणी हूं। मुझे नहीं पता कि जिन दोस्तों, परामर्शदाताओं, और परिवारों को मैंने पीछे छोड़ दिया था वे जानते थे या नहीं कि उन्होंने मेरे जीवन को स्थायी रूप से बदल दिया था। मुझे उम्मीद है कि वे अब जान चुके होंगे।*

न्यू जनरेशन सर्विस एक्सचेंज ने सिमुकई के जीवन को बदल दिया। यह आपका जीवन भी बदल सकता है। सभी रोटरी सदस्य किसी भी समय कुछ ऐसा ही अनुभव कर सकते हैं: मैं सभी को इस महीने एक आभासी यात्रा करने और अन्य क्लबों की बैठकों का अनलाइन दौरा करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। और जब आप महान लोगों से मिलेंगे और नए दोस्त बनाएंगे तो आप जानेंगे कि दुनिया भर में रोटरी कितनी अलग है। आइए ऑनलाइन इन संबंधों का निर्माण करें - और बाद में, जब समय सही होगा, तो सभी उम्र के रोटरी सदस्यों के लिए एक और उत्कृष्ट कार्यक्रम - रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज - के माध्यम से उनके साथ वैयक्तिक आदान-प्रदान का आनंद ले।

व्यक्तिगत रूप से मिलने की हमारी क्षमता अभी सीमित है, लेकिन हम जानते हैं कि *रोटरी अवसर प्रदान करती है,* हमेशा। अभी तैयार होने का समय है, ताकि जब महामारी का संकट खत्म हो, तो रोटरी का विनिमय कार्यक्रम पहले की तुलना में अधिक मजबूती से वापस उभरे, उस दुनिया की सेवा करने के लिए जो फिर से जुड़ने के लिए लालायित है।

**सिमुकई मत्शाल्गा**
रोटरेक्ट क्लब हरारे पश्चिम जिम्बाब्वे

**होल्गर नेक**
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

# कोविड अग्निकुंड

कोविड महामारी की दूसरी और अत्यंत विनाशकारी लहर ने भारत और उसके नागरिकों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है। प्रत्येक दिन 3 लाख से अधिक नए मामले आने के साथ, हम ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूज़ीलैंड आदि देशों के लिए अचानक से अछूत बन गए हैं और आज 23 अप्रैल को जब मैं यह सम्पादकीय लिख रही हूँ, खबर है कि यूएई और सिंगापुर ने भी भारतीयों पर प्रतिबंध लागू कर दिए हैं। आखिरकार न्यायपालिका ने भी प्रशासन की आलोचना करते हुए ज़बरदस्त फटकार लगाई; सर्वोच्च न्यायालय ने स्थिति को भयानक वर्णित किया, सरकार से एक राष्ट्रीय योजना बनाने का आग्रह किया क्योंकि पीड़ित नागरिक राहत के लिए विभिन्न उच्च न्यायालयों में गुहार लगा रहे थे। उसी सुबह, अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर एक तस्वीर छपी थी, जिसमें एक हताश आदमी जिसके ऑक्सीजन सिलेंडर लगा हुआ है, दिल्ली के एक अस्पताल के बाहर, पेड़ के नीचे बैठा बिस्तर का इंतजार कर रहा था। श्मशान घाट से आ रही कहानियां और भी हृदय विदारक हैं।

मुझमें इतना साहस नहीं था कि मेरे इन-बॉक्स में आ रही वीडियो की बाढ़ को खोल सकूं, जिसमें अस्पतालों के बाहर हताश परिजन इलाज और ऑक्सीजन के लिए चिल्ला रहे थे, रो रहे थे। चेन्नई के प्रमुख अस्पतालों में आपातकालीन कक्षों के बाहर 10-15 एम्बुलेंस की लाइन लगी हुई थी। प्रसिद्ध वायरोलॉजिस्ट और रोटेरियन डॉ जैकब जॉन, जो भारत को पोलियो से मुक्त कराने की रणनीति में सबसे अग्रणी थे, *द हिंदू बिजनेस लाइन* के माध्यम से उन्हें इस प्रकार उद्धृत किया गया था: "हम दूसरी लहर का पूर्वानुमान तो लगा नहीं पाए बल्कि हमारे जीनोमिक विश्लेषकों की भी उपेक्षा की। यह अफ़सोस की बात है कि हमारे पास लैब, लोग, उपाय, और दक्षता सब कुछ थी, लेकिन हमने इसकी कोई परवाह नहीं की, क्योंकि मामलों की संख्या कम हो रही थी।" अन्य विशेषज्ञों ने आशंका जताई कि ठीक होने से पहले कई चीजें बहुत बिगड़ जाएंगी।एक वक़्त था जब हमें अपनी उच्च स्तरीय, मजबूत व उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा प्रणाली और चिकित्सकीय दक्षता पर गर्व था, जिसका संचालन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ लोग करते थे और यह चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा दे रही थी। लेकिन इस महामारी ने हमारी स्वास्थ्य प्रणाली को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया है । क्या हमने कभी सोचा था कि दिल्ली हाईकोर्ट के एक जज ये कहेंगे: "सड़क पर खड़े आम आदमी की बात तो छोडो, आज अगर मुझे अस्पताल में बिस्तर की ज़रुरत पड़े तो नहीं मिलेगा। इससे भी बुरा ये है कि लोग ऑक्सीजन की कमी से मर रहे हैं।" इस संदर्भ में अपोलो हॉस्पिटल्स की संयुक्त प्रबंध निदेशक संगीता रेड्डी ने ट्वीट कर सरकार से ऑक्सीजन टैंकरों पर 'एम्बुलेंस' लिखने की अनुमति देने का आग्रह किया था, बात समझ में आई, काफी लोगों को फायदा भी हुआ।

लेकिन अंत में, देश भर में इसके वर्तमान हालात के लिए मुख्य रूप से दोष हमारी शिथिलता को जाता है, सावधानी बरतने में, सामाजिक दूरी बनाए रखने में, मास्क पहनने और राजनीतिक रैलियों सहित विशाल धार्मिक और अन्य समारोहों में भाग लेने में और वो भी बिना पर्याप्त सुरक्षा उपायों के। अनपढ़ों की बात तो छोड़िये, यहां तो पढ़े लिखे लोगों ने सबसे गैर-जिम्मेदाराना बर्ताव किया है। लेकिन इन विषम परिस्थियों में भी जिस उत्साह के साथ रोटरी, पूर्व रो इ निदेशक अशोक महाजन के नेतृत्व में, कोविड के खिलाफ लोगों को टीका लगाने में सरकार की मदद कर रही है और जिस प्रकार रोटेरियन अपने रोटरी नेटवर्क का उपयोग कर आपात स्थिति में तुरंत चिकित्सा सुविधा पहुंचा कर अधिक से अधिक लोगों की मदद कर रहे हैं वो काबिले तारीफ़ है।

हां, जिन लोगों ने वैक्सीन की दोनों खुराक लगवा ली हैं, उनमें से कुछ दुबारा संक्रमित भी हुए हैं। लेकिन अच्छी खबर यह है कि टीकाकरण होने के बाद, पुनः संक्रमित होने पर मृत्यु दर में काफी कमी दर्ज़ की गई है। इस अफरा-तफरी में पूरे घटनाक्रम के दौरान, जिस राजनेता ने अपने संयमित, शांत और गंभीर व्यवहार से प्रभावित किया, वो हैं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, उन्होंने मीडिया में, विज्ञापनों के माध्यम से दिल्लीवासियों से अपील की कि वे ज़िम्मेदाराना व्यवहार करें, उनसे आग्रह किया कि टीका लगवाएं, उन्हें चेतावनी देते हुए कि इस बार वायरस बड़ी क्रूरता से 45 से कम उम्र के लोगों पर धावा बोल रहा है, और भी काफी कुछ। निश्चित रूप से, पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में चल रही मुख्यमंत्रियों की एक बैठक का लाइव टेलीकास्ट करना अक्षम्य था, जिस पर प्रधान मंत्री ने सख्त ऐतराज़ जताया था और उन्हें माकूल फटकार भी मिली थी। एक दूसरे पर दोषारोपण करने के बजाय हमारे अन्य राजनेताओं से भी इसी तरहके गंभीर और मर्यादित विचार विमर्श अपेक्षित है। लेकिन जरूरत है हमें ध्यान देने की ... और अमल करने की।

रशीदा भगत

## Governors Council

| | |
|---|---|
| RI Dist 2981 | DG R Balaji Babu |
| RI Dist 2982 | DG K S Venkatesan |
| RI Dist 3000 | DG A L Chokkalingam |
| RI Dist 3011 | DG Sanjiv Rai Mehra |
| RI Dist 3012 | DG Alok Gupta |
| RI Dist 3020 | DG Muttavarapu Satish Babu |
| RI Dist 3030 | DG Shabbir Shakir |
| RI Dist 3040 | DG Gajendra Singh Narang |
| RI Dist 3053 | DG Harish Kumar Gaur |
| RI Dist 3054 | DG Rajesh Agarwal |
| RI Dist 3060 | DG Prashant Harivallabh Jani |
| RI Dist 3070 | DG CA Davinder Singh |
| RI Dist 3080 | DG Ramesh Bajaj |
| RI Dist 3090 | DG Vijay Arora |
| RI Dist 3100 | DG Manish Sharda |
| RI Dist 3110 | DG Dinesh Chandra Shukla |
| RI Dist 3120 | DG Karunesh Kumar Srivastava |
| RI Dist 3131 | DG Rashmi Vinay Kulkarni |
| RI Dist 3132 | DG Harish Motwani |
| RI Dist 3141 | DG Sunnil Mehra |
| RI Dist 3142 | DG Dr Sandeep Kadam |
| RI Dist 3150 | DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy |
| RI Dist 3160 | DG B Chinnapa Reddy |
| RI Dist 3170 | DG Sangram Vishnu Patil |
| RI Dist 3181 | DG M Ranganath Bhat |
| RI Dist 3182 | DG B Rajarama Bhat |
| RI Dist 3190 | DG B L Nagendra Prasad |
| RI Dist 3201 | DG Jose Chacko Madhavassery |
| RI Dist 3202 | DG Dr Hari Krishnan Nambiar |
| RI Dist 3211 | DG Dr Thomas Vavanikunnel |
| RI Dist 3212 | DG P N B Murugadoss |
| RI Dist 3231 | DG K Pandian |
| RI Dist 3232 | DG S Muthupalaniappan |
| RI Dist 3240 | DG Subhasish Chatterjee |
| RI Dist 3250 | DG Rajan Gandotra |
| RI Dist 3261 | DG Fakir Charan Mohanty |
| RI Dist 3262 | DG Saumya Rajan Mishra |
| RI Dist 3291 | DG Sudip Mukherjee |

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

# रो ई निदेशकों

## आमने-सामने

पांच साल पहले, संयुक्त राष्ट्र ने भविष्य के लिए एक दमदार दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था। वैश्विक लक्ष्य सभी के लिए एक स्वच्छ, निष्पक्ष, अधिक समावेशी दुनिया की एक रूपरेखा प्रस्तुत करते है। कोविड-19 के प्रकोप के साथ, इस परिकल्पना को साकार रूप देने की गति काफी कम हो गई। महामारी की दूसरी लहर ने कहर बरपाया है और सभी पहलुओं में एक अनियंत्रित गिरावट दर्ज की गई है। और इसने युवा आयु वर्ग को प्रभावित किया है। इसने इस तथ्य को सिद्ध किया कि 'रोकथाम इलाज से बेहतर है।' मैं सभी रोटेरियनों, क्लबों और मंडलों से वैयक्तिक बैठकें करने पर रोक लगाने का आग्रह करता हूं। कोविड सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करें और इस घातक वायरस के खिलाफ लड़ाई लड़ने में मदद करें। मैं रोटरी क्लबों, मंडलों और रोटेरियनों की सराहना करता हूं जिन्होंने चुनौतियों के बावजूद जबरदस्त सेवा की है।

किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी दौलत और ताकत उसके युवा होते है। सशक्त युवा राष्ट्र को सफलता और समृद्धि की ओर ले जाने वाली एक बड़ी ताकत हो सकते है। हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए हमें सबसे पहले अपने युवाओं को मजबूत और सशक्त बनाना होगा। आज, भारत दुनिया में सबसे कम उम्र के लोगों वाले देशों में से एक है जहाँ इसकी 60 प्रतिशत से अधिक आबादी कामकाजी आयु वर्ग वालों की है। यह एक सबसे बड़ा फायदा है।

बड़ी युवा आबादी वाले विकासशील देशों में जबरदस्त विकास की संभावना है क्योंकि वे युवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य में निवेश करते है और उन्हें उचित अवसर प्रदान करते है। आज के युवा कल के नवप्रवर्तक, निर्माता और नेता है। रोटरी में हम मानते है कि 'युवा सफेद कागज़ की तरह होते है; वे आपके द्वारा छोड़ी गई छाप को प्रतिबिंबित करते है'। चाहे वह रोटरेक्ट, इंटरेक्ट, RYLA या RYPEN हो, युवाओं पर रोटरी का ध्यान उनकी क्षमता की खोज करने और उसे पूरा करने में मदद करने पर है।

रोटरी चाहती है कि युवा अपने लक्ष्यों को अपनी क्षमताओं के स्तर तक कम न करें बल्कि अपनी क्षमताओं को अपने लक्ष्यों की ऊंचाई तक ले जाएं। और इसलिए युवाओं के साथ रोटरी के काम में नेतृत्व कौशल का निर्माण करना, शिक्षण, उन जिम्मेदारियों को भुलाना और फिर याद करना, जो उनमें से प्रत्येक की स्वयं और दूसरों के लिए है, और उन मूल्यों को आत्मसात करना शामिल है जो जीवन भर रह सकते है। युवाओं के लिए रोटरी आज जो कार्यवाही करती है उससे कल उनके जीवन को आकार देने में मदद मिलेगी।

हम सभी अपने धन और संसाधनों के अस्थायी संरक्षक है। धन का सबसे अच्छा उपयोग इसे कम भाग्यशाली लोगों के साथ साझा करना है। यह *बांटने से बढ़ता है*। हम सभी ने कभी न कभी उन पेड़ों के फल खाए है जिसे हमने लगाया ही नहीं था। यह हमारे देने का समय है और हमें ऐसे पेड़-पौधे लगाने चाहिए जिनके फल हम शायद कभी ना कहा पाए, लेकिन वे आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित करेंगे। यह हमारी जिम्मेदारी है; यह हमारा अवसर है। इंटरेक्ट, रोटरेक्ट के साथ वास्तव में सभी युवाओं के लिए एक मजबूत नींव रखना हमारी थीम 'रोटरी अवसरों को खोलती है' को पूरा करने का उचित तरीका होगा। रोटरी का आनंद लें। सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें, युवा रहें।

**डॉ भरत पांड्या**

रो ई निदेशक, 2019-21

# का संदेश

## हमारे युवाओं में निवेश करना हमारा भविष्य है

रोटरी में मई युवा सेवा माह होता है। युवा सेवा को आधिकारिक रूप से रो ई द्वारा 2010 में सेवा के पांचवें आयाम के रूप में जोड़ा गया, जिसे युवा और युवा वयस्कों द्वारा नेतृत्व विकास गतिविधियों, सामुदायिक भागीदारी, और विश्व शांति एवं सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने एवं समृद्ध करने वाले विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से लाए गए सकारात्मक बदलावों को पहचानने के लिए किया गया था। रोटरी क्लबों को अपने व्यावसायिक, सामुदायिक एवं अंतर्राष्ट्रीय सेवा परियोजनाओं में युवाओं और युवा वयस्कों को शामिल करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, और ऐसे कार्यक्रमोंएवं संसाधनों की पेशकश करना चाहिए जो उनका समर्थन करते हो।

युवा सेवा परियोजनाएं दुनिया भर में कई रूप लेती है। हर एक मामले में, रोटेरियनों के पास अपने समुदाय के युवा लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनने एवं संरक्षक होने का अवसर होता है। रोटरी में, हम युवाओं को अपने संगठन में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है और अब रोटरेक्ट भी रोटरी का हिस्सा बन गया है। जैसे-जैसे हमारे युवा वयस्क नेता बनेंगे, यह उम्मीद है कि उनमें से हर एक भविष्य की पीढ़ियों की सेवा करने के लिए समान इच्छा और भावना के साथ काम करेगा। प्रत्येक रोटेरियन की यह जिम्मेदारी है कि अपनी जरूरतों की विविधता को पहचानते हुए, बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने हेतु अपने जीवन कौशल में सुधार करके अगली पीढ़ी को तैयार करें।

इंटरेक्ट क्लब छात्रों को पहल करने, नेतृत्व एवं सामूहिक कार्य कौशल, सामुदायिक सेवा नीतियाँ और अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। रोटरी यूथ एक्सचेंज के माध्यम से, हम एक अधिक सम्बद्ध और समझदार दुनिया बनाने की उम्मीद करते है। RYLA युवाओं को नए कौशल सीखने, उनके आत्मविश्वास को मजबूत बनाने और आनंद लेने में मदद करता है। न्यू जनरेशन्स सर्विस एक्सचेंज विश्वविद्यालय के छात्रों एवं 30 वर्ष से कम उम्र के पेशेवरों के लिए एक अल्पकालिक कार्यक्रम है। प्रतिभागी विनिमय को ऐसे डिजाइन कर सकते है जो मानवीय परियोजना के साथ उनके पेशेवर लक्ष्यों को जोड़ते हो।

COVID-19 का प्रकोप इस वर्ष हमें युवा सेवा माह का निरीक्षण करने के तरीके को बदलने पर मजबूर कर सकता है। लेकिन इससे हमारे उत्साह और भावना में कमी नहीं होना चाहिए। युवा परिवर्तन लाने के तरीकों की तलाश कर रहे है। उन्हें दिखाएं कि रोटरी ऐसा करने के लिए उन्हें कैसे सशक्त बनती है, खासकर मुसीबत के इस समय में। स्थायी सेवा परियोजनाओं पर मंथन कीजिए और टीआरएफ में योगदान को बढ़ाने एवं अपने समुदाय में रोटरी के बारे में जागरूकता फैलाने के तरीके पर विचार कीजिए। और अपनी सदस्यता को बढ़ता हुआ देखिए।

खयाल रखिए और सुरक्षित रहिए।

**कमल संघवी**
रो ई निदेशक, 2019-21


### Board of Permanent Trustees & Executive Committee

| | |
|---|---|
| PRIP Rajendra K Saboo | RI Dist 3080 |
| PRIP Kalyan Banerjee | RI Dist 3060 |
| RIPE Shekhar Mehta | RI Dist 3291 |
| PRID Panduranga Setty | RI Dist 3190 |
| PRID Sushil Gupta | RI Dist 3011 |
| PRID Ashok Mahajan | RI Dist 3141 |
| PRID P T Prabhakar | RI Dist 3232 |
| PRID Dr Manoj D Desai | RI Dist 3060 |
| PRID C Basker | RI Dist 3000 |
| TRF Trustee Gulam A Vahanvaty | RI Dist 3141 |
| RID Dr Bharat Pandya | RI Dist 3141 |
| RID Kamal Sanghvi | RI Dist 3250 |
| RIDE A S Venkatesh | RI Dist 3232 |
| RIDE Dr Mahesh Kotbagi | RI Dist 3131 |

**Executive Committee Members (2020–21)**

| | |
|---|---|
| DG Sanjiv Rai Mehra<br>Chair – Governors Council | RI Dist 3011 |
| DG Sudip Mukherjee<br>Secretary – Governors Council | RI Dist 3291 |
| DG Sangram Vishnu Patil<br>Secretary – Executive Committee | RI Dist 3170 |
| DG Prashant Harivallabh Jani<br>Treasurer – Executive Committee | RI Dist 3060 |
| DG S Muthupalaniappan<br>Member – Advisory Committee | RI Dist 3232 |



### ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

**Editor**
Rasheeda Bhagat

**Senior Assistant Editor**
Jaishree Padmanabhan

### ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

# रोटरी सदस्य भविष्य लिख रहे है

*लॉरेंस ऑफ अरेबिया* नामक एक क्लासिक फिल्म में, पीटर ओ'टोल ने टी ई लॉरेंस, ब्रिटिश विद्वान, सैन्य अधिकारी और लेखक की भूमिका निभाई जिन्होंने ओटोमन साम्राज्य के खिलाफ स्वतंत्रता संघर्ष में अरब जनजातियों की मदद की थी।

लॉरेंस ओटोमन के अकाबा बंदरगाह पर एक अचानक हमले के लिए रेगिस्तान के माध्यम से बेडौइन योद्धाओं के एक समूह का नेतृत्व करते है। जैसे ही वे रेगिस्तान के अंत तक पहुँचते हैं, उन्हें पता चलता है कि एक सैनिक, गासिम, रात में अपने ऊंट से गिर गया है। लेकिन अब सुबह हो गई है, और आदिवासियों के नेता शरीफ अली, जिनका किरदार उमर शरीफ ने निभाया, लॉरेंस को सलाह देते हैं कि उसे खोजने के लिए वापस जाना फ़िज़ूल होगा क्योंकि गासिम रेत के तूफ़ानों एवं चिलचिलाती गर्मी की वजह से पहले ही मार गया होगा। "गासिम का समय आ गया है; यह लिखा जा चुका है," एक सैनिक ने लॉरेंस से कहा।

लेकिन लॉरेंस वापस जाते है और गासिम को रेत के टीलों में मौत के एकदम करीब पहुंचा पाते है। जब वे शिविर में लौटते है, तो अली लॉरेंस को पानी देता है। पानी पीने से पहले, लॉरेंस उसे देखते है और कहते है: "कुछ भी लिखा नहीं होता।"

इस अविस्मरणीय दृश्य के मायने केवल एक उद्धरण करने योग्य मूवी लाइन से कई अधिक है; यह दुनिया को देखने के एक तरीके का प्रतिनिधित्व करता है। यह भाग्यवाद को चुनौती देता है - कि हमें एक निश्चित परिणाम को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि वह पहले ही निर्धारित किया जा चुका है। नहीं, लॉरेंस कहते है, इतिहास अब तक लिखा नहीं गया है।

ऐसा ही रोटरी संस्थान के साथ भी है। हम अभी तक कोविड-19 महामारी के तूफ़ान से और इसके कारण आई आर्थिक गिरावट से नहीं उभर पाए है। हम अभी भी जागरूकता फैलाने, महत्वपूर्ण व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण देने और अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों को सहायता प्रदान करने के काम में व्यस्त है।

हमें नहीं पता वह दिन कब आएगा जब हम हमारे पोलियो उन्मूलन भागीदारों के साथ खड़े होकर इस बात की घोषणा करेंगे कि इतिहास में दूसरी बार किसी बीमारी का उन्मूलन किया गया है। लेकिन हम यह जानते है कि, चूंकि हमने वर्षों तक लगातार काम किया है, इसलिए उस कहानी का अंत जल्द ही लिखा जाएगा।

और ओटो और फ्रेंन वाल्टर फाउंडेशन के 15.5 मिलियन डॉलर के योगदान की वजह से, हम रोटरी शांति केंद्रों के हमारे विस्तार की कहानी में एक नया अध्याय भी जोड़ रहे है: मध्य पूर्व या उत्तरी अफ्रीका में एक नया शांति प्रमाणक केंद्र शुरू करने की योजना पर काम चल रहा है।

रोटरी कितने सारे महान प्रयासों में लगी हुई है; यह एक निरंतर चलने वाली कहानी है जो मुझे *लॉरेंस ऑफ अरेबिया* से भी अधिक प्रेरित करती है। हम अभी उस बच्चे का नाम तक नहीं जानते है जिसकी जिंदगी रोटरी के मातृत्व एवं शिशु अनुदान के माध्यम से बचाई जाएगी, या उस लड़की का नाम नहीं जानते जो हमारे समर्थन से पढ़ना सीख जाएगी। वे अनुदान कब शुरू होंगे, और क्या आपका मंडल - या आप - प्रत्यक्ष रूप से इसमे शामिल होंगे?

कुछ भी लिखा नहीं होता। हम उसे लिखते है।

Ravi

**के आर रवींद्रन**
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

Rotary PEOPLE OF ACTION

# लड़कियों की एक दिन की छुट्टी

**जयश्री**

रोटरी क्लब हिमालयन रेंज्स-मनसा देवी, रो ई मंडल 3080, 2018 से हर साल अपनी परियोजना *छोटी ख्वाहिश* के माध्यम से सैकड़ों बच्चों के चेहरों पर मुस्कान ला रहा है। हर साल सौ बच्चों को एक दिन के लिए मौज मस्ती करने हेतु ले जाया जाता है और उन्हें अपनी पसंद की कोई एक वस्तु खरीदने की अनुमति दी जाती है। यह एक ड्रेस, खिलौना, जूते, कला सामग्री या कुछ भी हो सकता है। अपने छोटे-छोटे उपहारों को प्राप्त करके उनके चेहरे पर जो चमक आती है उसे देखकर हममें से हर एक को बहुत संतुष्टि मिलती है, क्लब के सदस्य पीडीजी टी. के. रूबी कहते है।

इन बच्चों को अनाथालयों या झुग्गी बस्तियों से लाया जाता है और RAC चंडीगढ़ हिमालयन (क्लब द्वारा प्रायोजित) के प्रत्येक रोटरेक्टर को तीन लड़कियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी जाती है। वे बच्चों के साथ मिलकर दुकान से सामान लेने में उनकी मदद करते है।

*रोटरेक्टर एक बच्चे को बैग चुनने में मदद करती है।*

*रोटरी क्लब हिमालयन रेंज्स मनसा देवी के अध्यक्ष गौरव घई बच्चियों के साथ।*

इस साल क्लब एक अनाथालय की 130 लड़कियों को चंडीगढ़ के एलांटे मॉल ले गया। उन्हें दो दिनों के लिए दो समूहों में बाँटा गया। क्लब से विशेष अनुरोध प्राप्त करने के बाद, मॉल को जल्दी खोला गया और बच्चों को मैकडॉनल्ड्स में नाश्ता और बर्गर किंग में दोपहर का भोजन करवाया गया। "जो हमें और हमारे बच्चों को पहले से प्राप्त है वो इन बच्चों के लिए विलासिता है। लेकिन उन्हें अपने पिज्जा, बर्गर और फ्रेंच फ्राइज़ का स्वाद लेते देखकर खुशी हुई। वे निश्चित रूप से प्रसन्न थे," वह मुस्कुराते है।

रोटरेकटरों ने भी लड़कियों के साथ उनके शॉपिंग टूर पर जाकर बहुत आनंद उठाया। बस छह साल की छोटी मानसवी अपनी खुद की बार्बी डॉल को गले लगाकर बहुत खुश थी; जबकि अमृता (12) सुंदर गुलाबी गाउन में गोल घूम रही थी। उनमें से कुछ ने बैग पसंद किए, कुछ अन्य ने चप्पल-जूते पसंद किए और कुछ अन्य ने सौंदर्य प्रसाधन भी लिए।

जल्द ही मनोरंजन का समय हो गया और लड़कियों को मॉल में एक फिल्म - *वंडर वुमन* - दिखाने ले जाया गया।

इस सब की शुरुआत तब हुई जब क्लब के अध्यक्ष गौरव घई ने तीन साल पहले एक अनाथालय का दौरा किया, रूबी याद करते है। बच्चों के साथ उनकी बातचीत ने उनकी सरल इच्छाओं पर प्रकाश डाला जो उनके लिए सपने जैसी थी और हमें उन इच्छाओं को पूरा करने का विचार पसंद आया। घई इस परियोजना के एक प्रमुख हिस्से को प्रायोजित करते है। ■

# मानवीय मूल्यों के लिए साइकलिंग

रशीदा भगत

ईरानी, मानवता में आपका विश्वास बहाल करते हैं; मेरा मानना है कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक बार ईरान ज़रूर जाना चाहिए। भारत में हम कहते हैं *अतिथि देवो भव*; और फारसी में भी ऐसी ही एक कहावत है, जिसका अनुवाद है 'मेहमान ईश्वर के रत्न हैं, इसलिए उनका ध्यान र खना चाहिए।'"

मैं मन्त्र मुग्ध हो नरेश को सुनती हूँ, उम्र सिर्फ 38, और वे इतने ही देशों की यात्रा कर चुके हैं, जिन्होंने 14 देश और दो महाद्वीपों को पार करते हुए, चेन्नई से हैम्बर्ग तक 8,646 किमी की दूरी साईकिल से हैम्बर्ग कन्वेंशन पहुँच कर हलचल मचा दी थी। वह रो इ मंडल 3232 से रोटरी क्लब ऑफ़ गिंडी के सदस्य हैं। चूँकि उन्हें पाकिस्तान का वीजा नहीं मिल सका इसलिए चेन्नई से विदा लेने के बाद, मुंबई से ओमान की यात्रा अपनी साइकिल को सामान की तरह साथ रख कर हवाई जहाज से करनी पडी थी।

वास्तव में मैं एक अत्यंत सहनशील धावक हूं; दौड़ना, मेरा मुख्य खेल है, साइकिल चलाना नहीं । 2014 में मैंने न्यूज़ीलैंड में 3,054 किमी की दौड़ लगाई थी, असमर्थित श्रेणी में।

ऐसा वो कई बार कर चुके हैं; "जब हवाई अड्डों पर अन्य लोग अपने सूटकेस की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, मैं अपनी साइकिल तैयार कर रहा होता हूँ ताकि सीधे हवाई अड्डे से अपनी यात्रा शुरू सकूं," वे कहते हैं।

वह दो सीटों वाली एक टेंडेम साइकिल है जिसे दो लोग एक साथ चला सकते हैं और इस बाइक को न्यूजीलैंड के एक सज्जन ने प्रायोजित किया है, वो देश जो उन के दिल के करीब है। लेकिन पहले उनकी हैम्बर्ग कन्वेंशन की यात्रा पर चलते हैं। 27 फरवरी, 2019 को रवाना हो कर 74 दिनों के बाद, कन्वेंशन के लिए वह हैम्बर्ग पहुंचे थे। ओमान से वह दुबई गए, जहां से उन्होंने एक फैरी नौका ली, "वास्तव में वो एक कंटेनर जहाज था जो ईरान जा रहा था" और ईरान से तुर्की साइकिल से पहुंचने के बाद उन्होंने यूरोप में इस्तांबुल से प्रवेश किया।

ईरान की बात करते हुए नरेश की आँखों में चमक आ जाती है: ईरान में 2,200 किमी का सफर तय करने में करीब 18 दिन लगे थे। "जिसमें से 15 रातें मैंने अनजान लोगों के बीच उनके घरों में बिताईं। वे टेंडेम साईकिल की दूसरी सीट

*ईरानी परिवार जिसने नरेश कुमार की मेजबानी की थी।*

> नेपाल में एक व्यक्ति ने पूछा कि आपको क्या चाहिए; ड्रग्स, शराब... मैं लडकियां भी ला सकता हूँ। यह ऐसा था जैसे कोई आपको सामान बेचने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन यहां, वो एक जिंदगी बेचने की कोशिश कर रहा था।

खाली देखते तो बात शुरू कर देते थे, कहते, पहले घर चलो।"

लोगों से बातचीत करने के लिए वो फोन पर गूगल अनुवादक का उपयोग किया करते हैं; ईरान में यह अनुवाद अंग्रेजी से फारसी में होता था। "लेकिन प्रतिबंधों के चलते वहां ना तो क्रेडिट कार्ड चला और ना ही सिम कार्ड ने काम किया। मैं ठीक नवरोज़ उत्सव के बीचों बीच पहुंचा था और वहां सब कुछ बंद था। मैं किसी को नहीं जानता था, मेरे पास स्थानीय मुद्रा भी नहीं थी और बूंदा बादी शुरू हो गई । बस स्टॉप पर बैठे लोगों से मैंने पूछा कि तेहरान जाने का रास्ता किधर है ... यह उसी प्रकार था जैसे चेन्नई में खड़े हो कर कोई पूछे कि दिल्ली जाने का रास्ता किधर है! वहां से तेहरान 1800 किमी दूर था!"

अचानक एक छोटा लड़का प्रकट हुआ जो टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल रहा था और उन्हें अपने घर चलने को कहा, उसने कहा कि उसका परिवार उन से मिल कर खुश होगा। वह दूसरी सीट पर बैठ गया और वे दोनों उसके घर पहुँच गए। "उनके साथ मैं दो दिन रहा; उन्होंने मुझे स्थानीय सिम कार्ड प्राप्त करने में सहायता की, 50 डॉलर को स्थानीय मुद्रा में परिवर्तित किया और मुझे तेहरान का रास्ता बताया।

# सर्वत्र कृपा

*तुर्की व्यक्ति जिन्होंने नरेश कुमार की मेज़बानी की थी।*

क्या कभी कोई खराब या नकारात्मक अनुभव भी हुआ था, जैसे छीना झपटी या लूटा गया हो, मैंने नरेश कुमार से पूछा। उन्होंने कहा, "नहीं, कभी भी नहीं, मेरी साइकिल में तो ताला भी नहीं है और जब मैं टेंट में सोता हूं तो यह सड़क के किनारे खड़ी रहती है। कोई भी इसे उठा कर ले जा सकता है; लेकिन कोई ले नहीं गया!"

इस रोटेरियन के ज़ेहन में उस यात्रा में बिताये खुशी के पल, बढ़िया अनुभव और उदार व्यक्तियों की स्मृति ही शेष हैं। बच्चे उनकी बाइक पर कूदते, उनके साथ पैडल मारते और सहज भाव से उन्हें रात के खाने पर और आराम करने के लिए अपने घरों में आमंत्रित करते थे। या ईरान में महिलाएं उन्हें शानदार भोज पर आमंत्रित करती, अपनी मित्रों से मुलाक़ात करवाती थीं, ताकि वे उनके मिशन के बारे में जान सकें, इसमें शरीक हो सकें और जो कुछ भी बन सके, दान में दें।

हैम्बर्ग के रास्ते में एक अन्य देश पड़ा था तुर्की, जिसके बारे में नरेश बड़े चाव से बताते हैं। "मैं अंकारा जा रहा था, तापमान शून्य से 10 डिग्री कम था और बर्फबारी शुरू हो गई, रात हो चली थी और आस पास कुछ भी नहीं था, इसके बाद बारिश शुरू हो गई और मैं एक उजाड़ इमारत के नीचे खड़े हो कर सोच रहा था कि निकटतम गाँव तक कैसे पहुंचा जाए जो वहां से लगभग 15 किमी दूर था। तभी एक आदमी जीप में आया, उसने मेरी साइकिल पर लटकती हुई लाइट देखी, कहा कुछ भी नहीं, लेकिन इशारों से भोजन और बिस्तर के लिए अपने घर चलने के लिए कहा। मैं अपनी साइकिल पर, एक साधारण कमरे के मकान तक उसके पीछे पीछे चला। उसने मुझे पनीर, ब्रेड, जैतून आदि के साथ तुर्की भोजन दिया। एक बेंच पर कम्बल बिछा कर मेरे लिए बिस्तर लगाया और अगली सुबह हम दोनों ने साथ में स्वादिष्ट नाश्ता किया!"

### अति सहनशील धावक

साइकिल से हैम्बर्ग जाने का विचार उन्हें कैसे आया, यह पूछने पर नरेश कहते हैं: "वास्तव में मैं एक अत्यंत सहनशील धावक हूं; दौड़ना, मेरा मुख्य खेल है, साइकिल चलाना नहीं । 2014 में मैंने न्यूजीलैंड में ते अराओरा के लम्बे रास्ते ऊपर से नीचे तक 3054 किमी की दौड़ लगाई थी, असमर्थित श्रेणी में। मेरे लिए यह हमेशा अपने सामर्थ्य की परीक्षा लेने जैसा रहा है, यह जानने के लिए कि मैं कितना सक्षम हूं। आपका पाला कई अनजान परिस्थितियों से पड़ता है। धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ, आप

अपने भीतर बहुत गहरे उतरते जाते हैं और वहां कुछ ऐसा मिलता है जो आपने कभी सोचा भी नहीं था। जब सब कुछ असंभव प्रतीत होने लगता है तो यही शक्ति हमारा सर्वश्रेष्ठ बाहर निकाल कर लाती है।"

उत्तरी चेन्नई में अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं नरेश ... उनकी माँ कभी स्कूल नहीं गईं ... सभी कठिनाइयों के बावजूद, नरेश ने 2004 में इंजीनियरिंग से स्नातक हुए और एक आईटी फर्म में नौकरी कर ली। यहां मनोरंजन के लिए आपके पास समय नहीं था ; इसके तीन साल बाद उन्हें अमेरिका जाने का मौका मिला। इस बीच चेन्नई में कई मैराथन (42.2 किमी) दौड़ में भाग लिया था। लेकिन अमेरिका पहुँच कर, मैराथन के प्रति और अधिक गंभीर हो गए और उन्होंने अल्ट्रा मैराथन दौड़ में भाग लेना शुरू कर दिया जो 50 किमी से अधिक है। अमेरिका के टेनेसी शहर में मैंने 500 किमी दौड़ में भाग लिया था। छह दिन लगे थे; उन लोगों से भिन्न, जिन्होंने इस दौड़ की समर्थित श्रेणी में भाग लिया था, उनके पीछे पीछे एक कार चलती थी जिसमें उनके कपड़े, पानी और भोजन रहता था जबकि उन्हें अपना सारा सामान अपने साथ बैगपैक में ही रखना होता था!

हालाँकि इसमें कोई पुरस्कार राशि नहीं थी और नरेश ने स्वीकार किया कि उन्होंने यह सब डींग हांकने के लिए किया, लेकिन इन चुनौतियों में एक गंभीर उद्देश्य अंतर्निहित रहता है। अफ्रीका में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने हेतु कुओं के निर्माण के लिए धन जुटाने के लिए वे अमेरिका में अल्ट्रा मैराथन दौड़े थे।

## रोटरी यात्रा की शुरुआत

अपने सभी रोमांचकारी कारनामों के पश्चात उन्हें कार्यक्रमों में भाषण के लिए आमंत्रित किया जाता था; ऐसे ही एक आयोजन में जहां कई रोटेरियन

*न्यू जीलैंड में 3,300 किमी की दौड़ पर नरेश कुमार को बधाई देते इंवकारगिल के मेयर।*

मैं कहूंगा कि मेरी यात्रा कृपा और
पीनट बटर से चलती रहती है।
मुझे पीनट बटर बहुत पसंद है।

मौजूद थे, उन्होंने रोटरी क्लबों को संबोधित करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया था । इसके बाद उन्हें रोटरी के साथ जुड़ने के लिए अपरिहार्य आमंत्रण मिला और 2019 में वह रोटरी क्लब गिण्डी में शामिल हो गए। हालांकि, उन्होंने गुलामी प्रथा समाप्त करने और सेक्स के लिए लड़कियों और महिलाओं की तस्करी को रोकने जैसे मुद्दे उठाए हैं, जो रोटरी के मुख्य उद्देश्य, जैसे पोलियो खत्म करने जैसा ही है।

थाईलैंड, कंबोडिया और कोलकाता के कुछ हिस्सों में स्थित वेश्यालयों से लड़कियों और महिलाओं को छुटकारा दिलाने के लिए, उन्होंने पूरे 3,300 किमी की दूरी साईकिल से तय कर न्यूजीलैंड जाने का मिशन हाथ में लिया। शुरू में लोगों ने मेरी खिल्ली उड़ाई थी कि तुम्हारे साथ कौन शामिल होगा। खैर, उस जोखिम भरे कार्य में 140 लोग जुड़े और अपने लक्ष्य 20,000 न्यूजीलैंड डॉलर से कहीं ज़्यादा हमने 50,000 डॉलर जुटाए थे!

अपनी नियमित नौकरी छोड़ कर वे फ्री लान्स कार्य करने लगे। उनसे पूछो कि इतनी लम्बी यात्रा के लिए पैसे की व्यवस्था कहाँ से होती हैं और वह हँसते हुए कहते है, नहीं हो पाती ; इसीलिए मैं साइकिल से यात्रा करता हूं, एक छोटी सी स्पॉन्सरशिप ले कर, जिसमें कोई ना कोई मेरे हवाई किराए की व्यवथा कर देता है। अपनी साइकिल पर एक तम्बू और स्लीपिंग बैग साथ ले कर चलता हूँ और होटल में कभी नहीं रुकता। "मेरी साइकिल का नाम Kindness (कृपा ) है और पीछे की सीट खाली देख कर, जिज्ञासावश लोग यह पूछने चले आते हैं कि क्या मेरी प्रेमिका मुझे छोड़ कर चली गई या

*भारत में लोग नरेश कुमार और उनकी साइकिल के साथ पोज़ करते हुए।*

# हैम्बर्ग अनुभव

नरेश कुमार के साहसिक कारनामों में सम्पूर्ण ऑस्ट्रेलिया को साइकिल से पार करना शामिल है, जहां उन्होंने इंडियन पैसिफिक व्हील रेस में भाग लिया था, भारत और न्यूजीलैंड दोनों का प्रतिनिधित्व करते हुए 5,800 किमी की दौड़ में पर्थ से सिडनी तक । ऑस्ट्रेलिया में इस यात्रा के दौरान, उन्हें चेन्नई से एक रोटेरियन राजमणि का फोन आया, जिन्होंने उनसे कहा कि हैम्बर्ग कन्वेंशन में एक प्रमुख सत्र रहेगा 'एन्ड पोलियो नाउ'। चूंकि आपका मिशन गुलामी प्रथा को समाप्त करना है, इसलिए क्यूँ ना आप भारत से हैम्बर्ग तक साइकिल से जाएँ और हम आपके उद्देश्य एन्ड स्लेवरी नाउ का समर्थन करेंगे और प्रचार में सहायता करेंगे ।

वह राजी हो गए और यात्रा से पहले रोटरी के सदस्य भी बन गए। उन्होंने नवंबर 2018 में होने वाली 8,000 किमी से अधिक की यात्रा की योजना बनाना आरम्भ कर दिया, और अभ्यास के अलावा, इस आयोजन के लिए कई देशों का वीजा आदि कई कार्यों के लिए, मुझे अधिकारी तंत्र से भी निपटना पड़ा था।

हैम्बर्ग कन्वेंशन में, 30 किमी 'एंड पोलियो नाउ' साइकिल रैली उनके लिए बाएं हाथ का खेल थी। रैली एक स्टेडियम में जा कर समाप्त हुई जहाँ एक बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें उनका परिचय एक महिला ने दिया था। उस महिला ने रैली के प्रतिभागियों से पूछा: आप में से कितने लोग 30 किमी साइकिल चलाते-चलाते थक गए और बहुत सारे लोगों ने कहा, हाँ, आज का दिन बहुत गर्म था। और महिला ने कहा: ठीक है, यहां हमारे बीच एक सज्जन मौजूद हैं जो भारत से 8,646 किमी साइकिल चला कर हैम्बर्ग पहुंचे हैं!

उनकी महिला मित्र, जो इस मिशन में बहुत मददगार रही हैं, वो भी सम्मेलन के लिए आईं थीं और उन दोनों की मुलाकात बर्लिन में हुई फिर वो साइकिल से हैम्बर्ग पहुंचे।

मुस्कुराते हुए वो एक कार्यक्रम की चर्चा करते हैं, जहां काली-टाई पहनना अनिवार्य था और जहाँ वो भी आमंत्रित थे... । "यहाँ हर व्यक्ति सूट में था जबकि मैं टीशर्ट में था। मेरे पास केवल दो जोड़ी कपड़े थे!"

लेकिन 74 दिन की यात्रा आसान नहीं रही थी। तापमान की बात करें तो शून्य से (-) 30 डिग्री नीचे से 44 डिग्री सेल्सियस तापमान में यात्रा की थी। मैं प्राग में काफी बीमार हो गया था और वजन भी काफी कम हो गया पर 104 डिग्री बुखार में भी साइकिल चलना जारी रखा था।

अंत में वियना पहुँच कर वह इतने बीमार हो गए कि उठ भी नहीं सकते थे और उन्हें एक डॉक्टर के पास जाना पड़ा था। वहां चिकित्सा देखभाल बहुत महंगी है जिसे मैं वहन नहीं कर सकता था। पर मुझे कुछ दवा की भी जरूरत थी। इस डॉक्टर ने आपातकालीन स्तर पर मेरी जांच की, दवा दी और "जब मैंने फीस के बारे में पूछा, तो मुझे बाहों में भर लिया और कहा : आपका अभियान मेरे कार्य जितना ही श्रेष्ठ है और मैं चाहता हूं कि आप इसमें सफल हों। यदि आप वास्तव में भुगतान करना चाहते हैं, तो बस मुझे जर्मनी में अपने सुरक्षित पहुँचने की खबर, बस,अपनी एक तस्वीर भेज देना। इससे मुझे खुशी मिलेगी।"

सिर्फ डॉक्टर ने ही 100-150 यूरो की फीस माफ़ नहीं की बल्कि उन्हें नर्स ने भी गले लगाया, मुफ्त में दवाइयां दीं और अपने दोस्तों से मिलवाया, जिन्होंने इस मिशन के लिए 50 से 100 यूरो तक दान किए थे। "हमने भारत में सीमा-पार गुलामी ख़त्म करने के लिए लगभग 12-15 लाख रुपये जुटा लिए।"

हमारे बीच कोई लड़ाई हुई थी फिर मैं उन्हें अपनी कहानी सुना कर इस यात्रा का उद्देश्य बताता हूँ और उन्हें उस सीट पर बैठने के लिए आमंत्रित करता हूँ। वह हमेशा अपने साथ एक अतिरिक्त हेलमेट ले कर चलते हैं। या यूं कहें कि मेरी यात्रा कृपा और पीनट के ईंधन से चलती रहती है। मुझे पीनट बटर बहुत पसंद है।"

उनके इस अभियान में कोई भी शामिल हो सकता है और लोग जुड़ते भी रहते हैं। कार में सफर कर रहा जोड़ा अचानक रुक जाता है। पहले, महिला पीछे की सीट पर बैठ कर साइकिल चलाती है, पीछे पीछे कार में पुरुष चलता है, फिर वो सीट बदल लेते हैं, नरेश की दिलचस्प कहानी सुनते हुए।

"पूरे न्यूजीलैंड की यात्रा के दौरान एक दिन भी होटल में नहीं रुका; जब मैं रात में सोने के लिए सड़क किनारे एक तम्बू खड़ा करता था, कोई ना कोई अजनबी मुझे घर ले जाता और बिस्तर और गर्म भोजन देता था! इसके अलावा, उन्होंने स्पष्ट किया, मैं सैंडल में दौड़ता हूं, और एक बार 300 किमी-मैराथन दौड़ के दौरान मेरे

अफ्रीका में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने हेतु कुओं के निर्माण के लिए धन जुटाने के लिए, अमेरिका के टेनेसी शहर में मैंने 500 किमी दौड़ में भाग लिया था। दौड़ पूरी करने के लिए छह दिन लगे।

पैर की हड्डी टूट गई थी पर मैंने ज़ख़्मी पैर के साथ दौड़ना जारी रखा था।"

वो न्यूज़ीलैंड में काफी लोकप्रिय हो गए थे और कई सार्वजनिक स्थानों पर भाषण दिए। ऐसे ही एक आयोजन में संचालक थीं जेसिंडा अर्डर्न, उनके प्रधानमंत्री बनने से पहले, और भले ही मैं उन से कभी नहीं मिला, पर वह मुझे जानती है और मेरी अच्छी दोस्त है।

उनकी बाइक जीपीएस से लैस है और उनकी वेबसाइट से जुड़ी हुई है। "यह Uber की तरह है ... आप मार्ग को ट्रैक कर सकते हैं। मैं अपने माता-पिता और दोस्तों को बताता हूं कि अगर ग्रीन डॉट चल रहा है, तो मैं ठीक हूं। यदि यह डॉट 24 घंटे तक नहीं चलता और कोई ग्रीन चेक नहीं मिलता तब चिंता करना- जिसका मैं हमेशा ध्यान रखता हूँ क्योंकि जब मैं ईरान में था तो ईरान में बम विस्फोट की खबर पढ़ कर मेरे माता-पिता चिंतित हों जाते थे! मेरे माता-पिता मेरे सबसे बड़े समर्थक हैं।"

## मानव तस्करी

एक बार नेपाल में एक व्यक्ति ने सेक्स के लिए उनसे एक जवान लड़की बेचने की कोशिश की थी। "सड़क पर खड़े ही उसने पूछा कि आपको क्या चाहिए; ड्रग्स, शराब... मैं लडकियां भी ला सकता हूँ। उसे तुम्हारे होटल ले आऊँगा। यह ऐसा था जैसे कोई अजनबी आपको सामान बेचने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन यहां, वो एक ज़िंदा औरत को बेचने की कोशिश कर रहा था, और वो भी इतनी सहजता से, लिहाजा मुझे मानव तस्करी के विरुद्ध काम करने की प्रेरणा मिली। आपको विश्वास नहीं होगा, लेकिन दुनिया भर में 40 मिलियन लोग बंधुआ मजदूरी और यौन तस्करी में लिप्त हैं और गुलामी की ज़िंदगी जी रहे हैं और उनमें भी 80 प्रतिशत महिलाएं और बच्चे हैं जो सबसे असुरक्षित और असहाय वर्ग हैं।" उन्होंने कहा।

एक बार इन कारणों की ज़िम्मेदारी उठा ली तो उसके बाद उन्होंने अपनी बाइक पर दो सीट लगाने का निर्णय किया। "एक सीट पर बैठ कर चलाना आसान है; यह काफी हल्की है। किसी से भी दान करने के लिए कहना आसान है; आखिर, बच्चों को बलात्कार से बचाने में कौन मदद नहीं करना चाहेगा? वे कुछ पैसे दे देंगे। लेकिन मैं चाहता हूं कि

मैं अपने साथ बहुत सारे भारतीय मसाले ले कर जाता हूं,भोजन के रूप में अपनी पारंपरिक संस्कृति साझा करने के मुकाबले कुछ भी नहीं है।

*नरेश कुमार न्यू ज़ीलैंड में 3,300 कि मी की दौड़ समाप्तः करते हुए।*

वे भी इस की आवाज़ बनें, इसके अधिवक्ता बनें, इसलिए मैं उन्हें कहता था कि मैं बहुत थक गया हूँ, मुझे आपकी मदद की जरूरत है। क्या आप मेरे इस उद्देश्य से जुड़ सकते हैं, सीट पर बैठ कर मेरे साथ सवारी कर सकते हैं, और किसी ने भी मना नहीं किया!"

तो आपके साथ वो कितनी दूर तक बाइक चलाते हैं; 100 मीटर से ले कर 80 किमी तक, वे कहते हैं।

भविष्य में, एक बार कोविड महामारी से निजात पा लें, नरेश, गुलामी के खिलाफ बनाये गए एक रोटरी एक्शन ग्रुप, ठ-ऋ-ड के साथ मिलकर, पूरे अमेरिका में 6,000 किमी का सफर तय करेंगे। इसे स्वतत्रता की सीट  फ्रीडम सीट यूएसए कहते हैं। "पहले मैं अपना पहिया प्रशांत महासागर अपनी

यात्रा शुरू करूंगा और फिर अटलांटिक की यात्रा।" इसकी शुरुआत अप्रैल 2020 में होनी थी; मेरी उड़ान 25 मार्च को थी और राष्ट्र में 23 मार्च को लॉक डाउन लग गया था!

भविष्य में उनका सपना है समाज को लौटाना, और इस के लिए, कुछ ज्यादा करने जरूरत नहीं है। चेन्नई से हैम्बर्ग जाने में ₹1 लाखे से भी कम लागत आई थी। यह बताते हुए वो बहुत खुश थे कि हर जगह लोग भारत को प्यार और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। "मैं कभी अकेला नहीं होता था, और हमेशा लोगों से घिरा रहता था। मैं अपने साथ बहुत सारे भारतीय मसाले ले कर जाता हूं, और कुछ जगहों पर, जब वे मेरे लिए खाना बनाते हैं, मैं भी उनके लिए खाना पकाता हूं। मैं उन से कहता हूँ कि मुझे सिर्फ दही में मैरीनेट किये गए किसी भी तरह का मांस चलेगा। भोजन के रूप में अपनी पारंपरिक संस्कृति साझा करने के मुकाबले कुछ भी नहीं है।"

ऐसे ही एक बार जब स्पेन में एक परिवार *पाइला* (स्पेन का एक व्यंजन) बना रहा था, मैं उनके साथ बटर चिकन बना रहा था! "हमने स्वादिष्ट भोजन किया, वो उन्होंने काफी पसंद किया था और वहां मैं पांच दिन तक रुका!"

More at *www.freedomseat.org*
*https://www.freedomseat.org/film*

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

*RIDE ए एस वेंकटेश और विनीता।*

# आइए रोटरी को एक ऐसा पसंदीदा संगठन बनाएं जिसे प्रचार, विपणन की जरूरत ना पड़े: RIDE वेंकटेश

रशीदा भगत

आप बगलें झांकते फिरेंगे जब रो ई के आगामी डायरेक्टर ए एस वेंकटेश सहजता से सुडोकू पज़ल्स हल करने के लिए कहेंगे,ब्रिज खेलने के अलावा ये उनका पसंदीदा शौक है । जब उनकी पत्नी विनीता कहती है, "वह हर समय सुडोकू करते रहते हैं," तो वो कहते हैं : लेकिन थोड़ी देर के बाद, जब बेहद मुश्किल सुडोकू भी आप 2 या 2.5 मिनट में हल करने लगते हैं तो फिर अपनेआप को किस प्रकार चुनौती दे सकते हैं, और स्वयं को तो चुनौती देनी ही चाहिए इसलिए कुछ समय के लिए मैं इसे विराम देता हूं और फिर नए सिरे से लग जाता हूँ।

उनकी तीक्ष्ण बुद्धि के बारे में सोचते हुए, जब उनके समय की तुलना, "मुझे मध्यम श्रेणी को हल करने में लगने वाले समय से करती हूँ, तो चुप्पी साध लेती हूँ।"

चेन्नई में जन्मे और पले-बढ़े वेंकटेश की प्रतिभा तभी नज़र आ गई थी जब उन्होंने आईआईटी में प्रवेश के लिए आवेदन किया था और "मैं किसी भी आईआईटी में दाखिला ले सकता था, लेकिन आईआईटी मद्रास को चुना क्योंकि मैं इसी शहर में रहता था।" बी टेक (1985) के बाद आईआईएम के लिए भी वही हुआ; उन्हें तीनों जगह से प्रस्ताव मिले थे, लेकिन उन्होंने खखच अहमदाबाद को चुना था।

जब उनसे पूछा कि एक प्रतिष्ठित आईआईटी डिग्री के बाद प्रबंधन पाठ्यक्रम क्यों, वेंकटेश कहते हैं, "मैं एक उद्यमी बनना चाहता था किसी अन्य के लिए काम नहीं करना चाहता था। मैंने अपनेआप को एक विशुद्ध इंजीनियर के रूप में नहीं बल्कि एक उद्यमी के रूप में देखा था, जिसे प्रबंधकीय कौशल की आवश्यकता थी और मेरे पास वित्त और लेखा कौशल की कमी थी, इसलिए एमबीए की पढ़ाई की थी। लेकिन IIM अहमदाबाद (1987) से, मैं चइ से कहीं ज़्यादा हासिल करके लौटा था!"

इस मामले में विनीता ज़्यादा स्पष्ट हैं कि वह उनके प्यार में क्यों डूबी थी। "अत्यंत कुशाग्र होने के साथ वह लम्बे, सांवले, खूबसूरत व्यक्तित्व के धनी थे। मुझे मालूम था कि मेरी माँ को लम्बे, सांवले और खूबसूरत ये शख्स ज़रूर पसंद आएंगे और मेरे पिता को भी आएंगे क्योंकि वह बहुत बुद्धिमान थे और क्लास में टॉपर थे।"

15 महीने से भी कम समय में उनकी शादी 1988 में हो गई; "यह एक तरह से बाल विवाह जैसा था, मैं सिर्फ 23 साल का था," वह मुस्कुराते हैं। उनकी दो बेटियाँ हैं; बड़ी बेटी वर्षा ने अमेरिका में कॅम्प्यूटर साइंस की डिग्री ली है और नेटफ्लिक्स के लिए काम कर रही है। छोटी, वरुण, यूके में अपनी उच्च शिक्षा पूर्ण कर और ब्रिटेन के मैनचेस्टर में कार्यरत है, जो सॉफ्टवेयर व्यवसाय से सम्बंधित है।

वेंकटेश का रोटरी में प्रवेश का किस्सा भी बड़ा दिलचस्प है; परिवार का कोई सदस्य रोटरी में नहीं था लिहाजा इसके बारे में कुछ जानते भी नहीं थे। लेकिन निर्माण कार्य के व्यवसाय में होने के नाते, उनका "श्रमिकों के साथ अक्सर पाला पड़ता था और एक समय ऐसा आया जब मुझे लगने लगा कि मैं अंग्रेजी बोलना बिलकुल भूल जाऊंगा।" एक वास्तुकार मित्र ने उन्हें रोटरी में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हुए कहा कि वहां समान विचारधारा वाले लोगों से उनकी मुलाक़ात होगी, वह 1998 में रोटरी क्लब चेन्नई ममबलम के सदस्य बन गए।

# एक नज़र

**धर्म:** मैं भगवान में विश्वास रखता हूं; हो सकता है कि मैं महीनों तक किसी मंदिर न जाऊं लेकिन मैं पूर्ण आस्तिक हूं।

**भोजन और प्रिय व्यंजन:** हाँ, मैं खाने का बेहद शौक़ीन हूँ। बेशक तमिल व्यंजन मुझे प्रिय है, क्योंकि मैं यही खा कर बड़ा हुआ हूँ। मैं सब कुछ खाता हूं, और जहां भी जाता हूँ स्थानीय भोजन ज़रूर चखता हूँ।

**पाक कला:** ज्यादा कुछ नहीं। लेकिन विनीता बहुत अच्छी कुक है, हालांकि रसोई में उसके कौशल का पूर्ण उपयोग नहीं किया जाता है, (विनीता

**आगे कहती है:** बहुत पहले, रोज की तरह एक दिन मैं खाना बना रही थी। वो आये, मुझे बिठाया और बोले पूरे दिन तुम दफ्तर में काम करती हो, और शाम को जब वापस घर आती हो तो सीधे रसोई में घुस जाती हो। सारा समय तो रसोई में हे निकल जात है, मैं और बच्चे तुमसे बात ही नहीं कर पाते है। मेरी मानो, एक रसोइया रख लो !)

**संगीत:** मुझे तेज धुनें पसंद है- इससे मुझे ऊर्जा मिलती है। भाषा कोई भी हो, कोई फर्क नहीं पड़ता ... भारतीय, पश्चिमी, फ्यूज़न - लेकिन धुन दिलकश होनी चाहिए।

**फिल्में:** एक समय था जब मुझे फ़िल्में पसंद थीं, लेकिन लंबे अरसे से फिल्म नहीं देखी। अब उसमें मेरी रूचि नहीं रही। हाँ, मुझे कॉमेडी पसंद है। अगर आप मुझसे फिल्म चुनने के लिए कहेंगे तो मैं कॉमेडी ही चुनूंगा। फिर से, भाषा कोई भी चलेगी।

**पढ़ना:** मुझे आत्मकथा बहुत पसंद हैं ... यदि आप मेरे कार्यालय में आएंगे तो आपको दुनिया भर की आत्मकथाएँ मिलेंगी।

**प्रिय लेखक:** अपने करियर के शुरुआती वर्षों में ली आयाकोका की जीवनी, और अकीओ मोरीता की *मेड इन जापान* पढ़ी थी और इन दोनों किताबों ने मुझ पर गहरी छाप छोड़ी है ।

**ब्रिज:** मैं ब्रिज का एक गंभीर खिलाड़ी हूं। एक समय, मैंने तमिलनाडु का प्रतिनिधित्व किया है और तमिलनाडु ब्रिज एसोसिएशन का अध्यक्ष रह चुका हूँ।

---

वेंकटेश ने हमें कभी भी कुछ भी करने के लिए बाध्य नहीं किया, मुझे एक खिंचाव ज़रूर महसूस हुआ और मैं भी रोटरी में शामिल होना चाहती थी।

**विनीता वेंकटेश**

---

**यात्रा:** हम दोनों को यूरोप के कुछ हिस्से घूमना पसंद है, चाहे वह ग्रीस, स्विट्ज़रलैंड या अन्य यूरोपीय देश हों। मुझे एशियाई देश भी पसंद हैं। हमने 50 से 60 देशों की यात्रा की होगी लेकिन हम दोनों ही यूरोप पसंद करते हैं।

**आराम और फुर्सत में:** ब्रिज खेलना पसंद है और मुझे ट्रेकिंग में मज़ा आता है।

**स्वास्थ्य:** रोज़ाना व्यायाम करता हूँ, कभी-कभी घर पर ट्रेडमिल पर, बाकी दिन टहलने या जॉगिंग पर निकल जाता हूं।

**सपना:** व्यक्तिगत सपना - बस खुश रहना और स्वस्थ रहना। रास्ते भले ही अलग हों, लेकिन मंजिल वही है! मेरी ज़रूरतें बहुत कम हैं इसलिए पैसा मुझे बहुत ज़्यादा प्रभावित नहीं करता - बल्कि मुझे जीवन के नए नए अनुभव प्रेरित करते हैं! यही मेरा दर्शन है। रोटरी की बात करें तो हमारे क्षेत्र में हम बहुत अच्छा कर रहे हैं - हमारे रोटरी कार्यों पर मुझे गर्व है, लेकिन सदस्यता वृद्धि की संभावनाएं बहुत अधिक हैं, जिन पर हम ध्यान नहीं दे रहे हैं।

# वेंकी उवाच

**नेतृत्व:** यह क्रमिक विकास की प्रक्रिया है ... आप जिम्मेदारियाँ लेते हैं और उन का निर्वहन करते हुए लोगों से जब प्रतिक्रिया मिलती है कि आपने क्या और कैसा किया, तब अहसास होता है कि आप भी योगदान कर सकते हैं, आपका योगदान बढ़िया रहा। आपकी छवि बनती है,वरिष्ठ सदस्यों के बीच भी कि यह ऐसा व्यक्ति है जो कड़ी मेहनत कर के कार्य पूरा करेगा।

**रोटरी में प्रशिक्षण का महत्व:** प्रशिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है। रोटरी के सभी सदस्य पहले ही सफल व्यवसायी हैं, लेकिन बहुत कम सदस्य जानते हैं कि रोटरी में क्या करना है और कैसे करना है। उनके पास सफल होने की क्षमता और कौशल दोनों है बशर्ते वे कौशल को क्रमबद्ध करें और यहीं प्रशिक्षण की ज़रुरत होती है। प्रतिभा हर जगह बिखरी हुई है, बस इसे पहचानना है और दिशा देनी है। सौभाग्य से, रोटरी में यही हो रहा है।

**वो मूल्य जिन्होंने उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया:** मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं, मैंने अपने व्यवसाय में भ्रष्टाचार को कभी बर्दाश्त नहीं किया और मैं निर्माण व्यवसाय में हूँ! भ्रष्टाचार की वजह से मैंने कई काम और प्रोजेक्ट अस्वीकार किये है। मुझे रात में अच्छी तरह से नींद आती है और बढ़िया जीवन जीने और खुश रहने के लिए मेरे पास काफी काम है। क्या मैं इतना ही कर सकता हूं? नहीं, बहुत कुछ कर सकता हूं। पर सवाल ये है कि क्या मैं ये करना चाहता हूं? नहीं, बिलकुल नहीं, क्योंकि नैतिक व्यवसाय एक ऐसी चीज है जो मेरे दिल के बहुत करीब है और मैं इससे कभी समझौता नहीं करूंगा। एक और जीवन का मूल्य यह है कि मैं पीछे मुड़कर कभी नहीं देखता और पछतावा नहीं करता ... मैं अपना सबक लेता हूं और आगे बढ़ जाता हूं।

**प्रतिभा पहचानना:** मेरा मानना है कि प्रतिभा प्रत्येक व्यक्ति में होती है। यदि कोई उस प्रतिभा को पहचान सकता है, समझ सकता है, उसकी प्रशंसा कर सकता है और उनको सहयोग करने के लिए मना सकता है, तो हम प्रत्येक का सर्वश्रेष्ठ प्राप्त कर सकते हैं। किसी का कौशल, मेरी योग्यता से भिन्न हो सकता है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह बेहतर है या बदतर है। हमें उसकी उस योग्यता विशेष का उपयोग करना चाहिए। एक नेता के रूप में अगर मैं अपनी आँखें खुली रख कर देख सकता हूं और पहचान सकता हूं कि हर व्यक्ति में कुछ ना कुछ कुछ प्रतिभा अवश्य होती है, फिर मैं उसे अपनी समिति में रख सकता हूं। मेरी अधिकांश समितियों में ऐसे बहुत से सदस्य हैं जो मुझसे कई मायनों में बेहतर हैं और मैं उनका सान्निध्य पा कर खुश हूं। वे मुझ से स्पर्धा नहीं कर रहे हैं, लेकिन मेरे कौशल में पूरक हैं।

**महिला सदस्यता वृद्धि :** यह भी क्लब का विषय है। लोग रोटरी इंटरनेशनल के सदस्य नहीं बनते, वो क्लब के सदस्य बनते हैं। जब विनीता रोटरी से जुड़ीं, तो वह मेरे क्लब में शामिल नहीं हुई थी । मैंने उन्हें दूसरे क्लब का सुझाव क्यों दिया? मुझे लगा कि वहां वह सहज रहेंगी क्योंकि उस क्लब में महिला सदस्य भी थीं। क्लब संस्कृति कुछ ऐसी होनी चाहिए कि क्लब के सदस्य महिलाओं का स्वागत करें और उन्हें सहज महसूस कराएं। मैं हर मंडल अध्यक्ष से समितियों में महिलाओं को शामिल करने, उन्हें नेतृत्व की भूमिका देने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। जो कि अन्य महिलाओं को जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा। पूर्ण महिला क्लब की बात करें, जो भारत में नज़र आते हैं, कम से कम क्लब में महिला सदस्यों के ना होने से तो यह बेहतर है। लेकिन नेतृत्व के पदों पर अधिक महिलाओं को ले जाने का यह श्रेष्ठ उपाय नहीं हो सकता और वो दो कारणों से। यह अभी भी एकल लिंगी क्लब है, और पूर्ण पुरुष क्लब जितना ही खराब है। यह स्वयं महिलाओं के लिए नुकसानदेह है, क्योंकि 40 महिलाओं के क्लब में, एक वर्ष में केवल एक ही महिला अध्यक्ष बन सकती है। लेकिन अगर वही 40 महिलाएं आठ अलग-अलग क्लबों में होतीं, तो उनमें से पांच हर साल पहले अध्यक्ष बनने की ख्वाहिश रख सकती हैं और फिर मंडल अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ सकती हैं। आप इसी तरह महिलाओं में नेतृत्व उत्पन्न करते हैं।

हमें उस स्थिति में पहुंचना है जहां लोग रोटरी को चुनें और इसमें शामिल होने के उत्सुक हों। रोटरी को समाज पर थोपने के बजाय हमारे अंदर उन्हें रोटरी में खींचने की ताक़त होनी चाहिए।

उन्होंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि वह रोटरी में इस मुकाम तक पहुँच जाएंगे, वह मुस्कुराते हैं।

"लेकिन नए नए शामिल हुए रोटेरियन को रोटरी के साथ जुड़ने में थोड़ा वक्त ज़रूर लगा था,हाँ, उनकी उपस्थिति शत-प्रतिशत रही थी, क्योंकि मुझे ये चेतावनी दी गई थी कि उपस्थिति कम रही तो मुझे बाहर कर दिया जाएगा।" लेकिन दूसरे ही वर्ष वह क्लब की कुछ समितियों का हिस्सा थे और चौथे वर्ष में क्लब के अध्यक्ष बन गए। यहाँ से डीजी पद का सफर भी काफी जल्दी तय हुआ; "मैं केवल 30 महीने के लिए ही पूर्व अध्यक्ष रहा था और अध्यक्ष बनने के तीसरे साल, मैं मंडल अध्यक्ष मनोनीत हो गया था।"

मंडल अध्यक्ष (2007-08) रहते हुए आधिकारिक यात्राएं उनके कार्यकाल की विशिष्टता थी, इतने सारे रोटरियनों से मुलाक़ात में उन्हें सबसे अधिक आनंद आया, मंडल में 100 वें क्लब की स्थापना और अपने टीआरएफ योगदान को तब तक के उच्चतम स्तर 600,000 डॉलर पर ले जाना। इससे पहले, पूर्व डीजी, जे बी कामदार ने 500,000 डॉलर का रिकॉर्ड बनाया था। "लेकिन ईमानदारी से कहूँ तो मैंने योगदान के लिए किसी से से नहीं कहा, हाँ मैंने फाउंडेशन द्वारा किये जा रहे काम के बारे में काफी बोला और कई बार बोला और दान की राशि बढ़ती गई।"

रोटरी की बैठकों में एक श्रोता के दृष्टिकोण से, विनीता ने कहा कि "वेंकी ने रोटरी में दान देने का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया" - कि विकसित देशों के रोटेरियनों ने टीआरएफ को हर साल पैसा दिया है, जिसका एक भी पैसा, किसी भी रूप में उनके पास वापस नहीं जाता बल्कि भारत जैसे विकासशील देशों में एंड-पोलियो और अन्य परियोजनाओं में प्रयुक्त होता था। "वह आग्रह करते हैं : क्या आपको नहीं लगता कि हमें भी देना चाहिए, ताकि दीन हीन लोग भी इसका लाभ उठा सकें , और यह बात दिल के तार छू लेती थी।"

तो एक अर्धांगिनी के रूप में, उन्हें बुरा नहीं लगता था कि रोटरी उनका इतना सारा समय ले लेती थी? "बिकुल नहीं, क्योंकि एक तो मैं अपने करियर (शिपिंग) में बहुत व्यस्त रहती थी, जब वह दूर होते थे तो मैं कभी भी खाली नहीं रहती थी। वास्तव में, मुझे गर्व और खुशी दोनों होती थी कि मेरे पति एक ऐसे संगठन से सम्बद्ध थे जिनके लक्ष्य

इतने ऊंचे और बड़े थे।" इसके अलावा, 10 साल पहले रोटरी में उनके जुनून और जुड़ाव से प्रेरित होकर, जब उन्होंने अपने करियर में ब्रेक लिया, "मैं भी रोटरी अनुभव का हिस्सा बनना चाहती थी, क्योंकि घर में रोटरी हमेशा चर्चा का विषय था और रोटरी के बारे में वेंकी से सुनना हमेशा प्रेरणादायक होता था। वेंकी ने रोटरी के काम का वर्णन करते हुए ...उन्होंने हमें कभी भी कुछ करने के लिए बाध्य नहीं किया, लेकिन मुझे एक खिंचाव ज़रूर महसूस हुआ और मैं भी रोटरी में शामिल होना चाहती थी।"

उन्होंने एक अन्य क्लब, रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स की सदस्यता ले ली।-क्योंकि उनके क्लब में एक भी महिला नहीं थी और "हमें लगा कि महिला सदस्यों वाले क्लब में वे ज़्यादा सहजता से रहेंगी।"

जब मैंने वेंकटेश से पूछा कि रो ई निदेशक बनने का विचार कैसे और कब आया, तो वह मुस्कुराते हुए कहते हैं: मैंने तो क्लब अध्यक्ष बनने का भी नहीं सोचा था। सन 2001 में, दुर्भाग्य से आगामी अध्यक्ष को व्यापार में कुछ परेशानियां आई थीं और PETS में भाग लेने के बाद उन्होंने नाम वापस ले लिया। मेरे क्लब के सदस्यों ने कहा कि अगले अध्यक्ष आप होंगे और मुझे कोई आपत्ति नहीं थी।

लेकिन, विनीता बोली, नेतृत्व के गुण हमेशा वेंकटेश के व्यक्तित्व की आधारशिला रहे थे। आईआईटी मद्रास में वह स्कूल कैप्टन थे, उन्होंने हॉस्टल अफेयर्स सेक्रेटरी का चुनाव लड़ा था और आईआईएम में वे छात्र संघ के महासचिव रहे थे।

उनकी वर्तमान पदवी पर वेंकटेश का कहना है, "मेरा मानना है कि मुझे इन वर्षों में दी गई विभिन्न ज़िम्मेदारियों को निभाने के दौरान ही इस अवसर का सृजन हुआ।"

आगामी निदेशक ने रोटरी में भी एक प्रशिक्षण नेता के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, 2016 में अंतरराष्ट्रीय असेंबली में और अगले वर्ष यही कार्यभार दिया गया था। "इससे पहले मैंने इवानस्टन में दुनिया भर के रोटरी को-ऑर्डिनेटरों को प्रशिक्षित किया था। 2017 में रो इ अध्यक्ष इयान रिस्ले ने मुझे प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए आमंत्रित किया था। वो एक महान अवसर था।"

निदेशक के रूप में उनकी प्राथमिकताओं पर, वेंकटेश कहते हैं, "हमें सुनिश्चित करना होगा कि

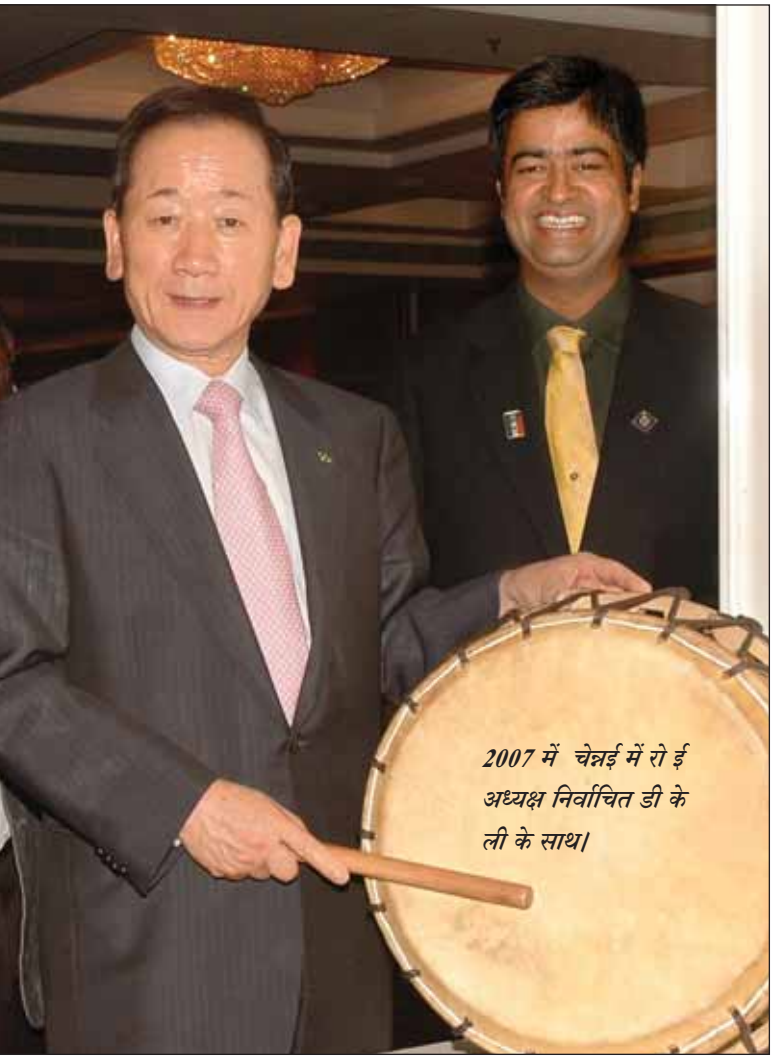

*2007 में चेन्नई में रो ई अध्यक्ष निर्वाचित डी के ली के साथ।*

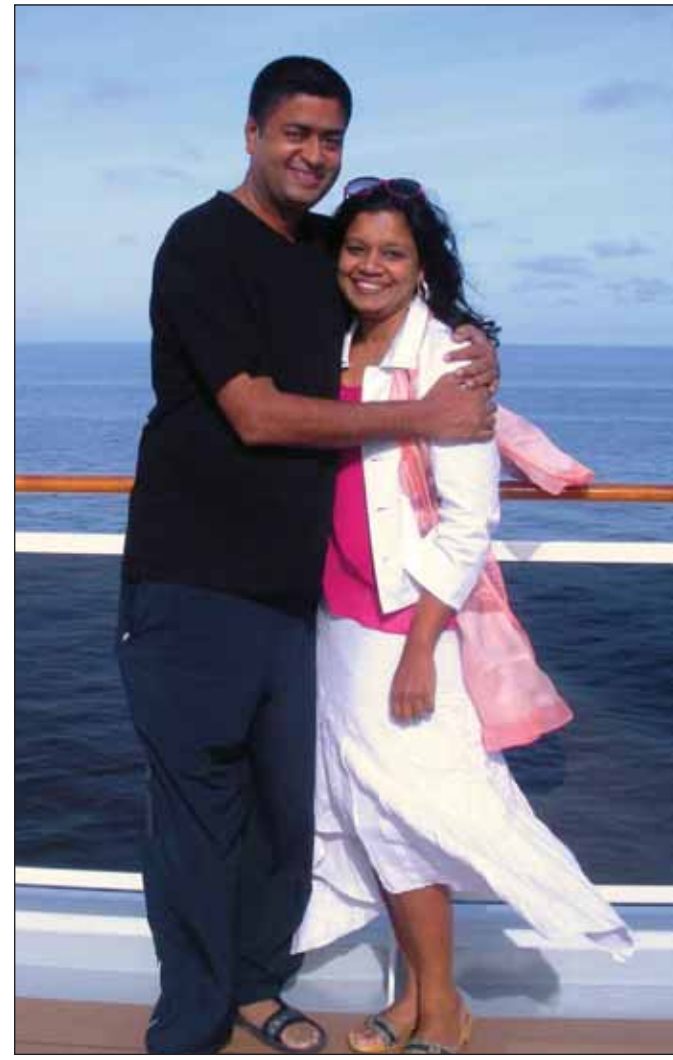

रोटरी लोगों का पसंदीदा संगठन बने। वर्तमान में हम इसकी मार्केटिंग कर रहे हैं। हमें उस स्थिति में पहुंचना है जहां लोग रोटरी को चुनें और इसमें शामिल होने के उत्सुक हों। रोटरी को समाज पर थोपने के बजाय हमारे अंदर उन्हें रोटरी में खींचने की ताक़त होनी चाहिए।"

इसके लिए कुछ चीजों की आवश्यकता होगी। "हम जो भी प्रोजेक्ट करें उनका आकार इतना विशाल और प्रभावशाली होना चाहिए कि वे दूर से स्पष्टतः नज़र आए या अगर हमें कोई बड़ी पहचान मिले, जैसे नोबेल पुरस्कार। मैं उस दिन का सपना देखता हूं कि यदि कोई व्यक्ति स्वयंसेवा करना चाहता है, तो उसके पास सिर्फ रोटरी का विकल्प हो।"

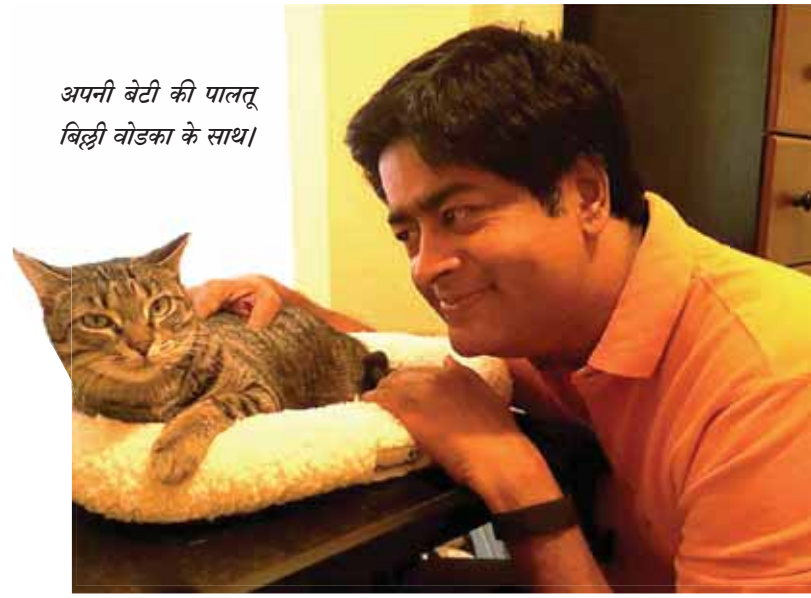

*अपनी बेटी की पालतू बिल्ली वोडका के साथ।*

## विनीता की भूमिका

मेरे करियर और रोटरी दोनों में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। रोटरी में, एक बड़ी समस्या यह है कि आपको किसी भी चीज़ की स्पष्ट और सटीक प्रतिक्रिया कभी नहीं मिलती । भले आप सब गड़बड़ कर दें, लोग फिर भी यही कहेंगे कि आपने बढ़िया काम किया है। लेकिन जब मुझसे कोई चूक हो जाती है और जिस तरह से वो मुझे समझाती है वो महत्वपूर्ण है। यह सिर्फ समालोचना नहीं है, बल्कि मुझे उचित समय पर अपनी प्रतिक्रया देना है। उसके पास उचित समय भांपने की अद्भुत क्षमता है कि मैं उसकी आलोचनात्मक प्रतिक्रिया को कब स्वीकार करूंगा। अक्सर जब मैं किसी महत्वपूर्ण कार्यक्रम के बाद घर आता हूं तो हवा में उड़ रहा होता हूं क्योंकि वहां प्रत्येक ने मेरी प्रशंसा की थी कि वाह, आपने क्या शानदार काम किया है। उस वक़्त वो कुछ नहीं कहती।

फिर कुछ घंटों बाद वह मुझे बताती है कि मैं और क्या कर सकता था। अन्य बातों के अलावा उन्होंने इस मामले में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। और वह मेरी ज़बरदस्त समर्थक रही हैं। 2010 से, करीब-करीब हर रविवार, रोटरी की वजह से मैं घर से बाहर रहता था पर उसने कभी शिकायत नहीं की। लेकिन फिर वो भी तो व्यस्त रहती है और काम की वजह से उसे काफी यात्राऐं करनी पड़ती है।

जहां तक ज़ोन 4,5,6 और 7 का सवाल है, "हमारे क्षेत्रों में, हम अभूतपूर्व परियोजनाएं कर रहे हैं और सामुदायिक परियोजनाओं की बात करें तो हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। लेकिन सदस्यता वृद्धि के लिए हमें अभी भी निरंतर बहुत सा काम करने की आवश्यकता है। हमारे यहां सदस्यता वृद्धि होती तो है, लेकिन हमें इसे टिकाऊ बनाने की जरूरत है।" उनके विश्लेषण से पता चलता है कि "7-8 साल की अवधि में हम जितने सदस्य जोड़ते हैं उतने ही कम भी हो जाते हैं। अगर हमने आठ साल में किसी को भी नहीं खोया होता तो हम दुगने हो जाते। इस मुद्दे पर हम ज़्यादा ध्यान नहीं दे रहे हैं। मेरी प्राथमिकता यह रहेगी कि प्रत्येक मंडल इस बात को महसूस करे कि सदस्यता कायम रखने जैसे विषय पर क्या काम हो रहा है और इस समस्या का शीघ्र ही समाधान निकलना चाहिए।"

तो लोग क्लब छोड़ क्यों देते हैं? "जब वे सदस्य बनते हैं तब उनका पर्याप्त अभिविन्यास नहीं किया जाता, उन्हें रोटरी के बारे में जानकारी नहीं दी जाती।" हल्के फुल्के अंदाज़ में उन्होंने कहा, "मैंने सुना है कि जब क्लब में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है, तो कुछ लोग पूछते हैं, क्या वहां

हमारे क्षेत्रों में, हम अभूतपूर्व परियोजनाएं कर रहे हैं और सामुदायिक परियोजनाओं की बात करें तो हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं।

# विनीता का कहना है...

पूरा जोर नैतिकता पर, जिसके बारे में आप वेंकटेश से पूछ रही थीं, और रोटरी ने हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है। उनकी वजह से हमारे पूरे परिवार पर रोटरी के सिद्धांतों का असर पड़ा है। एक छोटा सा उदाहरण; जैसे ही कोरोना महामारी शुरू हुई, हम अपनी बेटियों की सुरक्षा को लेकर बहुत चिंतित थे कि क्या उनके पास पर्याप्त संसाधन हैं। यूके में, हमारी बेटी वरुण खरीदारी करने हर हफ्ते बाहर जा रही थी और हम उसकी सुरक्षा को लेकर व्याकुल थे, मैंने सुझाव दिया कि वह एक महीने का सामान खरीद कर रख ले। जानते हैं उसने क्या जवाब दिया, उसने जवाब दिया कि अगर मैं ऐसा करती हूं तो किसी और का हक़ मार लूंगी, जिसे उस चीज़ की ज़रुरत है, क्योंकि महामारी की शुरुआत में वस्तुओं की कमी हो चली थी। मैं उसके स्वयं की सुरक्षा और आराम की कीमत पर समाज के लिए की जाने वाली चिंता से चकित रह गई ।

ये कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जो उसने इनसे सीखे हैं। वह कोई उपदेशक नहीं है- वह कभी भी नहीं कहेंगे कि ये करो या ये मत करो लेकिन स्वयं उदाहरण स्थापित कर उन्होंने बहुत कुछ सिखाया है ।

तो एक पत्नी के रूप में वह उनकी रोटरी उपलब्धियों के बारे में कैसा महसूस करती है? "उन के लिए तो मैं उनसे भी अधिक महत्वाकांक्षी हूं, रोटरी में भी और उसके बाहर दोनों में ... क्योंकि मैं वास्तव में मानती हूँ कि उन के पास वो सब कुछ है जो इसके लिए ज़रूरी है । मेरा मानना है कि रोटरी में, पद या पदवी सेवा के अवसर हैं और ये अवसर ईश्वर प्रदत्त हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो जीवन में बहुत मेहनत करते हैं और बहुत सी चीजों की अपेक्षा रखते हैं, आकांक्षा रखते हैं। लेकिन जब तक आपके पास भगवान् का आशीर्वाद नहीं हो, तब तक ये संभव नहीं होता। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि आज वो इस मुकाम पर पहुंचे हैं और उन्हें सेवा करने का अवसर मिला है, और वह अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं।"

तो क्या वह बहुत कर्मठ है? "वह बहुत चतुर हैं। किसी काम को करने में अगर हमें 10 घंटे लगते हैं, वो एक घंटे में कर लेते हैं... इसलिए यदि वह 10 घंटे काम करेंगे, तो उनकी उत्पादकता बहुत अधिक होगी। और मैं यह इसलिए नहीं कह रही क्योंकि मैं उनकी पत्नी हूं। निश्चित रूप से मुझे उन पर अत्यधिक गर्व है, लेकिन यही बात आप हर किसी को कहते पाएंगे, जिनके साथ वो मिलते जुलते हैं, उनके माता-पिता सहित।"

पर स्विमिंग पूल है? इसलिए प्रवेश के समय उनका प्रशिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है।"

क्लबों को मजबूत करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा: सब कुछ क्लब के स्तर पर होता है। सदस्य क्लब के ही बनते हैं, परियोजनाएं क्लब द्वारा ही की जाती हैं; इसके लिए कोई अन्य तरीका नहीं हैं।

सब कुछ "वैज्ञानिक पद्धति" से करने के समर्थक, वे कहते हैं, "जब मैं तीन साल के कार्यकाल (2010-13) के लिए रोटरी कोऑर्डिनेटर रहा था, (PRID) सी भास्कर से पहले, मेरे विश्लेषण में कुछ दिलचस्प तथ्य सामने आये थे कि रोटरी छोड़ने वाले लगभग

---

वह लम्बे, सांवले, खूबसूरत व्यक्तित्व के धनी थे। मुझे मालूम था कि मेरी माँ और मेरे पिता को भी पसंद आएंगे क्योंकि वह बहुत बुद्धिमान थे और क्लास में टॉपर थे।

**विनीता वेंकटेश**

---

80- 85 फीसदी लोगों ने टीआरएफ में एक डॉलर का योगदान भी नहीं दिया। अगर कोई 100 डॉलर भी देता है, तो उसके अंदर स्वामित्व की भावना जागृत होती है और वो जानने का प्रयास करेगा कि उसके पैसे का क्या हुआ, कैसे खर्च किया जा रहा है। वह क्लब का हितधारक बन जाता है। इसलिए मैं क्लब के अध्यक्षों से कहता हूं, प्रत्येक सदस्य से कम से कम 100 डॉलर का योगदान ज़रूर लें और आपकी सदस्यता बरकरार रहेगी।"

वो लगातार कहते रहे हैं, माना यह एक स्वैच्छिक संस्था है, "लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इसका

संचालन नौसिखिये और अनुभव विहीन की तरह किया जाये! एक स्वैच्छिक संस्था को पेशेवर तरीके से चलाया जा सकता है। व्यवसाय में कुशलता केवल हमारे व्यापार के लिए ही नहीं है, आइए हम इस का उपयोग रोटरी में भी करें। हम सभी सक्षम हैं और जब व्यापार की बात आती है तो उसका संचालन हम अत्यंत कुशलतापूर्वक उसका संचालन करते हैं, लेकिन जब रोटरी में आते हैं तो उस बटन को बंद कर देते हैं। मेरा मानना है कि अपने अनुभव का प्रयोग रोटरी में भी करें।"

*विनीता और **RIDE** वेंकटेश अपनी बेटियों वर्षा और वरुणा के साथ।*

### व्यक्तिगत बैठकें:

मैं उनसे उस रोमांचक दौर के बारे में पूछती हूं जब वो मंडल अध्यक्ष रहे थे और लोगों से व्यक्तिशः मुलाक़ात करते थे, जोकि रोटरी की महत्वपूर्ण विशेषता है । क्या महामारी के दौरान उसकी कमी खलती है? "हाँ, यह एक बड़ी चुनौती है और हमें पूरी उम्मीद है कि जल्द ही हम उस दौर में वापस लौटेंगे। यह रोटरी के अस्तित्व का एक बहुत महत्वपूर्ण घटक है।" उनका मानना है कि "पॉल हैरिस के हाथ सबसे अच्छा विपणन सूत्र लगा था। मानव स्वभाव को दो चीजों की आवश्यकता होती है, एक, अपने बारे में बेहतर महसूस करना और वो आपको तब महसूस होता है जब आप दान करते हैं। दूसरा है समाजीकरण। उन्होंने एक ऐसे संगठन की स्थापना की जो इन दोनों को संबोधित करता है। यह सबसे अच्छा मार्केटिंग फॉर्मूला है और कभी भी फैशन से बाहर नहीं होगा।"

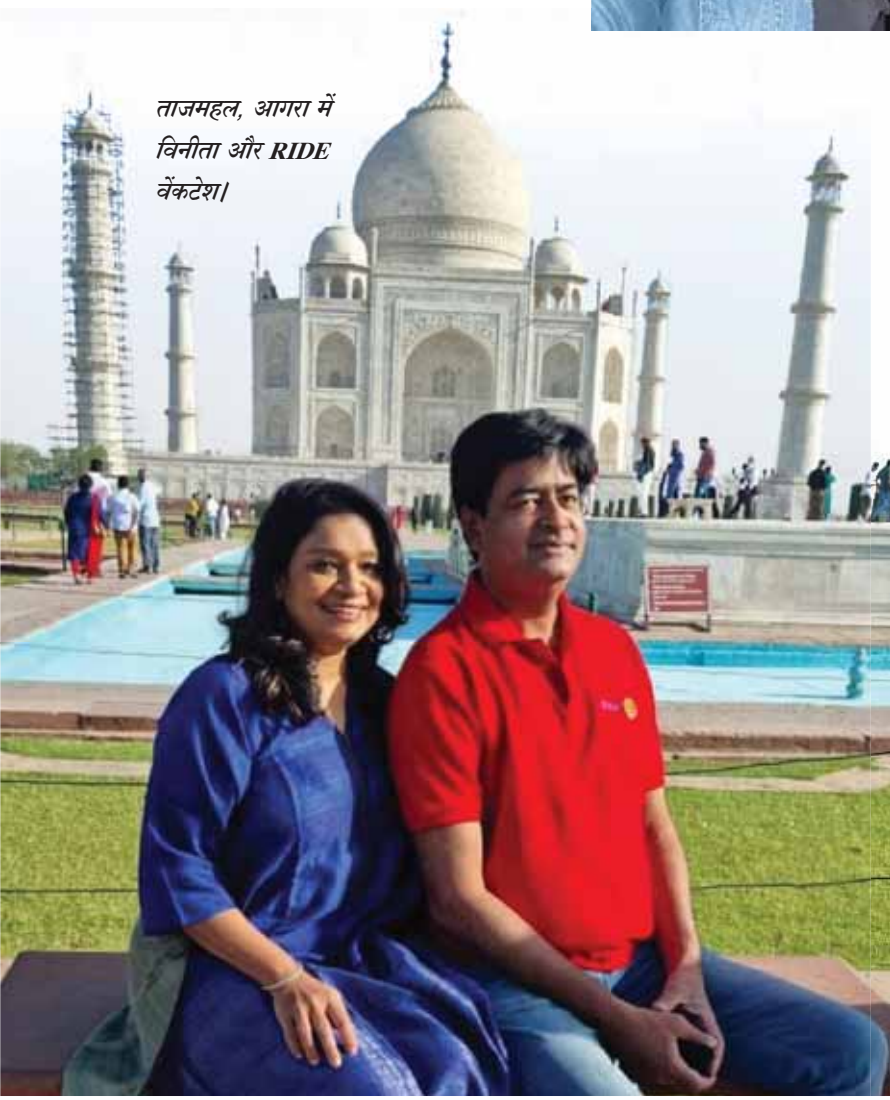

*ताजमहल, आगरा में विनीता और **RIDE** वेंकटेश।*

उनके जैसे व्यस्त पेशेवर रोटरी के लिए इतना समय कैसे निकाल पाते हैं, वेंकटेश कहते हैं: अक्सर कहा जाता है कि जो व्यक्ति व्यस्त रहता है उसके पास हर चीज़ के लिए समय होता है। वास्तव में जैसा कि बिल गेट्स ने एक बार कहा था: मैं काम करने के लिए सबसे आलसी आदमी ढूंढ लूँगा क्योंकि वह इसे जल्दी करने का तरीका फटाफट खोज निकालेगा!

*चित्र: रशीदा भगत और के विश्वनातन*

*एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा*

# ग्वालियर के पास एक परित्यक्त तालाब का हुआ कायाकल्प

**जयश्री**

ग्वालियर से 25 किमी दूर एक आरक्षित वन, कुलेथ, का यह पुनर्जीवित तालाब पच्चीस गाँव और 25,000 निवासियों को लाभ पहुंचा रहा है। रोटरी क्लब ग्वालियर, रो ई मंडल 3053, द्वारा टीआरएफ, रोटरी क्लब ओमाहा, रो ई मंडल 5650, यूएसए, और रोटरी क्लब नागपुर, रो ई मंडल 3030, के साथ एक वैश्विक अनुदान की मदद से इस तालाब को पुनर्जीवित किया गया।

"जब हमने दो साल पहले पहली बार इस जलाशय को देखा था तब यह बहुत ही दयनीय स्थिति में था - यह गाद से भर गया था और इसकी सीमा की दीवारें टूट गई थी। कुल मिलाकर यह बारिश का पानी एकत्रित करने की स्थिति में नहीं था। यह स्थल एक परित्यक्त स्थान था जहाँ असामाजिक गतिविधियां होने लगी थी," इस परियोजना के समन्वयक प्रभात भार्गव कहते है जो एक वास्तुकार भी है। क्लब ने इस जल निकाय का कायाकल्प करने के लिए एक वैश्विक अनुदान परियोजना का विचार किया।

स्थानीय प्रशासन और वन विभाग से अपेक्षित अनुमति लेने के बाद काम शुरू हुआ। तालाब की गाद निकाली गई, ट्रैक्टरों से खुदाई

*तालाब स्थल पर एक स्तंभ पर रोटरी व्हील।*

*ऊपर: डीजी हरीश कुमार गौड़ (दाएं से दूसरी) ने क्लब के सदस्यों के साथ कायाकल्प किए गए तालाब का दौरा किया।*

की गई और खुदाई की गई मिट्टी का उपयोग सीमा की दीवार और बांध बनाने के लिए किया गया। तालाब के आसपास के क्षेत्र को पौधों और एक बगीचे से सजाया गया। रोटरी चक्र के साथ एक स्तंभ अब बगीचे को सुशोभित करता है। इस क्षेत्र में 60 प्रजातियों के 200 से अधिक पौधे लगाए गए है। तालाब में प्रजनन के लिए लगभग 10,000 मछलियाँ भी खरीदी गई थीं।

नवीकरण के इस अभ्यास ने ग्रामीणों में जल संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा की और वे खुश है कि अब प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध होने के कारण वे अधिक फसल उगा पाएंगे, भार्गव ने कहा। तालाब अब 30,000 क्यूबिक मीटर पानी संग्रहित कर सकता है। मानसून के मौसम के दौरान तालाब के अतिरिक्त जल को नजदीकी नहरों में प्रवाहित करने की सुविधाएं तैयार की गई है।

जब परियोजना पूरी होने वाली थी, तब अच्छी बारिश हो रही थी और तालाब भर गया, डीजी हरीश कुमार गौड़ ने कहा जिन्होंने दो माह पहले ही परियोजना की शुरुआत की थी।

"पूरा क्षेत्र अब सुंदर हो गया है। अब सैकड़ों पक्षी इस क्षेत्र में नज़र आते है। यह जल स्रोत इस संरक्षित जंगल में जंगली जानवरों की प्यास बुझाने और ग्रामीणों को अपनी भूमि को सिंचित करने और मवेशियों को पालने में मदद करेगा।"

मंडल ने 35 कोवड-देखभाल केंद्र स्थापित किए गए है। उनके गृह क्लब रोटरी क्लब भिवाड़ी ने हाल ही में तीन कोविड वैक्सीन केंद्र स्थापित किए है और यह अगले महीने सरकार को एक टीबी स्क्रीनिंग वैन दान कर रहा है। "इस साल हमने उडठ की मदद से 40 हैप्पी स्कूल तैयार किए है," गौर ने आगे कहा। ■

# हमारी संस्था के विकास के लिए अपनी रोटरी के किस्से कहानियां सुनाएं: जेनिफर जोन्स

**रशीदा भगत**

एक दशक पूर्व, मैंने अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक को हासिल किया था। मेरे पति निक नेऔर मैंने तंजानिया के माउंट किलिमंजारो की चोटी पर पहुंचने के लिए 20,000 फीट की चढ़ाई की थी। एक व्यक्तिगत चुनौती के साथ-साथ यह एक रोटरी फंड रेज़र का भी हिस्सा था," RIPN जेनिफर जोन्स ने *द ओडिसी* जोन इंस्टिट्यूट को संबोधित करते हुए कहा। शिखर पर पहुँचने में उनके दल को पाँच दिन लगे; पहले दिन घने जंगल में, दूसरा ऊंची सघन झाड़ियों में, तीसरे में ज़रा कम ऊंची और चौथे दिन मानो चंद्रमा पर उतरे हों... चारों ओर चट्टानें और गड्ढे ही गड्ढे और दूर-दूर तक जीवन का कोई चिन्ह नहीं था।

इंस्टिट्यूट में मौजूद आभासी दर्शकों को अपनी रोचक कहानी से विस्मृत करते हुए, उन्होंने कहा कि किलिमंजारो की चढ़ाई "एवरेस्ट जैसी तकनीकी रूप से मुश्किल नहीं है। किली के साथ चुनौती इसकी ऊंचाई है और मेरे लिए यह यात्रा सकारात्मक सोच की गहराई तक पहुँचने की यात्रा थी। करीब 15,000 फीट की ऊंचाई पर, जब उनका दल बेस कैंप पहुंचा, टीम के दो सदस्यों में ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के लक्षण दिखे। अब सवाल ये था कि: क्या हम चढ़ाई जारी रखें या लौट चलें?"

चोटी पर पहुँचने के लिए 6-7 घंटे लगते हैं और चढ़ाई आधी रात को की जाती है। वो इसलिए क्योंकि तापमान शून्य से (-) 20 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, "जमीन को बर्फीला कर देता

*किलिमंजारो पर्वत के शिखर पर पहुंचने से पहले गिलिमन के बिंदु पर **RIPN** जेनिफर जोन्स और उनके पति निक क्रिएचाइक।*

हमारा अंतिम घंटा सबसे मुश्किल गुजरा जिसमें कई चट्टानों को चढ़ कर पार करना था और क्षितिज पर सूरज नज़र आने के साथ ही हम चोटी पर पहुँच गए। आसमान नारंगी चादर में परिवर्तित हो गया था।

है ताकि चढ़ाई के लिए मजबूत पकड़ मिल सके। चढ़ाई का प्रयास करने वाले प्रत्येक दल के साथ पथ प्रदर्शक चलते हैं, और पथ प्रदर्शकों की मांग बहुत है क्योंकि इनाम के रूप में उन्हें ढेर सारी राशि मिलती है।"

अपनी कहानी में निजी पुट देते हुए, जोन्स ने कहा कि "उस रात हाथ में टोर्च ले कर जैसे ही उन्होंने चलना शुरू किया, मैं कशमकश में थी कि मैं खुश हूँ या भयभीत कि मुझे कुछ हो ना जाए।" सौभाग्य से, नीचे जमीन पर पहुंचने के बाद ही उन्हें पता चला कि उस रात किसी अन्य टीम के एक गाइड की मृत्यु हो गई थी। और एक 22 वर्षीय अंग्रेजपर्वतारोही को दिल का दौरा पड़ा था। "जब हम चढ़ाई कर रहे थे, हमारे पथ प्रदर्शक स्वाहिली भाषा में क्रिसमस गीत गा रहे थे और जिसकी लय हमारे कदमों के साथ ताल मिला रही थी। स्वाहिली में चढ़ाई का मंत्र है *पोले पोले,* जिसका अर्थ है 'धीरे चलो।"

ऊंचाई पर होने वाली वाली बीमारी का सामना खूब सारा पानी पी कर किया जाता है और अत्यंत धीमे धीमे चलते हुए ऊंचाई के प्रत्येक स्तर पर पहुंच कर उस "मौसम के अनुकूल होने में हमें समय लगता था।" उन्होंने माना कि इस अभियान को उन्होंने "इसके खतरों का मूल्यांकन किये बिना थोड़ा हल्के में लिया था। मैं उन खतरों से अवगत थी लेकिन इसके रोमांच को ले कर बहुत ज्यादा उत्साहित थी और मुझे अफ्रीकी महाद्वीप के शीर्ष पर पहुंचने की जल्दी भी थी।"

जब टीम को लगा कि हम सालों से चढ़ाई कर रहे हैं, तो गाइड बोला कि अभी तो केवल एक चौथाई मार्ग पार किया है। इस स्थान पर पीने का पानी इंसुलेटेड थर्मस में रहने के बावजूद जम जाता था। और "अपना ध्यान पूरी तरह से केंद्रित रखने में और अपना एक पैर आगे बढ़ाने के बाद दूसरा पैर उसके सामने रखने में अपनी पूरी ताक़त और इच्छा शक्ति लगा दी थी, साथ ही खुद से सवाल भी करती जा रही थी कि आखिर मैं यहां क्यों आई। लेकिन अपनी सोच सकारात्मक बनाये रखने के लिए वास्तव में अपने भीतर मुझे और गहरे उतरना था। "

उन्होंने स्वीकार किया कि अनगिनत बार उन्होंने चढ़ाई बीच में छोड़ने का निर्णय किया था। पर आखिर क्यों? लेकिन ये आसान नहीं था। "हमारा अंतिम घंटा सबसे मुश्किल गुजरा था जिसमें उन्हें कई चट्टानों को चढ़ कर पार करना था और क्षितिज पर सूरज नज़र आने के साथ ही हम चोटी पर पहुँच गए। सितारों से आच्छादित कालीन की परत लिए आसमान नारंगी चादर में परिवर्तित हो गया था।"

जोन्स ने आगामी और मनोनीत गवर्नरों को बताया कि वह उनके साथ इस महान ऊंचाइयों पर चढ़ाई की कहानी को इसलिए साझा कर रही थी क्योंकि शिखर या नेतृत्व की स्थिति तक पहुंचने के लिए उन्हें रोटरी ने विभिन्न अवसर प्रदान किये थे । "और जब हम ऐसा होता हैं, तो हर पहाड़ की चोटी पर पहुँच कर क्या हमें ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए ? मैं आपसे आग्रह करती हूं कि अपने क्लबों और मंडलों में वो कहानियां सुनाएं कि किस प्रकार रोटरी ने पेशेवर और व्यावसायिक स्वयंसेवकों के वैश्विक नेटवर्क को खड़ा करने में अस्तित्व में लाने में सहायता की है। रोटरी एक ऐसा ब्रांड है जो विश्व को एक छतरी के नीचे ला खड़ा करता है, बस हमें सिर्फ पहाड़ पर चढ़ना है और थोड़ा जोर से चिल्लाना है। "

पेशे से जन संपर्क और संचार विशेषज्ञ, जोन्स ने कहा कि जिन "क्लबों में जन संपर्क बेहतर है, वे प्रगति कर रहे हैं। नए सदस्य बनाने और पुराने सदस्यों को बनाये रखने, दोनों के लिए जन संपर्क ही हमारी सदस्यता बढ़ाने का सबसे अच्छा साधन है। जब हम रोटरी में अपनी कहानियां सुनाते हैं और उन्हें मालूम चलता है कि हम कौन हैं और क्या कर रहे हैं तो समान विचारधारा वाले लोग इससे

जुड़ना चाहेंगे और हमारे सदस्यों मेंभी गर्व की भावना जागृत होती है। आपकी रोटरी के किस्से और कहानी सुना कर सदस्यों को प्रवृत्त रखने का एक शानदार तरीका है।"

वे कहती हैं कि एक समय था "जब हम चुपचाप सेवा करते थे; केवल पिछले दस साल से हमारी प्रमुख रणनीतियों में से एक ये है कि हमारी कहानियों को सार्वजनिक करना ताकि सामान विचारधारा के लोग हमारे साथ जुड़ सकें। हम में से हर एक के ज़ेहन में अद्भुत रोटरी पल हैं। लेकिन इसे अगली पायदान पर ले जाना होगा और जिस तरह से हमने लोगों के जीवन को परिवर्तित किया है उसे बताना होगा। "

क्लबों में जन संपर्क बेहतर है, वे प्रगति कर रहे हैं। नए सदस्य बनाने और पुराने सदस्यों को बनाये रखने के लिए जन संपर्क सबसे अच्छा साधन है।

उन्होंने कहा कि कुछ साल पहले, शिकागो जाने के दौरान एक दुकान पर वह ग्रैटीट्यूड जरनल (आभार पुस्तिका) देख रही थी, जैसी कि उन दिनों परम्परा रही थी। एक व्यक्ति ने अपने साथ घटित सभी सकारात्मक चीजें लिखी थीं; "मुझे मेरी किताब मिल गई, और मेरे साथ आये मेरे भाई से कहा कि यह मेरा ग्रैटीट्यूड जरनल है। जब वह चेकआउट काउंटर पर गई, तो क्लर्क ने उसे बहुत नफासत से पैक किया, यहां तक कि उस पर एक खूबसूरत रिबन भी लगा दिया। दुकानदार ने उनसे कहा, उसने सब

सुन लिया है, और निवेदन किया: मैं चाहता हूं कि अपनी (आभार पुस्तिका) में पहली प्रविष्टि लिखने का अवसर मुझे दो।"

जोन्स ने कोविड महामारी को धन्यवाद दिया और कहा कि, दुनिया और रोटरी दोनों में ऐसे ऐसे परिवर्तन हुए हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कोविड -19 ने हमारी मुलाक़ात, सामाजिक व्यवस्था यहां तक कि उत्सव मनाने के तौर तरीके भी बदल दिए हैं । "टीकाकरण में, और आने वाले अधिक चुनौतीपूर्ण समय में, दुनिया को हमारी आवश्यकता और भी अधिक पड़ेगी, इसलिए हमें आपस में मिल कर जुड़े रहने की

जरूरत है। सभी डीजीई और डीजीएन को नेतृत्व के लिये श्रेष्ठ पद दिए गए हैं, जिनमें अवसरों की अपार संभावनाएं हैं।"

महान नारीवादी लेखिका माया एंजेलो का हवाला देते हुए उन्होंने कहा: लोग आपकी कही गई बातों को भूल जाएंगे, लेकिन वो ये कभी नहीं भूलेंगे कि आपने उन्हें कैसा महसूस करवाया था। अपने मंडल के सदस्यों और उनके परिवारों से व्यवहार करते समय उनके लिए इन शब्दों को हमेशा याद रखें।

एक समय था जब हम चुपचाप सेवा करते थे; केवल पिछले दस साल से हमारी प्रमुख रणनीतियों में से एक ये है कि हमारी कहानियों को सार्वजनिक करना ताकि समान विचारधारा के लोग हमारे साथ जुड़ सकें।

जोन्स ने मंडल के नेताओं को अपनी व्यक्तिगत रोटरी कहानियां लोगों के साथ साझा करने का तरीका बताया। "इन कहानियों में अपने शब्दों के रंग भरो, मानवीय चेहरे को सामने रखते हुए भावनात्मक संबंध बनाओ। आपका जीवन घटनाओं की भरपूर सामग्री से भरा पड़ा है। और आप रोटेरियन और अन्य लोगों के साथ जुड़ सकते हैं। सोचिए अगर हम 1.2 मिलियन सदस्यों को महान कहानीकार बना सकें तो क्या हो। रोटेरियन हमारी छवि और ब्रांड को प्रभावित करते हैं। आकर्षक और विश्वसनीय तरीके से हमारी कहानियां सुनाने से हमारे संगठन की छवि पर प्रभाव पड़ता है। तो बाहर निकलो, जाओ और लोगों को अपनी कहानियाँ सुनाओ।"

*चित्र सौजन्य: RIPN जेनिफर जोन्स*

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

# WASH परियोजनाओं का विस्तार

**जयश्री**

अगले पांच वर्षों में भारत सरकार पूरे भारत में 100,000 रोधक बांध बनाने की योजना बना रही है। और हमने 10 प्रतिशत काम अपने हाथ में लेने का वचन दिया है - छह साल में 10,000 रोधक बांध। मतलब एक साल में 1,600 रोधक बांध। यदि सभी रोटरी क्लब एक साथ आ जाए तो यह करना संभव है। 40 मंडलों में से प्रत्येक को 40रोधक बांध बनाने होंगे। लागत केवल दो वैश्विक अनुदान के बराबर होगी जब आप जोड़ेंगे तो ₹ 300,000 का एक रोधक बांध। हमारे पास अनुभव है और हम यह कर सकते है।" इन शब्दों के साथ RIPE शेखर मेहता ने TRF WASH मेजर गिफ्ट्स इनिशिएटिव कमेटी के सदस्य PDG रमेश अग्रवाल द्वारा परिकल्पित एक आभासी थङ्कसेमिनार में लगभग 200 प्रतिनिधियों को प्रोत्साहित किया।

अगले तीन वर्षों में हर घर में नल का पानी पहुंचाने की सरकार की योजना के अनुसार, हम इसे कम से कम 1,000 गांवों या 50,000 घरों तक ले जाने के लिए सहमत हुए है,उन्होंने आगे कहा। जल निकायों का कायाकल्प, वर्षा जल संचयन की सुविधा प्रदान करना और सार्वजनिक एवं घरेलू शौचालयों का निर्माण करना भी रोटरी की WASH परियोजनाओं का हिस्सा है। हमारी भागीदारी ऐसी होनी चाहिए कि रोटरी को देश और दुनिया भर में WASH परियोजनाओं के लिए अग्रणी खिलाड़ियों में से एक माना जाना चाहिए, नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष ने कहा।

TRF न्यासी गुलाम वाहनवटी ने इतने वर्षों में TRF द्वारा डाले गए प्रभाव का अवलोकन किया और रोटेरियनों से वार्षिक निधि में उदारतापूर्वक योगदान करने का अनुरोध किया ताकि हम अपने विश्व निधि भंडार से पैसे न निकालने पड़े। जब कोविड-19 की मार पड़ी तो संस्थान ने बड़ी संख्या में वैश्विक और आपदा प्रतिक्रिया अनुदान को मंजूरी दी। विश्व कोष से पर्याप्त राशि का उपयोग कर लिया गया है और साथ ही कई वर्षों में वार्षिक कोष के योगदान में आई गिरावट की वजह से विश्व कोष भंडार पर एक जबरदस्त दबाव था।

हमारे वैश्विक अनुदान की सफलता अचूक रही है लेकिन हमारे वार्षिक कोष ने अभी तक गति नहीं पकड़ी है। 2013-14 में स्वीकृत 47 मिलियन डॉलर की लागत के 868 अनुदानों की संख्या 2019-20 में 96 मिलियन डॉलर की लागत के 1,350 वैश्विक अनुदान तक बढ़ गई। हालांकि वार्षिक कोष के योगदान में केवल पांच फीसदी बढ़ोत्तरी हुई। भारत के संबंध में, यह और भी अधिक आश्चर्यजनक है वैश्विक अनुदान राशि 2013-14 में 6.3मिलियन डॉलर से बढ़कर 2019-20 में 28.4 मिलियन डॉलर (लगभग 500 प्रतिशत) हो गई है जबकि वार्षिक कोष का योगदान 2013-14 के समान स्तर पर ही है। एक बहुत बड़ा असंतुलन, उन्होंने कहा।

इस रोटरी वर्ष के पहले छह महीनों में TRF ने 87.5 मिलियन डॉलर की लागत के 1,197 वैश्विक अनुदानमंजूर किए जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि के लिए 46.4 मिलियन डॉलर की लागत के 634 अनुदान थे। हम एक ऐसी स्थिति में है जहाँ हम प्राप्त होने वाले सभी वैश्विक अनुदानों का निधीयन नहीं कर सकते। वैश्विक अनुदानों के निरंतर अनुरोधों के आधार पर, निधि की अनुमानित कमी 2021-22 रोटरी वर्ष की शुरुआत से सालाना 17.6 मिलियन डॉलर है,वाहनवटी ने समझाया और विश्व कोष पर वित्तीय दबाव को संबोधित करने के लिए न्यासियों के निर्णयों को 1 जुलाई, 2021 से शामिल करने के लिए सूचीबद्ध किया।

- पोलियोप्लस के लिए डीडीएफ हस्तांतरण हेतु विश्व कोष मिलान 100 प्रतिशत से घटकर 50 प्रतिशत पर आ गया। हालांकि गेट्स संस्थान का मिलान वही है 2:1।
- वैश्विक अनुदान के लिए डीडीएफ के लिए विश्व निधि का मिलान 100 प्रतिशत से घटकर 80 प्रतिशत पर आ गया।
- परिचालन खर्चों के लिए वर्तमान वर्ष का वार्षिक निधि SHARE योगदान का पांच प्रतिशत विश्व निधि और डीडीएफ से समान रूप से लिया जाएगा।

- मंडलों को पांच साल के भीतर बचे हुए डीडीएफ का पूरी तरह से उपयोग करना होगा। प्रत्येक रोटरी वर्ष के अंत में, पांच साल से अधिक के डीडीएफ को मंडल के अधिकार में दे दिया जाएगा या विश्व कोष में जोड़ा जाएगा। यह निर्णय 1जुलाई, 2026 से पहली बार प्रभाव में आएगा।

पर्यावरण स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देने वाले सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक भिंडेश्वर पाठक ने हमारे देश में स्वच्छता मुद्दों से निपटने पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने अपनी 'ट्विन-पिट-टॉयलेट' तकनीक के बारे में समझाया जिसके अंतर्गत मानव अपशिष्ट को पुनःचक्रित करके बायोगैस और उर्वरक तैयार किया जाता है। यह खुले में शौच और हाथ से मैला ढोने के मुद्दों को संबोधित करता है। सुलभ ने देश भर में हजारों सार्वजनिक शौचालय (सुलभ शौचालय) स्थापित किए है। सुलभ पेयजलपरियोजना आर्से निक-दूषित पानी को सुरक्षित पेयजल में परिवर्तित करती है, और अपशिष्ट जल उपचार के लिए उसकी डकवीड-आधारित तकनीक किफायती और पर्यावरण के अनुकूल है, उन्होंने कहा।

एरिका ग्विन, प्रबंधक, WASHएरिया ऑफ फोकस - TRF, ने होंडुरास, बेलीज, ग्वाटेमाला

हमारी भागीदारी ऐसी होनी चाहिए कि रोटरी को देश और दुनिया भर में WASH परियोजनाओं के लिए अग्रणी खिलाड़ियों में से एक माना जाना चाहिए।

**RIPE शेखर मेहता**

और केन्या जैसे अन्य भाग लेने वाले देशों की तुलना में WinS टार्गेट चैलेंज में भारत की प्रगति को सराहा। उन्होंने कहा कि भारत ने समुदायों में व्यवहार परिवर्तन की शुरुआत में बढ़िया काम किया है। न केवल चीजों में निवेश करना, बल्कि व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से लोगों में निवेश करना,उनके कौशल में सुधार करना, जल और स्वच्छता सेवाओं के बारे में उनके ज्ञान को बढ़ाना और छात्रवृत्ति कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी शिक्षा को बढ़ाना, एक परियोजना की बेहतर स्थिरता सुनिश्चित करता है। जब हम परियोजनाएं करते है तो हम अक्सर यह भूल जाते है। भारत में कार्यान्वित की जा रही इन परियोजनाओं की वजह सेसिंचाई संबंधित परियोजनाओं की तरह ही सफाई और स्वच्छता कार्यक्रमों में दुनिया भर में वृद्धि हुई है, उन्होंने आगे कहा।

एक प्रभाव को जन्म देने के लिए सिस्टम के आसपास के वातावरण को मजबूत करना एक प्राथमिकता होनी चाहिए। बेहतर जल संसाधन प्रबंधन के लिए इस कीमती संसाधन के आसपास प्रदूषण और मानव गतिविधि को संबोधित किया जाना चाहिए। यदि आप केवल शौचालय और जल उपचार सुविधाओं के बारे में सोच रहे है तो यह समस्या पर एक पट्टी लगाने जैसा होगा, एरिका ने कहा। उन्होंने किसी भी WASH सिस्टम की सफलता और उसकी संवहनीयता का समर्थन करने पर जोर दिया। जब आप एक वैश्विक अनुदान परियोजना की योजना बना रहे हों या USAID जैसे बड़े साझेदारों को शामिल करना चाह रहे हों, तो सोचें कि आप सरकार और जिन समुदायों के साथ आप काम करते है उनसे अपने संबंधों का लाभ कैसे उठा सकते हैं क्योंकि आप किसी योजना को कार्यान्वित करने में एक पुल का काम करेंगे।

निकोलस ओस्बर्ट, WASH प्रमुख, यूनिसेफ इंडिया; सुरेश रेड्डू, यूरेका फोर्ब्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और रो ई मंडल 3110 के DGN पवन अग्रवाल, एमडी - नैनी ग्रुप, काशीपुर, एक पैनल चर्चा में संलिप्त थे। रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय के TRF प्रबंधक संजय परमार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ■

# कोविड टीकाकरण महत्वपूर्ण है, लेकिन पोलियो उन्मूलन तो हमारे डीएनए में है

**रशीदा भगत**

*दिल्ली में, जनवरी 2021 में आयोजित इंटरनेशनल असेंबली के उद्घाटन सत्र में, रो ई निदेशक कमल संघवी के साथ एक अनौपचारिक बातचीत में, आगामी रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने कहा कि रोटेरियनों को दोनों पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा, कोविड की रोकथाम और टीकाकरण में सरकार की मदद, साथ ही उन्हें दुनिया को पोलियो से छुटकारा दिलवाने का प्रयास भी जारी रखना होगा।*

कुछ अंश:

कमल संघवी: **अपनी थीम 'सर्व टू चेंज लाइव्ज़' का निर्धारण करने में आप जिस प्रक्रिया से गुजरे, कृपया हमें भी उससे अवगत कराएं,**

शेखर मेहता: अंतिम निर्णय लेने में ज़्यादा समय नहीं लगा था लेकिन इस थीम के मूलतत्व में 30 साल की मेहनत है। ये कोई रहस्य नहीं था कि मेरी थीम में 'सर्विस' शब्द का प्रयोग होगा । ये तो सब जानते थे। लेकिन थीम को अंतिम रूप देने के लिए जब मैं रो ई कर्मचारियों के साथ चर्चा करने बैठा, तो उन्होंने कहा कि 'सर्विस' शब्द में आह्वान नहीं है। समाधान सरल था - हमने इसे 'सर्व' में बदल दिया।

अब आपको 'परिवर्तन' शब्द के बारे में बताता हूं। कुछ महीने पहले, कोलकाता में आयोजित एक मंथन सत्र में जहाँ आप भी मौजूद थे, (साथ ही संपादक भी!), किसी ने सुझाव दिया कि थीम में 'चेंज' शब्द भी होना चाहिए... और इवान्स्टन में सिर्फ 15 मिनट में हम इस नतीजे पर पहुँच गए कि थीम होगा 'सर्व टू चेंज लाइव्ज़!'

KS: **आपकी थीम लोगो (प्रतीक चिह्न) में हथेली और ग्लोब का क्या महत्व है?**

SM: इंटरनेशनल असेंबली में अपने प्रारम्भिक सम्बोधन में, मैंने स्वामी विवेकानंद का ज़िक्र किया था जिन्होंने कहा है कि हमेशा ग्रहण ही मत करिये, आपको देना भी चाहिए। और जब हम देते हैं तो हमारी हथेली खुल जाती है, लोगो में यही थीम दर्शाया गया है। और ग्लोब पूरी दुनिया को देने का प्रतीक है। इसलिए थीम में एक हथेली और ग्लोब दर्शाया गया है।

KS : IA **में दिए गए आपके मुख्य भाषण की तैयारी में राशी की भूमिका कितनी रही ?**

SM : ओह, वो मेरी सबसे बड़ी समीक्षक है लेकिन एक तर्कसंगत और रचनात्मक समीक्षक है और उसकी बाज दृष्टि से कुछ भी नहीं छिपता है... वह अक्सर मुझे सलाह देती रहती है कि क्या नहीं होना चाहिए और क्या होना चाहिए । यह रोटरी में दिए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण भाषणों में से एक था, स्वाभाविक है राशी के साथ मिल कर इसमें काफी तैयारी और काट छांट की गई। आम तौर पर मैं बोल कर लिखवाता हूं, लिखता नहीं, लेकिन इस

बार मैंने काफी लंबा भाषण लिखा क्योंकि बोलने से काम नहीं चल रहा था... और राशी ने कहा कि चलो इसे लिख कर तैयार करते हैं।

**KS: रो ई अध्यक्ष-निर्वाचित के हस्त लिखित भाषण की नीलामी बाद में एक अन्य कार्यक्रम में की जाएगी! आप मल्टी डिस्ट्रिक्ट पैट्स आयोजित करने के बड़े समर्थक हैं। ये बहु मंडलीय क्यों होनी चाहिए?**

**SM:** यह एक अमेरिकी अवधारणा है और मैंने इस पर ज्यादा विचार नहीं किया था। लेकिन अगर आप मुझसे पूछेंगे कि मुझे कहाँ बोलना पसंद है, तो मुझे डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस या असेंबली में बोलना उतना पसंद नहीं है, लेकिन हाँ, एक जगह जहां मुझे बोलना पसंद है वो है क्लब अध्यक्षों के बीच, मुझे उनकी सभा में बोलना पसंद है। क्योंकि अध्यक्ष ही हमारे कार्यक्रमों और परियोजनाओं पर कार्य करेंगे। और मैं अधिक से अधिक अध्यक्षों से मिलना चाहूंगा। इसका सर्वश्रेष्ठ तरीका एमडी पेट्स ही है।

---

मुझे क्लब अध्यक्षों की सभा में बोलना पसंद है। क्योंकि अध्यक्ष ही हमारे कार्यक्रमों और परियोजनाओं पर कार्य करेंगे।

---

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि अमेरिका में, मार्च (2021) में, 30 दिनों में 24 शहरों का दौरा करते हुए मुझे 9,000 अध्यक्षों को संबोधित करना था! अब मैं उनसे ऑनलाइन बात कर रहा हूं और उन्हें आश्वस्त किया था कि पहले से रिकॉर्ड किया गया कोई भी सन्देश नहीं चलाया जायेगा। मैं अभी भी प्रत्येक से ऑनलाइन बात करना चाहता हूं, क्योंकि वर्तमान में जुड़ने का सबसे अच्छा तरीका यही है।

**KS: आज रोटरी में विविधता, समानता और महिलाओं को शामिल करने की चर्चा जोरों पर है। मैं राशी से जानना चाहूंगा कि इस बारे में उनके क्या विचार हैं और रोटरी में और अधिक महिलाओं को शामिल करने के लिए शेखर को कैसे प्रेरित करेंगी ।**

राशी: जब रोटरी में महिलाओं को शामिल करने का निर्णय हुआ तो इस संगठन के लिए यह एक विलक्षण और अद्भुत घटना थी। और शेखर के बाद जेनिफर का रो ई अध्यक्ष बनना एक बेहतरीन और शानदार कदम है। मुझे यकीन है कि निश्चित रूप से शेखर रोटरी में अधिक से अधिक महिलाओं का समावेश करेंगे क्योंकि यह उन के फोकस क्षेत्रों में से एक है।

**KS: पिछली रो ई बोर्ड की बैठक में, सुझाव था, आदेश नहीं कि सभी मंडल अध्यक्ष क्लब में और मंडल के विभिन्न पदों पर 30 प्रतिशत महिलाओं की नियुक्ति अवश्य करें। महिलाओं को प्रोत्साहित करने और आगे लाने के सभी प्रयास किए जाने चाहिए। क्या यह कदम उचित है?**

राशी: मैं आरक्षण की बहुत बड़ी समर्थक नहीं हूं और जब मैं पूर्ण महिला क्लबों के बारे में सुनती हूं, बिना इस प्रयास का महत्व कम किये, जिसकी वजह से अधिक महिलाएं रोटरी में आती हैं, मैं कहना चाहूंगी कि पुरुषों और महिलाओं का संतुलन होना चाहिए। विविधता का आशय यह भी है कि हम उचित संतुलन और अनुपात बनाएं और एकल लिंगी क्लबों को बढ़ावा नहीं दें।

**KS: शेखर, आपके जीवन में छह महिलाएँ हैं... आपकी माँ, दो बहनें, पत्नी, बेटी और बहू। सबसे ज़्यादा किसे प्यार करते हैं?**

**SM:** मैं इस समूह की सभी माताओं से प्यार करता हूं... मेरी मां, मेरे बेटे की मां, मेरे पोते की और मेरी भांजों की माँ !

**KS: थोड़ी जानकारी हमें 'रोटरी डेज' के बारे में दें जिसकी आप वकालत करते रहे हैं।**

**SM:** भारत में मैं उम्मीद करता हूँ कि आगामी रोटरी वर्ष के दौरान कम से कम 1,000 रोटरी दिवस आयोजित किये जाएं। इसके पीछे उद्देश्य

यह है कि हम इतना सारा काम करते हैं जो लोगों के जीवन में बड़े - बड़े बदलाव लाता है। हम बात करने में बहुत अच्छे हैं, लेकिन सिर्फ आपस में; हमारे व्हाट्सएप ग्रुपों में, हमारे फेसबुक पेजों आदि पर, लेकिन बाहरी दुनिया यह नहीं जानती है कि आखिर हम कौन हैं और क्या करते हैं। इसलिए रोटरी दिवस पर वो दिखाएंगे जो हम करते हैं, उसका प्रदर्शन करेंगे, कुछ परियोजनाएं हाथ में लेंगे, रोटरी दिवसों पर कम से कम 30 प्रतिशत गैर-रोटेरियनों को आमंत्रित करेंगे, और सोशल मीडिया पर इन का विवरण डालेंगे। आप अपने रोटरी दिवस का चयन कर सकते हैं ... विश्व हृदय दिवस, विश्व साक्षरता दिवस या और कोई भी दिन निश्चित कर लें और बस, इसे मना डालें। कल्पना कीजिए रोटरी की सार्वजनिक छवि में कितनी ज़बरदस्त वृद्धि होगी।

**KS: तो, मंडल अध्यक्षों से अनुरोध है, कृपया इस संदेश को अपने क्लब अध्यक्षों तक पहुंचाएं। मैं उन्हें रोटरी सेवा दिवस कहना चाहूंगा। शेखर और राशी, आपकी रोटरी इंटरनेशनल के शिखर तक पहुँचने की यात्रा में एक शानदार पल कौन सा है?**

**SM:** यूं तो बहुत सारे हैं ... हमारी रोटरी यात्रा ने हमें कई उत्कृष्ट क्षण दिए हैं।

---

हमारे व्हाट्सएप ग्रुपों, फेसबुक पेजों पर, हम बात करने में बहुत अच्छे हैं; लेकिन बाहरी दुनिया यह नहीं जानती है कि हम कौन हैं और क्या करते हैं। इसलिए रोटरी दिवस पर वो दिखाएंगे जो हम करते हैं।

---

**राशी:** बहुत सारे, जैसा उन्होंने कहा, लेकिन जिस एक साल उन्होंने रोटरेक्टर्स के लिए काम किया, वो मुझे सबसे पसंद हैं।

**KS: यदि हम तीव्र गति से डिजिटलाइजेशन करें, तो आपके अनुमान से अगले पांच साल में रोटरी कहाँ होगी?**

**SM:** हाइब्रिड। पूर्ण रूप से। हमारा जीवन हाइब्रिड होने जा रहा है। डिजिटल या आभासी दुनिया में भी कुछ बढ़िया चीजें हैं जिन्हें हम निश्चित रूप से छोड़ना नहीं चाहेंगे। लेकिन व्यक्तिगत बैठकों का आकर्षण हमेशा बना रहेगा । वो ज़ूम पे मिलना भी क्या मिलना है? (दर्शक ज़ोरदार तालियां बजा कर समर्थन करते हैं)।

**KS: आज, जब पूरी दुनिया कोविड महामारी से लड़ रही है, तो रोटेरियन की प्राथमिकता क्या होगी या क्या होनी चाहिए?**

**SM:** हमारी नई ज़िम्मेदारी है, कोविड से निपटना लेकिन पोलियो से हमारी जंग अभी भी जारी हैं और हम तब तक लड़ते रहेंगे जब तक हम पूरी दुनिया को पोलियो से निजात नहीं दिला देते। तो हमें किस की बात करनी चाहिए ... कोविड या पोलियो? हमें दोनों की बात करनी होगी। कोविड नई ज़रुरत है लेकिन पोलियो हमारा डीएनए है। ध्यान रहे कि पोलियो से हमारी नज़र कभी नहीं हटनी चाहिए। और हम कोविड टीकाकरण में भी शामिल होने जा रहे हैं; सरकार को निश्चित रूप से हमारे संगठन की सहायता और सहयोग की आवश्यकता है। हमारे संसद सदस्य, विवेक तन्खा भारत में विशाल पैमाने पर चलाये जा रहे टीकाकरण अभियान में रोटरी की मदद की पेशकश सरकार से करने जा रहे हैं। (इंटरनेशनल असेंबली जनवरी, 2021 में हुई थी और तब से रोटेरियन, भारत में कोविड टीकाकरण अभियान में नज़दीक से जुड़े हुए हैं।)।

**KS: मज़ाकिया अंदाज़ में, अध्यक्ष बनने के बाद जब आप इवान्स्टन जाएंगे, तो वहां घर के काम**

---

राशी मेरी सबसे बड़ी समीक्षक है लेकिन एक तर्कसंगत और रचनात्मक समीक्षक है और उसकी बाज दृष्टि से कुछ भी नहीं छिपता है...

---

**कौन करेगा, जैसे खाना पकाना, सफाई और बर्तन?**

**SM:** मेहमानों को एक शर्त पर आमंत्रित करूंगा, उनसे कहूंगा कि आपको लंच या डिनर के लिए आमंत्रित करूंगा बशर्ते अपने बर्तन आपको खुद ही धोने होंगे।

**KS: ठीक है, एक गंभीर मुद्रा में, मुझे पता है कि आप हमेशा आगे की योजना तैयार रखते हैं, कम से कम 3-4 साल आगे की। तो रो ई अध्यक्षता के बाद आपकी क्या योजना है?**

**SM:** अगर अपनी विचारधारा की बेड़ियों से बाहर आ सकूं तो मैं राजनीति में शामिल होना चाहता हूं। रोटरी में, हम इतना समय और ऊर्जा खर्च करते हैं और सिर्फ ₹1 करोड़ की परियोजना करने से ही रोमांचित हो जाते हैं। सरकार द्वारा संचालित परियोजनाएं बहुत बड़ी होती हैं। पैसा महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन सरकार जितने लोगों तक पहुँच सकती है, वो संख्या असीमित और असाधारण हो सकती है। सेवा राजनीति का ही एक घटक है, राजनीति में नकारात्मक कुछ भी नहीं है; मेरा मानना है कि ईमानदार और निष्पक्ष लोगों को राजनीति में आना चाहिए।

**KS: आपका पसंदीदा गीत ?**

**SM:** वे अलग - अलग हैं; मेरा है *झिलमिल सितारों का आँगन होगा रिमझिम बरसता सावन होगा*

**राशी:** रहें ना रहें हम, महका करेंगे, बन के कली, बन के सबा,बागे वफ़ा में। ■

# RIPE शेखर मेहता को साक्षरता में योगदान के लिए D Litt उपाधि

**वी मुत्तुकुमारण**

युवाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है क्योंकि वे ही भावी पीढ़ी के संरक्षक हैं, ये कहना था RIPE शेखर मेहता का, चांसलर, अशोक गुप्ता द्वारा प्रदान की गई डी लिट (मानद उपाधि) को ग्रहण करने के बाद जो इंडिया इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी (डीम्ड),के नौवें दीक्षांत समारोह में जयपुर पधारे थे। यह हर नागरिक का कर्तव्य है, कि वो गरीबों के उत्थान के लिए कार्य करे जो हमारे देश में अभी भी शौचालय और अन्य बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं, उन्होंने कहा।

अपनी बात करते हुए, मेहता ने कहा कि 35 साल की उम्र तक उन्होंने अति संपन्न परिवार में पूर्ण सुख-सुविधाओं का जीवन व्यतीत किया। रोटरी से जुड़ने के बाद, कोलकाता से 50 किलोमीटर दूर एक गाँव में पहली बार मैंने एक अलग दुनिया देखी। जहां नहाने के लिए पुरुष और भैंस एक ही तालाब का प्रयोग करते थे, मिट्टी से बने उनके घरों में शौचालय नहीं थे और एक पेड़ के नीचे चलने वाले स्कूल में चारकोल से पुती हुई दीवार को ब्लैकबोर्ड के रूप में काम में लेते थे जहां एक ही शिक्षक पढ़ाता था। उन्होंने कहा, भारतवासी दो तरह की दुनिया में रहते थे - एक जिनके पास बहुत कुछ है और दूसरे वो जिनके पास बहुत कम है; एक तरफ गगनचुंबी इमारतों में रहने वाले लोग हैं; और दूसरी तरफ वो परिवार जो बुनियादी स्वच्छता के बिना झोपड़ी में रहते हैं। यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि लोगों तक पहुँचकर हम उन वंचितों की जीवन परिस्थिति में बदलाव लाएं, उन्होंने कहा।

*बायें से: RIPE शेखर मेहता, IIS चांसलर अशोक गुप्ता और UGC के पूर्व अध्यक्ष सुखदेव थोरात।*

### प्रौढ़ निरक्षरता

पिछली जनगणना (2011) में भारत की साक्षरता दर 75 प्रतिशत से कम थी और वर्तमान में, 20 प्रतिशत (18 करोड़) वयस्क आबादी निरक्षर थी। आप में से प्रत्येक को कम से कम 10 वयस्क निरक्षरों को साक्षर बनाना चाहिए। अगर हम ये कर सके, तो सिर्फ एक साल में ही भारत पूर्ण रूप से साक्षर हो जाएगा। 2025 तक भारत को 100 प्रतिशत साक्षर करने के अपने संकल्प को दोहराते हुए, मेहता ने कहा कि चुनौतियां और कठिन कार्य सफल लोगों के लिए प्रारम्भिक प्रयास हैं और राष्ट्र निर्माता के रूप में, आपको भारत को एक मजबूत और शक्तिशाली देश बनाना है। हमारा देश प्रगति करते हुए दुनिया में अपने यथोचित स्थान के लिए अग्रसर है, इस दिशा में हो रहे कार्यों को आप गति दे सकते हैं, उन्होंने स्नातकों से कहा। मेहता को साक्षरता के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गए कार्यों के लिए डी लिट उपाधि से सम्मानित किया गया था।

दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए, यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष और जेएनयू के प्रोफ़ेसर सुखदेव थोराट ने कहा, हालांकि नामांकन में और उच्च शिक्षा में लैंगिक अंतर का अनुपात पहले से कम हो रहा है, लेकिन आज भी अधिसूचित दलित समुदायों, पिछड़ी जातियों और मुस्लिम समुदाय की अधिकाँश लड़कियों की पहुँच पेशेवर पाठ्यक्रम, निजी कॉलेज और अंग्रेजी माध्यम के स्कूल तक नहीं है इसकी वजह रूढ़ीवादी पूर्वाग्रहों, सांस्कृतिक कारकों और आर्थिक मुद्दों के कारण हो रहा पक्षपात है। उन्होंने कहा कि भारतीय महिलाओं के साथ हुई इन ऐतिहासिक गलतियों को सुधारने के लिए भारत सरकार को विशेष योजनाओं और प्रोत्साहन के साथ आगे आना चाहिए।

जस्टिस शिवराज वी पाटिल, पूर्व सुप्रीम कोर्ट जज ने अनुपस्थित रहते हुए आभासी रूप से डी लिट उपाधि ग्रहण की, इन्होने कहा कि ज्ञान, कौशल और मानवीय मूल्य - आधुनिक शिक्षा के ये तीनों घटक दुनिया में भारत को एक मजबूत और खुशहाल देश बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। अशोक गुप्ता, एक पूर्व मंडल अध्यक्ष (RID 3054), ने बताया कि 1995 में शुरू हुआ इंटरनेशनल कॉलेज फॉर गर्ल्स (ICG) IIS शैक्षणिक उत्कृष्टता का केंद्र बन गया है, जहां विज्ञान, कला, सामाजिक विज्ञान, वाणिज्य और प्रबंधन आदि संकाय में कई पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। ■

# पुणे के एक क्लब ने विकलांगों के लिए विभिन्न परियोजनाए शुरू की

टीम रोटरी न्यूज़

दृष्टिबाधित युवाओं तक पहुंचते हुए, रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन, रो ई मंडल 3131, ने पुणे के एक उपनगर वाघोली में लुइस ब्रेल अपंग संस्था, जिसमें 100 लड़के और लड़कियां हैऔरशहर के बाहरी इलाके, नरहे, में साई गुरु सेवा संस्था, जिसमें 20 लड़कियाँ है, में एक व्यावसायिक केंद्र स्थापित किया है।

दोनों संस्थान बैग, मोमबत्ती, कैप, बास्केट और स्कार्फ जैसी हस्तरचित वस्तुओं का उत्पादन करके अपने अस्तित्व को बनाए रखते है जिन्हें बाजार संपर्कों के माध्यम से बेचा जाता है। रहवासियों को संसाधन उपलब्ध करवाने के लिए वाघोली स्थित आवास सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में ऑर्केस्ट्रा शो भी आयोजित करता है। हमने कपड़ा, बुनाई का ऊन, मनके और फ्रेम, बुनाई का प्लास्टिक, जूट जैसे कच्चे माल और अन्य उपकरणों के साथ तीन सिलाई मशीनें दान की ताकि वे विभिन्न प्रकार के उपयोगी सामान उत्पादित कर सके और उनके चैनल के माध्यम से उन्हें बेच सकें, क्लब की निदेशक कीर्ति मेहता ने कहा। उन्हें उम्मीद थी कि व्यावसायिक केंद्र दोनों आवासों के खर्चों का प्रबंधन करने के लिए मासिक राजस्व प्रदान करेंगे। इस परियोजना के लिए क्लब के सदस्यों अरुणा राठी और रमा शिवराम के योगदान के अलावा व्यावसायिक केंद्र (₹ 77,000) त्रिवेणी पैटर्न ग्लास की सीएसआर शाखा द्वारा वित्त पोषित किए गए थे।

## अभिलाषी लड़कीकोकृत्रिम हाथ

युवा अनीता शिंदे को एक कृत्रिम हाथ (ओटोबॉक मायोफेशियल) फिट किया गया था और क्लब द्वारा इसके प्रभावी उपयोग हेतु इसका पूर्ण प्रशिक्षण दिया गया था। पहले, वह एक डॉक्टर बनना चाहती थी, लेकिन उसकी जांच करने के बाद, हमने महसूस किया कि उसका लक्ष्य प्राप्त करने योग्य नहीं था। डॉक्टरों द्वारा उसे परामर्श दिया गया और अनीता अब कठोर अध्ययन करके यूपीएससी और एमपीएससी प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करने हेतु पूर्ण रूप से तत्पर है।

परीक्षा की तैयारी के लिए अनीता का दाखिला पुणे की एक कोचिंग अकादमी में करवाया जाएगा। अगले एक वर्ष में ट्यूशन फीस, छात्रावास शुल्क, किताबें, यात्रा और अन्य खर्चों को कवर करने की ₹ 3 लाख की अनुमानित लागत में सेउसका परिवार ₹ 50,000 का खर्च वहन करेगा और बाकी के₹ 2.5 लाख शुभचिंतकों और क्लब दाताओं से प्राप्त होंगे।

## अपंग लोगों के लिए तिपहिया साइकिल

पुणे जिले के दौंड तालुक के यवत गांव से शारीरिक रूप से विकलांग सुदाम शिंदे को एक तिपहिया साइकिल दी गई। मेहता ने कहा, इससे हमारे क्लब को अच्छी दृश्यता मिली और उन्होंने एक छोटा व्यवसाय शुरू करने में भी उन्हें सक्षम बनाया। एक और तिपहिया साइकिल पुणे के शनिवार वाड़ा के जनार्दन मोरे को दी गई और रोटेरियन दीप्ति भोंसले द्वारा प्रायोजित तीसरी तिपहिया साइकिल कैलाश निवग्ने को दान की

*व्हीलचेयर में बैठे सागर खालादकरअपने छात्रों के साथ।*

गई। अब चूंकि वे आवागमन कर सकते है, तो हम लाभार्थियों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने हेतु उपयुक्त व्यवसाय की पहचान करने में उनकी मदद करेंगे,उन्होंने आगे कहा।

रोटेरियन जीतू मेहता और क्लब की अनुशंसाओं के बाद, प्रवीण मसालेवाले न्यास ने अभिजीतदादा कदम स्पोर्ट्स नर्सरी को कई खेल उपकरण दान किए जिसका उपयोग कोथरुड़ के झुग्गी बस्ती के बच्चों द्वारा किया जा रहा है। बच्चों को सागर खालाडकर द्वारा प्रशिक्षित किया जा रहा हैजो हमारे क्लब द्वारा दान की गई एक इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर पर चलते है,मेहता आगे कहते है।

समाज के निचले तबके से माँ बनने वाली औरतों की जांच करने के लिए हाल ही मेंक्लब ने फॅमिली प्लैनिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया, पुणे,को एक ECGमशीन (₹45,000) दान की।

क्लब का विकलांगों के लिए उल्लेखनीय परियोजनाएं करने का एक लंबा इतिहास है और इस साल अध्यक्ष फ़िरोज़ मास्टर्स के नेतृत्व में हम अपनी परंपरा को जारी रख रहे है। 1986 में आधिकृत यह क्लब भारत में अन्य रोटरी क्लबों के साथ साझेदारी में विशाल LN-4 हैंड फिटमेंट शिविर आयोजित करने के लिए लोकप्रिय है। अब तक हमने 50 से अधिक कृत्रिम हाथ फिटकरने वाले शिविरों में लगभग 4,000 LN-4 कृत्रिम हाथ वितरित किए है,उन्होंने आगे कहा। ■

# जरूरतमंदों तक पहुंचना

**टीम रोटरी न्यूज़**

रोई मंडल 3070 के अंर्तगत, रोटरी क्लब फगवाड़ा मिडटाउन ने पंजाब के कपूरथला से 20 किमी दूर फगवाड़ा टाउन में एक ओल्ड एज होम और एक अनाथालय के सह्वासियों को जैकेट भेंट की। क्लब साल की शुरुआत से ही हर महीने इन संस्थानों को प्रावधान प्रदान कर रहा है।

क्लब अध्यक्ष सुरेंद्र पाल वर्मा ने ईएसआई अस्पताल में कोविड-19 से डॉक्टरों व देखभाल करने वालों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए पीपीई किट भेंट की। क्लब के सदस्यों ने स्थानीय अस्पतालों में जनता और मरीजों को प्रतिरक्षा बूस्टर जूस, पौष्टिक भोजन, मास्क और सैनिटाइजर वितरित किए। ■

# RIPE शेखर मेहता पोखरा, नेपाल में सम्मानित हुए

टीम रोटरी न्यूज़

*पीडीजी किरण लाल श्रेष्ठ और डीजी राजीब पोखरेल की उपस्थिति में* **RIPE** *शेखर मेहता और राशी एक पत्रकार को रोटरी जौर्नो अवार्ड प्रदान करते हुए।*

रो इ मंडल 3292 के अंतर्गत आने वाले भूटान और नेपाल के रोटरी क्लब, कोलकाता से द्विभाजन होने के बाद और सशक्त हुए हैं, RIPE शेखर मेहता ने कहा, अपनी दो दिवसीय नेपाल की पोखरा यात्रा के दौरान।

ये कहते हुए उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की, (1999-2000) के दौरान वो मंडल अध्यक्ष थे जब नेपाल के क्लब मंडल 3290 का हिस्सा थे, मंडल के 3291 और 3292 में विभाजित होने से पूर्व। उन्होंने रोटरियनों से बड़े लक्ष्य निर्धारित करने का आग्रह किया और लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए कहा। उनका कहना था कि नेपाल को 2030 तक शत प्रतिशत साक्षर करने के लिए रोटेरियनों को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

नेपाल के रीजन - 4 के मंडल 3292 के सभी 17 क्लबों ने RIPE शेखर मेहता और राशी का अभिनन्दन किया।कार्यक्रम में RRFC बासुदेव गोल्यानंद और पूर्व मंडल अध्यक्षों सहित 175 से अधिक रोटेरियन उपस्थित थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष केशब प्रसाद आचार्य ने स्वागत भाषण दिया और IPDG किरण लाल श्रेष्ठ ने RIPE मेहता का परिचय पढ़ा।

मेहता ने हिमालय आई हॉस्पिटल, घरिपाटन को एक OCT एंजियोग्राफी मशीन (95,000 डॉलर) सौंपी। यह जीजी परियोजना रो इ मंडल 2540 के रोटरी क्लब अकिता नार्थ, जापान द्वारा समर्थित थी, जिन्होंने कार्यान्वयन क्लब,रोटरी क्लब पोखरा मिडटाउन, के साथ भागीदारी की थी।

यह उपकरण मधुमेह और उच्च रक्तचाप के रोगियों में रेटिना विकार के उपचार में सहायक होता है। उन्होंने बांदीपुर ग्रामीण नगर पालिका को 13 स्ट्रीट लैंप भी दिए। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बांदीपुर के सौंदर्यीकरण हेतु रोटरी क्लब चितवन ने इस परियोजना को निष्पादित किया था।

आगामी अध्यक्षों को संबोधित करते हुए, मेहता ने उनसे टीम वर्क पर ध्यान केंद्रित करने और जरूरतमंदों तक पहुंचने का आग्रह किया और कहा कि उनका उद्देश्य सेवा और सदस्यता में वृद्धि होना चाहिए।

*RIPE मेहता एंजियोग्राफी उपकरण पर एक नज़र डालते हुए।*

**नेपाली पत्रकारों के लिए पुरस्कार**

मेहता ने मीडिया से सम्बंधित 16 व्यक्तियों और पत्रकारों को रोटरी जर्नो अवार्ड्स और बसु रोटरी वोकेशनल अवार्ड्स प्रदान किए, जिन्होंने हिमालय अंचल में बसे इस देश के सात प्रांतों में रोटरी परियोजनाओं के बारे में लिखा था और प्रचार किया था ।

पूर्व मंडल अध्यक्ष तीर्थ मान सख्या (2011-12) के कार्यकाल के दौरान, रो इ मंडल 3292 और मीडिया बिरादरी के बीच बेहतर तालमेल बिठाने के लिए, जर्नो अवार्ड्स की स्थापना की गई थी।

रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करने के लिए पुरस्कार में प्रशंसा का प्रमाण पत्र और ₹25,000 नेपाली रुपये नकद दिए जाते हैं।

मेहता ने अजय बाबू सिबाकोटी, मुख्य संपादक, *Hamrakura.com* और सुशासन के लिए एक लोकप्रिय दैनिक *Arthik Karobar* के प्रहलाद रिजल को, बासु रोटरी वोकेशनल अवार्ड्स दिए। इस पुरस्कार में ₹5 लाख नेपाली रुपये का नकद पुरस्कार और एक प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

बसु अवार्ड्स (₹10 लाख) रोटेरियन सुरेंद्र गोविंदा जोशी और उनकी पत्नी बद्री लक्ष्मी द्वारा प्रायोजित किया गया था। ■

# 100 लोगों को रोटरी क्लब कोलकाता के एंडोमेंट पुरस्कार प्राप्त हुए

कोलकाता में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के 100 लोगों को इस वर्ष अपने कल्याण ट्रस्ट के माध्यम से रो ई मंडल 3291 के रोटरी क्लब कलकत्ता द्वारा प्रतिवर्ष प्रस्तुत एंडोमेंट पुरस्कार प्राप्त करने के लिए चुना गया था। प्राप्तकर्ताओं में अनाथालयों और आर्थिक रूप से वंचित परिवारों के बच्चे शामिल थे जो शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहते हैं, जैसे दिव्यांग लोग, आनुवंशिक बीमारी से पीड़ित मरीज, नकदी की तंगी वाले गैर सरकारी संगठन और शिक्षा और कला में असाधारण प्रतिभा वाले बच्चे, आदि।

रोटरी सदन में डीजी सुदीप मुखर्जी ने पुरस्कार वितरित किए।

ट्रस्ट के चेयरमैन पूर्णेंधु रॉयचौधरी ने बताया कि एंडोमेंट फण्ड में ₹2.11 करोड़ रुपये का कोष था और पुरस्कार राशि कोष से अर्जित आय से वितरित की गई जो कुल ₹14.5 लाख थी। इन आवेदनों का पुनरीक्षण कोलकाता उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश अरुण कुमार दत्ता ने किया था।

सिर्फ दो दानदाताओं के साथ 29 साल पहले इस योजना की शुरुआत करने वाले पीडीजी प्रभात रोहातगी ने कहा कि उन्हें खुशी है कि यह कोष अपने वर्तमान आकार में बढ़ गया है जिससे अधिक जरूरतमंद लोगों तक

*एक दृष्टिबाधित लाभार्थी को पुरस्कार मिला।*

इसकी पहुंच आसान हो गई है। उन्होंने अपने हाल ही में दिवंगत भाई दिलीप रोहातगी, जो क्लब के पिछले अध्यक्ष भी थे, की स्मृति में एक और एंडोमेंट के निर्माण के लिए व्यक्तिगत दान किया। क्लब अध्यक्ष देबाशीष मित्रा ने धन्यवाद भाषण दिया। ■

# District Wise TRF Contributions as on March 2021

(in US Dollars)

| District Number | Annual Fund | PolioPlus | Endowment Fund | Other Funds | Total Contributions | EREY Donors (in numbers) | EREY % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | India | | | | |
| 2981 | 71,287 | 4,872 | 12,128 | 0 | 88,286 | 325 | 6.7 |
| 2982 | 35,987 | 16,949 | 20,770 | 47,517 | 121,224 | 109 | 3.6 |
| 3000 | 79,183 | 26,024 | 492 | 46,696 | 152,396 | 80 | 1.6 |
| 3011 | 143,087 | 15,050 | 65,653 | 230,754 | 454,543 | 121 | 3.3 |
| 3012 | 12,808 | 2,580 | 0 | 42,321 | 57,710 | 76 | 2.1 |
| 3020 | 162,230 | 65,862 | 66,514 | 42,726 | 337,331 | 280 | 6.9 |
| 3030 | 40,070 | 2,284 | 25,743 | 143,546 | 211,643 | 111 | 2.2 |
| 3040 | 36,356 | 344 | 0 | 6,700 | 43,399 | 46 | 2.2 |
| 3053 | 16,350 | 3,298 | 0 | 158,468 | 178,116 | 36 | 1.3 |
| 3054 | 74,242 | 3,512 | 0 | 372,519 | 450,273 | 265 | 4.4 |
| 3060 | 77,078 | 1,216 | 104,757 | 160,075 | 343,126 | 1319 | 30.3 |
| 3070 | 39,919 | 1,149 | 0 | 53,163 | 94,231 | 270 | 8.6 |
| 3080 | 54,493 | 13,100 | 0 | (19,761) | 47,832 | 175 | 5.3 |
| 3090 | 35,919 | 533 | 0 | (736) | 35,716 | 117 | 5.3 |
| 3100 | 58,319 | 252 | 0 | 14,770 | 73,341 | 192 | 8.5 |
| 3110 | 30,718 | 200 | 0 | 0 | 30,918 | 64 | 1.8 |
| 3120 | 14,261 | 1,769 | 0 | 8,913 | 24,944 | 114 | 3.4 |
| 3131 | 181,322 | 41,318 | 109,104 | 694,433 | 1,026,177 | 803 | 15.7 |
| 3132 | 22,263 | 2,643 | 5,000 | 6,451 | 36,356 | 51 | 1.5 |
| 3141 | 534,485 | 44,359 | 141,901 | 1,152,540 | 1,873,285 | 862 | 16.2 |
| 3142 | 223,575 | 33,184 | 451 | 50,370 | 307,580 | 781 | 24.4 |
| 3150 | 118,262 | 9,841 | 155,043 | 36,257 | 319,404 | 742 | 22.4 |
| 3160 | 28,904 | 8,893 | 16 | 0 | 37,813 | 66 | 2.6 |
| 3170 | 51,761 | 23,939 | 1,240 | 175,582 | 252,521 | 257 | 4.5 |
| 3181 | 71,508 | 6,289 | 0 | 7,050 | 84,846 | 309 | 9.2 |
| 3182 | 85,862 | 6,124 | 0 | 16,207 | 108,193 | 379 | 12.3 |
| 3190 | 165,216 | 77,133 | 52,035 | 219,520 | 513,904 | 811 | 16.2 |
| 3201 | 139,453 | 33,715 | 0 | 295,423 | 468,591 | 535 | 9.6 |
| 3202 | 51,769 | 23,252 | 8,468 | 54,957 | 138,446 | 155 | 2.9 |
| 3211 | 47,482 | 3,441 | 0 | 106,341 | 157,263 | 71 | 1.6 |
| 3212 | 29,320 | 51,362 | 14 | 140,733 | 221,428 | 54 | 1.3 |
| 3231 | 4,221 | 488 | 0 | 20,685 | 25,394 | 17 | 0.4 |
| 3232 | 71,328 | 39,771 | 6,500 | 1,056,130 | 1,173,729 | 178 | 3.1 |
| 3240 | 116,527 | 24,920 | 0 | 49,328 | 190,775 | 248 | 8.1 |
| 3250 | 43,217 | 4,439 | 7,195 | 52,911 | 107,761 | 337 | 9.1 |
| 3261 | 86,362 | 1,733 | 0 | 7,471 | 95,567 | 36 | 1.4 |
| 3262 | 97,918 | 3,151 | 2,542 | 0 | 103,610 | 143 | 4.0 |
| 3291 | 73,287 | 12,718 | 35,758 | 71,048 | 192,811 | 131 | 3.6 |
| **India Total** | **3,226,348** | **611,706** | **821,326** | **5,521,107** | **10,180,487** | **10,666** | **7.2** |
| 3220 Sri Lanka | 162,988 | 21,022 | 26,000 | 46,781 | 256,792 | 250 | 13.1 |
| 3271 Pakistan | 27,984 | 97,291 | 0 | 239,793 | 365,068 | 198 | 12.2 |
| 3272 Pakistan | 67,497 | 15,539 | 0 | 1,168 | 84,204 | 412 | 24.6 |
| 3281 Bangladesh | 188,652 | 10,451 | 31,000 | 290,777 | 520,880 | 431 | 6.1 |
| 3282 Bangladesh | 62,340 | 6,234 | 0 | 8,270 | 76,844 | 121 | 3.0 |
| 3292 Nepal | 269,151 | 9,867 | 0 | 225,591 | 504,610 | 1765 | 35.7 |
| **South Asia Total** | **4,004,961** | **772,110** | **878,326** | **6,333,488** | **11,988,885** | **13,843** | **8.2** |

Source: RI South Asia Office

ADVT.

Rotary RID 2982 | Rotary Opens Opportunities | Trailblazers | TEAM ACHIEVERS | T-E-A-C-H

# Rotary Club of Jalakandapuram Charter Day Celebrations - முப்பெரும் விழா

## ROTARY LIBRARIES - RID 2982 DISTRICT LITERACY PROJECT

### A T-E-A-C-H INITIATIVE TO MAKE MORE BEAUTIFUL HAPPY SCHOOLS

## வாசிக்க.. நேசிக்க.. ரோட்டரி நூலகங்கள்.. அரசு கிராம பள்ளிகளில்

**Rtn. Holger Knaack**
RI President, 2020-21

**Rtn. K.S. Venkatesan**
District Governor, 2020 - 21

**Rtn. AKS. Prof.Dr. A.K. Natesan**
IPDG

**Rtn. K. Sundharalingam**
DGE

**Rtn. P. Saravanan**
DGN

**Rtn. S.Ragavan**
DGND

**Rtn. A. Venkateswara Gupta**
DLCC

**Jhilam Roy Chowdhury**
Programme Director, RILM

**Rtn. V. Ganesh Shankar**
Asst. Governor, Zone - 4

**Rtn. K. Kumaravel**
President, RC Jalakandapuram

**Rtn. P. Balaji**
Secretary, RC Jalakandapuram

**Rtn. R. Boopathy**
Treasurer, RC Jalakandapuram

**Rtn. R. Venkatachalapathy**
Dist. Chair, Teachers Support

**Rtn. N.P. Ramaswamy**
Dist. Chair, Happy Schools

மகிழ்வான பள்ளிகளை உருவாக்க ரோட்டரி நூலகங்கள், **E-Learning,** ஆசிரியர் பயிற்சி, மாணவர் பயிற்சி. வருங்கால மாணவர்களை கல்வி, கலாச்சாரம், தொழிற்வாய்ப்பு பெற, மகிழ்வாக மாறிட ரோட்டரி கல்விக்குழு சங்கங்களுடன் இணைந்து இச்சிறப்பான செயல்களை செய்து வருகிறது.

அன்புடன் வாழ்த்தும் : ரோட்டரி மாவட்ட ஆளுநர், மதிப்புமிகு முன்னாள், வருங்கால ஆளுநர்கள், துணை ஆளுநர்கள், கல்விக்குழுவினர், மாவட்ட தலைவர்கள், மண்டல சங்கத் தலைவர், செயலர், பொருளர், இயக்குநர் மற்றும் உறுப்பினர்கள்.

**Rotary Club of Jalakandapuram - முப்பெரும் விழா :** ஜலகண்டாபுரம் ரோட்டரி சங்கத்தின் சாசன விழாவினை முன்னிட்டு முப்பெரும் விழாவில் 108 ரோட்டரி நூலகங்கள் வழங்கியும், 30 பள்ளிகளுக்கு ஸ்மார்ட் போர்டுகள் வழங்கியும், 3 அரசு பள்ளிகளை மகிழ்வான பள்ளிகளாக மாற்றியும் உதவி மகிழ்ந்தது. மேலும் 75 இப்பகுதி ஆசிரியர் பெருமக்களை நல்லாசிரியர் பெருமக்களாக கௌரவப்படுத்தியது **(Nation Builder Award).** இத்திட்ட மதிப்பு ரூ. 9.50 இலட்சம்.

தலைவர், இந்த மதிப்புமிகு நன்னாளில் எடுத்த நோக்கம், தான் சார்ந்த ஜலகண்டாபுரம் பகுதி **100%** கல்வி கற்றவர்களாகி வாழ்க்கை தரத்தில் உயர்ந்து வாழ்வில் முன்னேறிட வேண்டும் என்பதே. இதன் அடிப்படையிலேயே மொழிப்பெயர்ச்சி, அடிப்படை கல்வி, தொழிற்பயிற்சி ஆகியன பள்ளி கல்வித்துறை மற்றும் ஆசிரியருடன் இணைந்து இச்சீரிய தொண்டினை தொடங்கி வைத்தார்.

அரசு தரப்பில் இதற்கு பாலமாகவும், மகிழ்வான பள்ளிகளை உருவாக்கி நாட்டிற்கு பெருமை சேர்க்க நம்முடன் உதவிய திரு. **V.T.** சந்திரமோகன் அவர்களுக்கு பாராட்டுக்கள். இன்று விதைத்த 108 ரோட்டரி நூலகங்கள் நிச்சயமாக ஆழ்போல் தழைத்து இப்பகுதியை செம்மையாக்க உதவிடுவேன் என்று கூறியது இரட்டிப்பு மகிழ்ச்சி.

இந்த மாபெரும் திட்டத்திற்கு ஊக்கமளித்த மாவட்ட ஆளுநர் **Rtn. K.S.** வெங்கடேசன் அவர்களுக்கும், **DLCC Rtn. A.**வெங்கடேஸ்வர குப்தா அவர்களுக்கும் மனமார்ந்த நன்றிகள்.

இத்திட்டத்தில் எம்முடன் இணைந்து பாராட்டியும், நன்கொடை அளித்தும் கௌரவப்படுத்திய நல்உள்ளங்கள் : **IPDG. Rtn. Dr. AKS. A.K.** நடேசன், **DGE Rtn. K.** சுந்தரலிங்கம், **DGN. Rtn. P.** சரவணன், **DGND. Rtn. S.** ராகவன், மாவட்ட துணை ஆளுநர் **Rtn. V.** கணேஷ் சங்கர், மண்டலம் – 4, **DCHS Rtn. N.P.** ராமசாமி மற்றும் **DCTS Rtn. R.** வெங்கடாஜலபதி ஆகிய அனைவருக்கும் ஜலகண்டாபுரம் ரோட்டரி சங்கத்தின் சார்பில் மனமார்ந்த நன்றிகள்.

ரோட்டரி நூலகங்கள் அமைய உதவிய காவேரி இன்ஜினியரிங் கல்லூரி, மேச்சேரி, **SRV Modern Rice Mill,** சின்னசேலம், **Grip Strapping Technologies,** ஜதராபாத் ஆகியோருக்கும் எங்களது மனமார்ந்த நன்றிகள்.

எங்களுடன் சாசன நாளில் அனைத்து உதவிகளையும் நல்கிய எங்கள் சங்க குடும்ப உறுப்பினர்கள் **Rtn. R.A.** சரவணன், **Rtn. S.** அரசப்பன், **Rtn. N.** திருமால்குமார், **Rtn. C.** சம்பத்குமார், **Rtn.** செந்தில்குமார், **Rtn.** ஜகநாதன், **Rtn.** சிவக்குமார், **Rtn.** பாஸ்கர், **Rtn.** யுவராஜ், **Rtn.** முத்துகண்ணன், **Rtn.** சரவணன், **Rtn.** பாக்கியராஜ், **Rtn.** சவுண்டப்பன், **Rtn.** மணிகண்டன், **Rtn.** சீனி அனைவருக்கும் நிர்வாகிகள் சார்பில் நன்றிகளை தெரிவித்துக் கொள்கிறோம்.

இப்பகுதியை கற்றவராக மாற்றுவதில் உதவிபுரியும் தலைமையாசிரியர், ஆசிரியர் பெருமக்கள், கல்வித்துறை அலுவலர்கள், **PTA, SMC, SDC,** பெற்றோர் மற்றும் மாணவர்களுக்கு எங்கள் உள்ளம் கனிந்த நன்றிகள். தொடர்ந்து மேலும் பல மகிழ்வான பள்ளிகளை உருவாக்கி மகிழ்வோம்.

Message from
**Rotary India Literacy Mission**
**Programme Director**

For children, books are similar to dreams and the most precisions gift one can give to child is the opportunity to dream.

I congratulate all clubs of RID 2982 who are participating in the **"PADHO BHARAT"** Library Creation and Creating 428 libraries in Rural Government & Aided Schools in Tamilnadu.

RILM is extremely happy to support the project with 24,000 books for donation. Under leadership of RID 2982 DG **KS Venkatesan,** DLCC **A Venkateswara Gupta** & **Team** together, we will create more such libraries in future.

My special thanks to TEACH team.

**JHILAM ROY CHOWDHURY**
Programme Director, RILM.

நன்றியுடன்,
**ஜலகண்டாபுரம் ரோட்டரி சங்க உறுப்பினர்கள்**


PRIME SPONSORS :

SRV
No.1 SUPER RICE
Chinnasalem. Cell : 98432 36679

K. KUMARAVEL CELL CENTER
9-1-96, Kadaiveethi,
Jalakandapuram, Salem-636 501.
Cell : 98657 59989, 79040 06011

THE KAVERY
ENGINEERING COLLEGES • POLYTECHNIC COLLEGES
COLLEGES OF EDUCATION • INSTITUTE OF HEALTH SCIENCE
ARTS AND SCIENCE COLLEGE FOR WOMEN
MECHERI SALEM - 636 453.
E-mail : admission@kavery.org.in | Web : www.kavery.org.in
Contact : (+91) 95249 82156, 36156, 16156, 28156.

grip
GRIPSTRAPPING
TECHNOLOGIES PRIVATE LIMITED
HYDERABAD. ✆ 86106 71619, 96293 62729

Rotary PEOPLE OF ACTION

# दिल्ली के रोटेरियनों ने सेवा हेतु साइकलिंग की भारतीय फ़ेलोशिप की शुरुआत की

किरण ज़ेहरा

इंटरनेशनल फ़ेलोशिप ऑफ साइकलिंग रोटेरियन (FCS, जिसका अर्थ है, फ़ेलोशिप फॉर साइकलिंग टू सर्व) से प्रेरित होकर रोटरी क्लब दिल्ली मंथन, रो ई मंडल 3011, ने अगुवाई करते हुए इंडियन इंटरनेशनल फ़ेलोशिप ऑफ साइकलिंग रोटेरियन्स का निर्माण किया है और इसने इस साल अप्रैल में दो बड़े कार्यक्रमों की मेजबानी की है। पिछले वर्ष जब क्लब ने दिल्ली में राइड टू एंड पोलिओ का आयोजन करके 10,000 डॉलर इकट्ठा किए, तब तत्कालीन क्लब अध्यक्ष ने रोटरी जगत के इस हिस्से में साइकलिंग गतिविधियों को संस्थागत करने का विचार प्रस्तुत किया। फ़ेलोशिप ऑफ साइकलिंग रोटेरियन्स साइकिल चलाने और बड़-बड़े शुरुआती एवं समापन कार्यक्रमों के आयोजन करने से कई अधिक है। यह तंदुरुस्ती, मैत्री के बारे में है और इसका लक्ष्य अच्छे कारणों के लिए धन एकत्रित करना है, क्लब अध्यक्ष नरिंदर कुमार लांबा कहते है।

जहां पहली रैली में साइकिल चालक महेश कुमार को सम्मानित किया गया, जिन्होंने शांति को बढ़ावा देने के लिए पूरे भारत में 6,000 किलोमीटर की एकल सवारी पूरी की थी, दूसरी रैली एक प्रचार कार्यक्रम थी जहां फैलोशिप के सदस्यों ने साइकिल चालकों के पुनर्मिलन में भाग लिया, जो साइकिल प्रेमियों द्वारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आयोजित किया गया एक वार्षिक कार्यक्रम था।

अंतर्राष्ट्रीय FCS, रो ई मंडल 1700, के अध्यक्ष जीन लुक बर्जर ने दिल्ली में साइकिल फ़ेलोशिप के गठन पर लांबा को बधाई दी। उन्होंने कहा, उन्होंने फैलोशिप द्वारा अनुशंसित रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने के अनुरूप एक शानदार सवारी का आयोजन किया है, और आगे कहते है कि FCS जर्मनी ने एक ऐप के माध्यम से कुछ आभासी रैलियों का आयोजन किया है। पहले, हमने एस्कॉर्न-फ्रैंकफर्ट वेलोटूर किया, जिसके माध्यम से हमने गेट्स फाउंडेशन फॉर एंड पोलियो के अनुदान के साथ 27,000 यूरो जुटाए; इसके बाद हमने पोर्डोई पास की चढ़ाई की। उन्होंने पिछली जुलाई में साइकलिंग टू सर्व रैली के आयोजन में रो ई मंडल 3190 के प्रयासों की प्रशंसा की, जहां फ़ेलोशिप सदस्यों ने भोजन और राशन किट वितरित करके 95 परिवारों की मदद की। इस फैलोशिप का मकसद समर्थकों

*दिल्ली एनसीआर फेलोशिप, सेवा के लिए साइकिलिंग समूह के कुछ सदस्य।*

*फेलोशिप फॉर साइक्लिंग टू सेर्वे, ऑस्ट्रिया में आयोजित की गई इनसाइब्रुक से रोम तक साइकिल यात्रा।*

***End Polio** साइकिल रैली के लिए तैयार रो ई के महासचिव जॉन ह्यूको।*

के जयकारों के बीच फिनिश लाइन को पार करना नहीं है; बल्कि इसका मकसद प्रतिस्पर्धी रूप से और मनोरंजन के माध्यम से दुनिया भर में दोस्ती को विकसित करना और बढ़ावा देना है, इंटरनेशनल FCS, रो ई मंडल 5340, यूएस/कनाडा के उपाध्यक्ष जेम्स मोरिसन कहते है।

डीजी संजीव राय मेहरा, रो ई मंडल 3011, ने भारतीय रोटेरियन और रोटरेकटरों के लिए एक साइकिल फ़ेलोशिप के विचार की सराहना की। उन्होंने इसे दिल्ली NCR फैलोशिप फॉर साइकलिंग टू सर्व नाम दिया। अंतर्राष्ट्रीय FCS का गठन 33 साल पहले बेल्जियम और फ्रांस में रोटेरियनों द्वारा किया गया था, लांबा कहते है। स्थानीय रोटरी क्लबों और प्रायोजकों के सहयोग से, इसके गठन के बाद और राइड टू एंड पोलियो के माध्यम से कई रोटरी परियोजनाएँ लागू की गईं और लाखों डॉलर एकत्रित किए गए। दिल्ली NCR FCS ने जागरूकता पैदा करने और धन जुटाने के लिए विश्व पोलियो दिवस पर वार्षिक एंड पोलियो नाउ साइकिल रैली की मेजबानी करने की योजना बनाई है। सभी उम्र के लोग साइकिल चलाने के स्वास्थ्य और मानसिक लाभों का अनुभव कर रहे है।

स्वास्थ्य, फ़ेलोशिप और सेवा रोटेरियनों और रोटरेकटरों द्वारा साइकिल चलाकर पूरी की जाती है। तंदरुस्त रहने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है? लांबा मुस्कुराते है। ■

# यूके-वडोदरा के क्लब स्कूलों में पेयजल प्रदान करते है

**वी मुत्तुकुमारण**

*रोटरी क्लब बड़ौदा मेट्रो के अध्यक्ष हिमांशु राणा (दूसरी पंक्ति, बाएं) और अन्य क्लब सदस्यों के साथ डीजी (2018-19) पिंकी पटेल।*

अगस्त 2013 में अपनी कंपनी फ्लिंट समूह द्वारा बनाई जा रही एक नई सुविधा के लिए रोटेरियन रसेल टेलर, सचिव, रोटरी ससेक्स वेल, यूके, रो ई मंडल 1145, द्वारा गुजरात के वडोदरा की यात्रा शहर में एवं उसके आसपास के इलाकों में स्थित पाँच सरकारी स्कूलों के 2,000 से अधिक छात्रों एवं शिक्षकों के लिए अप्रत्याशित लाभ की बात साबित हो गई। अब उनके पास उनकी जरूरत के आधार पर निर्मित आरओ निस्पंदन इकाइयाँ है जो उन्हें स्वच्छ पेयजल प्रदान करती है।

आरओ स्थापना परियोजनाओं को शुरू करने से पहले, टेलर के क्लब ने रोटरी क्लब बड़ौदा मेट्रो, रो ई मंडल 3060, के सहयोग से आदर्श निवासी शाला वी जे कन्या स्कूल में बच्चों के लिए 30 बेड उपलब्ध करवाए थे वडोदरा में एक अच्छा साथी क्लब मिलने के बाद, उन्होंने पांच स्कूलों - आदर्श कन्या स्कूल, पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रथमिक शाला, श्री पटेल शिवभाई लल्लूभाई सार्वजनिक विद्यालय, समलाया, और दाजीपुरा और देसार गांवों में दो अन्य स्कूलों - में आरओ इकाइयां स्थापित करने की योजना बनाई जो पानी के संदूषण से बुरी तरह प्रभावित थे। इसकी शुरुआत टेलर के साथ कॉफी पर हुई एक चर्चा के दौरान हुई थी और तब से मानवीय परियोजनाओं का एक सफर शुरु हो गया, रोटरी क्लब वडोदरा वन से रोटेरियन नितिन भाटे ने याद किया।

टेलर ने कहा, कई छात्रों को अपने स्कूलों तक पहुंचने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, खासकर गांवों में, ऐसे में पानी की बोतल साथ लेकर चलना उनके लिए काफी कठिन हो जाता है। जहां बहुत से बच्चों ने स्कूल आना बंद कर दिया, जो बच्चे पानी की बोतल लिए बिना आए उन्हें असुरक्षित पानी पीना पड़ा और इससे वे बीमार हो गए। इससे स्कूल में उपस्थिति में तीव्र गिरावट आई, उन्होंने याद किया।

## आरओ की स्थापना

सात साल की अवधि में, टेलर और कार्यान्वयन क्लब से उनके साथी रोटेरियन नितिन भाटे ने इन पाँच सरकारी स्कूलों में आरओ इकाइयों की स्थापना एक विधिवत रूप से की। प्रायोजक, रोटरी क्लब ससेक्स वेले, ने ₹6 लाख (6,500 स्टर्लिंग पाउंड) का निवेश किया है, जिसने पूरे डिजाइन, स्थापना, रखरखाव और तीन वर्षों के लिए फ़िल्टर प्रतिस्थापन की लागत को कवर किया है, जिसके बाद वडोदरा क्लब भविष्य के रखरखाव के खर्चों को वहन करेगा। प्रत्येक स्कूल में कम से कम 250-300 छात्र थे। हमने स्कूल परिसर की तस्वीरें लीं और उन्हें अपने वैश्विक साथी के साथ साझा किया, भाटे ने कहा। प्रत्येक स्कूल की जरूरतों के आधार पर आरओ यूनिट की क्षमता अलग-अलग है।अत्यधिक संतुष्टि के साथ पीछे मुड़कर देखते हुए, टेलर ने कहा कि इस तरह की सहयोगी परियोजनाओं को करना मज़ेदार है। स्कूल के प्रधानाध्यापकों को यह बताते हुए खुशी हुई कि आरओ स्थापना के बाद से औसत उपस्थिति 20-25 प्रतिशत तक बढ़ गई, और गाँव के स्कूलों में तो यह लगभग 30 प्रतिशत तक बढ़ गई।

टेलर रोटरी क्लब बड़ौदा मेट्रो की उत्कृष्ट योजना एवं परियोजना के कार्यान्वयन के लिए प्रशंसा करते है जिससे परियोजनाओं का समय पर निष्पादन सुनिश्चित हो पाया।

## छठवीं जल परियोजना

अब, रोटरी क्लब ससेक्स वेल ने खखरिया तालुक में स्थित के एच पटेल जनपद विद्यामंदिर स्कूल में उसी प्रकार से आरओ स्थापना को प्रायोजित करने के लिए रोटरी क्लब वडोदरा वन के साथ हाथ मिलाया है। ₹1.82 लाख (1,800 पाउंड स्टर्लिंग) की लागत वाली यह परियोजना इस स्कूल में लगभग 220 छात्रों और कर्मचारियों को स्वच्छ पेयजल प्रदान करेगी। तकनीकी बारीकियों एवं लागत पर सावधानीपूर्वक ध्यान जिस तरह से पहले सफल हुई परियोजनाओं पर दिया गया था, उसी प्रकार से इस नई आरओ परियोजना पर भी दिया जाएगा, रोटरी क्लब वडोदरा वन की अध्यक्ष मनीषा भट्ट विश्वास दिलाती है। ■

# अफगानिस्तान में तीन पोलियो कर्मचारियों की गोली मारकर हत्या

तीन महिला पोलियो कार्यकर्ता - नगीना, 2012 से एक पर्यवेक्षक, बसीरा, 2016 के बाद से एक स्वयंसेवक और समीना, पिछले कुछ दौरों से एक स्वयंसेविका की हाल ही में अफगानिस्तान के जलालाबाद में टीकाकरण दौरे के दौरान गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके अलावा, नंगरहार प्रांत में कोल्ड चेन कार्यालय के प्रवेश द्वार पर एक विस्फोट हुआ। कोई घायल नहीं हुआ लेकिन उपकरणों को नुकसान पहुँचा।

रो ई पोलियोप्लस के अध्यक्ष माइकल मैकगवर्न ने रो ई मुख्यालय से जारी किए गए एक बयान में इस घटना पर दुख व्यक्त किया। हम आज अफगानिस्तान के जलालाबाद में तीन पोलियो कार्यकर्ताओं को खोने के बारे में सुनकर बहुत दुखी हुए। जैसा कि हमारा रिवाज है, हम परिवारों की अल्पकालिक सहायता करने हेतु उन्हें तत्काल राशी प्रदान करेंगे, उन्होंने कहा।

अफगानिस्तान नेशनल पोलियोप्लस समिति के अध्यक्ष मोहम्मद इशाक नियाजमंद ने स्वास्थ्य मंत्री और पोलियो कार्यक्रम के नेतृत्व के साथ बाद में बैठकें की। रोटरी और गेट्स फाउंडेशन में से प्रत्येक ने 1,500 डॉलर और थकज अफगानिस्तान ने 1,000 डॉलर प्रदान किए। इशाक अगले कुछ दिनों में इस दुर्घटना से जीवित बचे कुछ प्रमुख लोगों को धन वितरित करने वाले एक समूह में शामिल हो जाएंगे।

हमने जलालाबाद में पोलियो आपातकालीन संचालन केंद्र के लिए संवेदना व्यक्त की। ये घटनाएं स्थानिक देशों में पोलियो उन्मूलन का काम खत्म करने में सभी पार्टियों के साथ काम करने के महत्व को दर्शाती है। हम सभी प्रार्थना करते है कि अब किसी के जीवन को कोई और नुकसान न हो, मैकगवर्न ने कहा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# रो ई अध्यक्ष शेकर मेहता ने किया गोरखपुर का दौरा

**टीम रोटरी न्यूज़**

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने गोरखपुर में 18 मार्च को सोनबरसा में एक नवीनीकृत 'पी एस प्राइमरी स्कूल' राज्य शिक्षा विभाग को सौंपा। रो ई मंडल 3120 के अंतर्गत, आर सी, गोरखपुर ने 'टोयो इंजीनियरिंग इंडिया' से दो ग्लोबल ग्रांट और सीएसआर फंडिंग के जरिए इसे और शहर के 15 अन्य स्कूलों को अपग्रेड किया है।

क्लब द्वारा अपना प्लेटिनम जुबली वर्ष मनाने के साथ ही क्लब के अध्यक्ष अरविंद विक्रम चौधरी ने दशकों से विभिन्न मील का पत्थर साबित हुई परियोजनाओं के बारे में बताया। परियोजना समन्वयक एम पी कँदोई ने अपनी जानकारी देते हुए कहा कि हैप्पी स्कूलों की परियोजनाओं से करीब 5,500 बच्चों को फायदा होगा। अब तक 26 हैप्पी स्कूलों को ग्लोबल ग्रांट के तहत पूरा किया जा चुका है। कार्यक्रम में डीजी करुणेश कुमार श्रीवास्तव, डीजीई समर राज गर्ग और पीडीजी अनूप अग्रवाल मौजूद रहे।

मेहता ने कहा कि ई-लर्निंग कक्षाओं के ज़रिये दिए जा रहे दृश्य अनुभवों से छात्रों को लाभ होगा। साथ ही यह भी जोड़ा कि पोलियो-उन्मूलन के बाद, भारत में 100 प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करना रोटेरियन्स के सामने अगला बड़ा लक्ष्य है।

*गोरखपुर के एक हैप्पी स्कूल में RIPE शेखर मेहता और राशी के साथ डीजी करुणेश श्रीवास्तव।*

डीजी श्रीवास्तव ने महामारी के दौरान भी सदस्यता बढ़ाने के प्रयासों के लिए क्लब की सराहना की। ■

# आइए कोविड से लड़ने में हमारे नागरिकों की मदद करें

**अशोक महाजन**

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताज़ा खबर के अनुसार 23 अप्रैल तक दुनिया भर में 144 मिलियन कोविड मामलें सामने आ चुके है और 3 मिलियन से अधिक मौतें हो चुकी है। थकज चिंतित है, और हम रोटरी बिरादरी को भी चिंतित होना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्थानीय स्तर पर नेतृत्वकर्ता लाखों लोगों को बचाने के लिए कार्रवाई करें।

रोटेरियनों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली की कमियों से लोगों की मृत्यु ना हो। राष्ट्रीय और वैश्विक आपातकाल की इस घड़ी में, रोटेरियनों को यह दिखाना होगा कि उन्हें परवाह है। टीके, ऑक्सीजन, बिस्तर और अन्य चिकित्सीय सुविधाओं की कमी के कारण रोटरी रोगियों को अपने स्वयं के मृत्यु पत्र पर हस्ताक्षर करने की अनुमति नहीं दे सकता। हम गंभीर त्रुटियों के लिए एवं दूसरी लहर के लिए आकस्मिक योजना तैयार ना करने के लिए प्रशासन को दोष देने में समय बर्बाद नहीं कर सकते। शायद पहली लहर को नियंत्रित करने के हमारे अनुपयुक्त अभिमान ने हमें लापरवाह बना दिया था।

रोटरी को आपातकालीन सहायता प्रदान करनी होगी ताकि लोगों को जीवित रहने का मौका मिल सकें। हम रोटेरियनों ने दिखाया है कि सब कुछ संभव है। जब हम अपने सामूहिक प्रयास से कोविड से छुटकारा पा लेंगे, तब हम इस तथ्य का जश्न मना सकते है कि यह जीत सामूहिक रूप से हम सभी की है।

भारत में रोटरी सक्रिय रूप से विभिन्न ज़िलों में कोविड टीकाकरण को प्रोत्साहन दे रहा है। रोटरी क्लब उत्साहपूर्वक टीकाकरण शिविरों का आयोजन कर रहे है और टीकाकरण केंद्र स्थापित करने में सहायता कर रहे है। हरियाणा सरकार ने रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स को सामूहिक टीकाकरण कार्यक्रम में मदद करने के लिए आमंत्रित किया है। मैं इस साझेदारी को स्थापित करने के लिए जोनल समन्वयक PDG टी के रूबी (रो ई मंडल 3080) को बधाई देता हूं।

तमिलनाडु सरकार ने अपने कोविड टीकाकरण अभियान में सहायता के लिए रोटरी को आमंत्रित किया है। अध्यक्ष कपिल चिताले के नेतृत्व में, रोटरी क्लब मद्रास टीकों के परिवहन के लिए दो पूर्णतः आवरणयुक्त ऐसी वैन प्रदान करेगा। केंद्रों पर डॉक्टर स्वयंसेवक उपलब्ध कराए जाएंगे और टीकों के भंडारण की व्यवस्था की जाएगी।

रोटरी क्लबों ने केरल में 50 कोविड टीकाकरण केंद्र स्थापित किए है और हर दिन कम से कम एक केंद्र इस सूची में जुड़ रहा है। टीके और टीकाकरण करने वाले राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए गए है। डइख केंद्रों को कंप्यूटर और ऑपरेटरों से लैस कर रहा है, और रोटरी बुनियादी सुविधाओं और केंद्रों को चलाने के लिए आवश्यक सुविधाएं प्रदान कर रहा है। पूरे राज्य में रोटरी टीकाकरण केंद्रों और शिविरों के माध्यम से लगभग 50,000 मुफ्त कोविड टीके लगाए गए है।

रोटरी को आपातकालीन सहायता प्रदान करनी होगी ताकि लोगों को जीवित रहने का मौका मिल सकें।

राजस्थान सरकार ने रोटरी के साथ अपने आधिकारिक भागीदार के रूप में काम करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए है। हम पूरे गुजरात में कम से कम 1,500 टीकाकरण केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य रख रहे है और उत्तर प्रदेश में सभी टीकाकरण केंद्रों में रोटरी द्वारा स्थापित एक सेल्फी पॉइंट है।

महाराष्ट्र में कुछ अस्पतालों में ऑक्सीजन कन्सन्ट्रैशन मशीनें उपलब्ध कराई गई है और ऐसी अधिक मशीनें उपलब्ध कराई जाएंगी। रोटरी क्लबों ने विभिन्न स्थानों पर सूचना केंद्र स्थापित किए है जहां लोग जान सकते है कि पंजीकरण कैसे करना है और टीकाकरण कहाँ कराना है। वरिष्ठ नागरिकों को विशेष सहायता प्रदान की जाती है। मुंबई में, नगर निगम के एक अनुरोध के बाद केंद्रों पर कोल्ड चेन बनाए रखने के लिए 10 मेडिकल रेफ्रिजरेटर प्रदान किए गए है और अगले कुछ दिनों में और अधिक दान किए जाएंगे।

टीकाकरण के समर्थन में रोटरी नेतृत्वकर्ताओं के संदेशों वाले पोस्टर सोशल मीडिया के माध्यम से रोटेरियनों द्वारा प्रसारित किए जा रहे है।

हमारी टीम का हर सदस्य पूरी तरह से प्रतिबद्ध है और हम भाग्यशाली है कि हमारे पास ऐसे मंडल नेतृत्वकर्ता है जो इस स्थिति की गंभीरता को समझते है और समर्थन के लिए तैयार है।

*लेखक पूर्व रोटरी अंतर्राष्ट्रीय निदेशक और रोटरी इंडिया की कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष है।*

Rotary PEOPLE OF ACTION

# प्रोजेक्ट ऑरेंज 200 हाइब्रिड विज़न केंद्रों की शुरूआत करेगा

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3232 के प्रोजेक्ट ऑरेंज का लक्ष्य शुरुआती चरण में 2,500 गांवों और एक करोड़ लाभार्थियों को शामिल करते हुए 200 हाइब्रिड विज़न केंद्र (HVC) स्थापित करके परिहार्य नेत्रहीनता का मुकाबला करना है। सहायक परियोजना अध्यक्ष एम नचियप्पन ने कहा, हम 25 लाख लाभार्थियों को चश्मे दे रहे है और पांच लाख मरीजों की सर्जरी करेंगे और आगे कहा कि पहले 200 विज़न केंद्रों की कुल लागत ₹25 करोड़ आएगी।

अब तक, पाँच मंडलों में 32 क्लबों की भागीदारी के साथ 1.6 मिलियन डॉलर की लागत के सात वैश्विक अनुदानों को 104 विज़न केंद्र स्थापित करने की मंजूरी दी गई है। *प्रोजेक्ट ऑरेंज* को लागू करने के लिए रो ई मंडल 3232 की आठ नेत्र अस्पतालों, जिसमें एल वी प्रसाद आई इंस्टीट्यूट, शंकर आई हॉस्पिटल और अरविंद आईकेयर सिस्टम शामिल है, के साथ ही आठ विदेशी क्लबों के साथ साझेदारी है।

मंडल ने हाल ही में चेन्नई के बाहरी इलाके में 10 HVC का उद्घाटन किया और छह और HVC जल्द ही चेन्नई के आसपास के क्षेत्रों जैसे महाबलीपुरम, व्यासरपादी, उथुकोट्टई और पदप्पई में स्थापित किए जाएंगे जहाँ विशेष नेत्र देखभाल संभव नहीं है।हमारा उद्देश्य 200 ऑरेंज क्लब के माध्यम से पहले वर्ष में कम से कम एक करोड़ लाभार्थियों तक पहुंचना है। इसकी लागत मात्र ₹22 प्रति व्यक्ति है, डीजी एस मुत्तुपालनिअप्पन ने कहा।नचियप्पन ने कहा कि प्रत्येक HVC में एक दृष्टिमितिज्ञ और एक नेत्र सहायक होंगे, जिन्हें बुनियादी अस्पतालों में नेत्र विशेषज्ञों द्वारा सहायता दी जाएगी। अपवर्तक त्रुटियों या आंखों की अन्य बीमारियों हेतु लोगों की जांच करने के लिए सहायक ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करेगा।स्थापना के पहले चरण के दौरान इस परियोजना ने 700 ग्रामीण लोगों को रोजगार दिया है, जबकि 1,500 अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुए है।

*एक विजन सेंटर का उद्घाटन करते हुए डीजी एस मुत्तुपालनिअप्पन।*

देश में नेत्र देखभाल का एक परिप्रेक्ष्य देते हुए, उन्होंने कहा कि भारत को 1,000 से अधिक केंद्रों की वर्तमान उपलब्धता के मुकाबले कम से कम 20,000 विज़न केंद्रों की आवश्यकता है। भारत में, 8.8 मिलियन लोग नेत्रहीन है, और 80 प्रतिशत नेत्रहीनता का उपचार किया जा सकता है। लेकिन केवल 10 प्रतिशत के पास ही समुचित नेत्र देखभाल तक की पहुँच है। प्रत्येक HVC समूह लगभग 500,000 की आबादी की सेवा करेगा।

## मिश्रित समूह

प्रत्येक HVC के पास माध्यमिक देखभाल केंद्र (बुनियादी अस्पताल) से टेलीमेडिसिन नेत्र रोग विशेषज्ञ के परामर्श से नेत्र रोगों के इलाज हेतु उपकरणों की एक श्रृंखला होगी। एक HVC में लगभग 60,000 लोगों की सेवा करने हेतु मोबाइल विज़न केयर यूनिट (MVCU) और एक उन्नत MVCU होगा।

आठ MVCU के साथ आठ HVC और एक -MVCU मिलकर एक HVC समूह का निर्माण करते है ताकि ग्रामीण, अर्ध-शहरी और झुग्गी समुदायों को प्राथमिक नेत्र देखभाल प्रदान की जा सकें। नचियप्पन ने कहा, आगे के उपचार या सर्जरी की आवश्यकता वाले मरीजों को माध्यमिक देखभाल केंद्र भेजा जाएगा। रो ई मंडल 3232 ने समुदायों में *प्रोजेक्ट ऑरेंज* को बढ़ावा देने के लिए प्रचार फिल्में बनाई। हमने आने वाले वर्षों में भारत में परिहार्य नेत्रहीनता का मुकाबला करने की दिशा में तेजी से बढ़ने के लिए रणनीति तैयार की है, उन्होंने कहा। ■

# जड़ और कंद मेला

टीम रोटरी न्यूज़

भूले हुए भोजन को वापस थाली में लाना और इसकी खपत को प्रोत्साहन देना ताकि किसानों की मदद करने के अलावा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके - यह उद्देश्य था जब रो ई मंडल 3181 के रोटरी क्लब मैसूर वेस्ट, ने हाल ही में मैसूर में दो दिवसीय 'जड़ और कंद मेला' का आयोजन किया था।

टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने वाले 'सहज समृद्ध' के साथ साझेदारी करने वाले इस कार्यक्रम में राज्य भर के किसानों ने कंदों और जड़ों की किस्मों का प्रदर्शन किया था। इनमें से अधिकांश एक जैसे दिखते हैं, लेकिन विभिन्न पोषण तत्व हैं, कहते हैं, क्लब के सचिव दिनेश कुमार डी के, वे आगे कहते हैं, हाथी पैर रतालू, फ्रेशो रतालू, कम रतालू कुछ परिचित लग सकते हैं, लेकिन एक सौ ऐसे हैं, जिनके नाम उनके आकार और माप के अनुसार ही अनोखे हैं।

मसहज समृद्धफ के कृष्णप्रसाद कहते हैं, बैंगनी रतालू जैसी कई किस्में हैं, जिनका इस्तेमाल आइसक्रीम और केक में किया जाता है, हालांकि अभी तक कई किस्मों का दस्तावेजीकरण नहीं किया

*प्रदर्शनी में रोटेरियन।*

गया है। वह आगे जोड़ते हैं, कुछ कंद और जड़ें घरेलू स्तर पर खाद्य सुरक्षा का स्रोत हो सकती हैं और हमारा इरादा घर के पिछवाड़े उनकी खेती को बढ़ावा देना है, ताकि स्थानीय आबादी के लिए पर्याप्त पोषण सुनिश्चित किया जा सके।

मैसूर के महाराज यदुवीर कृष्णदत्ता चामराजा वाडियार ने मेले का उद्घाटन किया। कंद और जड़ों के कई लाभ हैं, क्योंकि वे पानी की कमी वाले क्षेत्रों में उगाये जा सकते हैं तथा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं पड़ती। उन्होंने कहा, वे किसानों के लिए फायदेमंद हैं, क्योंकि खाद्य सुरक्षा के मद्देनज़र इसकी पैदावार की लागत लगभग ना के बराबर है।

इस कार्यक्रम में 15,000 से अधिक पर्यटक और ₹12 लाख से अधिक का कारोबार देखने को मिला। उद्घाटन के दौरान आरसी मैसूर पश्चिम के अध्यक्ष डॉ राघवेंद्र प्रसाद, पीडीजी जोसेफ मैथ्यू, आर कृष्णा और जी के बालकृष्ण उपस्थित थे।■

# यमुना के तट पर मधुर संगीत

दिल्ली में आईटीओ पुल के पास यमुना नदी के किनारे एक फरवरी की सुबह हवा में मधुर संगीत भर गया। सिद्धार्थ बनर्जी ने सिद्ध वीणा द्वारा और उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के पौत्र उस्ताद फतेह अली खान ने शहनाई द्वारा जो अद्भुत जुगलबंदी प्रस्तुत की उसका आनंद 250 से अधिक लोगों ने लिया।

क्लब के अध्यक्ष नरिंदर कुमार लांबा कहते हैं, जागरूकता पैदा करने और दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों को शहर में बहने वाली यमुना नदी को साफ करने और फिर से जीवित करने की तात्कालिकता पर दबाव बनाने के लिए, इस कार्यक्रम 'यमुना के लिए राग' का आयोजन रो ई मंडल 3011 के आर सी दिल्ली मंथन द्वारा एक गैर सरकारी संगठन भाटियम के साथ मिलकर किया गया था।

क्लब द्वारा अभियान के लिए नियोजित कई कार्यक्रमों में से जुगलबंदी यह पहला कार्यक्रम था। लांबा कहते हैं, हमने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के साथ मामला दर्ज करने के लिए एक क़ानूनी टीम बनाई है, जो कि यमुना में केवल उपचारित अपशिष्टों के निर्वहन के लिए आदेश पारित करवाने पर जोर देगी, और नदी के किनारे की भूमि को साफ करने और उसका पुनरुद्धार करने के लिए एक अन्य टीम बनाई है। ■

# रोटरी क्लबों में रोटरेकटरों को फलने दें: बेरी रेसिन

**टीम रोटरी न्यूज़**

जब रोटरेकटर और रोटेरियन एक साथ काम करते है तो दोनों एक दूसरे से लगातार सीखते है जो बहुत अच्छी बात है और एक संगठन होने के नाते रोटरी को अभी भी बहुत कुछ सीखना है कि कैसे एक बड़े पैमाने पर रोटरेकटरों का समर्थन किया जा सकता है, PRIP बेरी रेसिन ने कहा। आभासी अंतर्राष्ट्रीय सभा में PDRR निशिता पेडनेकर, रो ई मंडल 3170,के साथ एक संवादात्मक सत्र मेंउन्होंने कहा कि रो ई ने रोटरेक्ट क्लबों और रोटरेकटरों को रोटरी के रूप में समान कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए कई नीतियों और प्रक्रियाओं को बदल दिया है।

लेकिन चुनौती रोटरी क्लबों की संस्कृति को बदलने की है ताकि यह खुलकर युवा पेशेवरों को स्वीकार कर सकें। हमें उनकी आकांक्षाओं और क्लबों को संचालित करने के उनके विचारों पर अधिक ध्यान देना चाहिए और उन्हें अपनी सभी समितियों में शामिल करना चाहिए, उन्होंने आगे कहा और बताया कि रोटरेकटरों में उत्साह है और वह आज के जमाने के हिसाब से चलते है। उनमें अद्भुत रचनात्मकता हैऔर हमारी दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की प्रबल इच्छा है। हमें रोटरी में इन सभी संपत्तियों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि रो ई की संचालन संरचनाओं पर ध्यान दिया जाना चाहिएताकि यह पता लगाया जा सके कि निर्णय प्रक्रिया में शामिल होने के लिए रोटरेकटरों एवं अन्य लोगों के लिए कैसे जगह बनाई जाए।

रोटरेकटर वो ऊर्जा लाते है जो कुछ रोटरी क्लब खो चुके हैलेकिन वे उस ऊर्जा को तभी ला सकते है जब वे अभिलषित महसूस करते है। रोटेरियनों को यह काम बखूबी करना चाहिए: युवा सदस्यों का स्वागत।

रोटरेकटरों सहित नए सदस्यों को आकर्षित करने के रेसिन के एक सवाल परनिशिता ने कहा, नए सदस्यों को आकर्षित करने का सबसे बढ़िया रास्ता सामाजिक मीडिया है, तो चाहे आप एक रोटेरियन हो या एक रोटरेकटर मेरे हिसाब से आपको एक मजबूत सामाजिक मीडिया उपस्थिति और एक स्पष्ट आवाज की आवश्यकता है। हर पहल को सामाजिक मीडिया पर साझा किया जाना चाहिए जिससे यह रोटरी के प्रभाव के बारे में जागरूकता पैदा करेगा और उसकी पहुंच का विस्तार करेगा।

नए सदस्यों के जुड़ जाने के बाद, वे नए विचार और ऊर्जा ला सकते है। लेकिन निशिता के हिसाब से महत्वपूर्ण बात यह है कि मौजूदा सदस्य उनके साथ कितना अच्छा संबंध रखते है औरकैसे उनके मन में रोटरेक्ट की नैतिकता बैठाते है। यही चीज नए सदस्यों को रोक सकती है। यह सब टीम वर्कऔर एक दूसरे की राय और विचारों को सुनने के बारे में है। नए सदस्यों को शामिल करने के लिए, हमें उस नए जीवन की सराहना करने की ज़रूरत है जिसे वो क्लब में लाते है, और उन्हें दिखाते है कि यह कितना मूल्यवान है, उन्होंने समझाया।

*PRIP बेरी रेसिन और PDRR निशिता पेडनेकर*

निशिता के सुझावों से सहमत होते हुए रेसिन ने रोटरी क्लबों से युवा पेशेवरों के लिए हमें अधिक प्रासंगिक बनाने हेतु मिलकर काम करने का आग्रह किया। यह दो-तरफा जिम्मेदारी हैइसलिए क्लबों के लिए अपने दृष्टिकोण में सक्रिय रहें। हमें रोटरेकटरों को बराबरी से महत्व देना चाहिए। वे रोटेरियनों की तरह ही नेतृत्व कौशल से परिपूर्ण वयस्क हैऔर हमें इन कौशलों को विकसित करने में उनकी मदद करने की आवश्यकता है। ऐसा हम उन्हें नेतृत्व दलों में शामिल करके कर सकते है ताकि वे योगदान कर सकें, काम करके सीखे सकें और मूल्यवान अनुभव प्राप्त कर सकें।पूरी रचनात्मक ऊर्जा के साथ,रोटरेकटर जोखिम उठाने और एक चुनौती का सामना करने हेतु आगे आए। हम वास्तव में एक प्रभाव लाना चाहते है। लॉजिस्टिक रूप से, हम तत्पर है और हमारे द्वारा किए वादे को पूरा करना सुनिश्चित करते है, उन्होंने आगे कहा। ■

# कोट्टायम का रोटरी डायलिसिस सेंटर गरीबों के लिए एक वरदान

**वी मुत्तुकुमारण**

रोटेरियन के बीच मुस्कुराते चेहरे और आपसी अभिवादन ने कार्यक्रम स्थल पर एक जीवन के आनंद का माहौल बना दिया क्योंकि डीजी डॉ. थॉमस वावनीकुनेल ने कोट्टायम जिले के एक शहर थलायोलापरम्बू के 'मर्सी हॉस्पिटल' में दो मशीनों और एक आरओ प्लांट के साथ रोटरी डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन किया। रो ई मंडल 3211 के अंतर्गत, आर सी कोट्टायम नॉर्थ ने 32 लाख रुपये के वैश्विक अनुदान के माध्यम से अपनी पहली डायलिसिस परियोजना पूरी की।

इस परियोजना को रो ई मंडल 5020 के अंतर्गत, वाशिंगटन, यूएस के आरसी लेकवुड और क्लब सदस्यों के समर्थन से पूरा किया गया था, जिन्होंने उनके हिस्से के रूप में ₹7.5 लाख का योगदान दिया था। हमने भी इस परियोजना के भाग के रूप में 'सेक्रेड हार्ट मेडिकल सेंटर' में दो डायलिसिस मशीनों और चारपाइयों का दान किया था। उनके पास पहले से ही 10 मशीनें हैं और हमारी नई इकाइयां उनकी सुविधाओं को पूरा करेंगी। क्लब के अध्यक्ष जोसेफ केजे ने कहा, हमने हर साल जरूरतमंद मरीजों को 440 डायलिसिस प्रायोजित करने के लिए उनके साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

*बाएं से दाएं : मर्सी हॉस्पिटल में डायलिसिस सेंटर के उद्घाटन के मौके पर एजी वी जे जॉन, क्लब के सचिव के एम स्कारिया, क्लब के अध्यक्ष जोसेफ के जे, डीजी डॉ थॉमस वावानिकुनेल और क्लब के अध्यक्ष-निर्वाचित जोजो एलेग्जेंडर।*

जहाँ 'मर्सी हॉस्पिटल' में डायलिसिस सेंटर की स्थापना पर ₹18 लाख खर्च किए गए, वहीं बाकी बचे (₹13 लाख) एसएच मेडिकल सेंटर में इंस्टालेशन करने में खर्च हुए। मर्सी हॉस्पिटल स्थित सेंटर जरूरतमंद मरीजों के लिए 550 नि:शुल्क डायलिसिस करेंगा। 'सेव किडनी, सेव लाइफ' प्रोजेक्ट के तहत क्लब ने मुथूट एम जॉर्ज फाउंडेशन के साथ मिलकर ₹2.34 लाख की लागत से 20 मरीजों को मुफ्त डायलिसिस की सेवा प्रदान की हैं।

1981 में स्थापित, क्लब ने चार साल पहले अपनी सार्वजनिक छवि को तब उठाया जब इसने एक बड़े पैमाने पर थळपड परियोजनाओं को लागू किया। उन दिनों को याद करते हुए जोसेफ ने कहा, हमने एक सरकारी हाई स्कूल में टॉयलेट ब्लॉक बनाया, स्कूलों में बेहतरीन स्वास्थ्य तरीकों पर कई डेमो का मंचन किया और हैंडवॉश स्टेशनों के एक जोड़े को भी स्थापित किया। यह एक पीआर सफलता थी क्योंकि लोगों ने हमारे इन कामों पर ध्यान दिया था।

मात्र कुल 49 की सदस्यता के साथ, क्लब ने अब तक ₹4 लाख की कुल लागत से इस साल छोटे पैमाने पर आठ सामुदायिक परियोजनाएं की हैं। क्लब ने हार्ट वाल्व रिप्लेसमेंट कराने आए एक जरूरतमंद मरीज को ₹37,500 दिए। उन्होंने कहा, हमारा अनुदान उसके पोस्ट-ऑपरेटिव उपचार और चिकित्सा खर्चों का ख्याल रखेगा।

'कोविड फर्स्ट लाइन ट्रीटमेंट सेंटर' के 'जिला कोरोना सेल' को ₹20,000 मूल्य के दस पल्स ऑक्सीमीटर दान किए गए। हमने दो गरीब छात्रों को ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के लिए टेलीविजन सेट प्रदान किए। क्लब अभी भी, 1988 में कोट्टायम के एक निजी बस टर्मिनस में दोनों लिंगों के लिए स्थापित एक आराम कक्ष के रखरखाव का ख्याल रखता है।■

# रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

## संस्थान दिशानिर्देश

### रोटरी संस्थान (भारत) को योगदान देने के तरीके

भारत के दानकर्ताओं का योगदान TRF की ओर से रोटरी संस्थान (भारत) को प्राप्त होता है।

- चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से योगदान किए जा सकते है और रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय को भेजे जा सकते है।
- क्रेडिट/डेबिट कार्ड या नेट बैंकिंग विकल्प का उपयोग करके रोटरी वेबसाइट www.rotary.org के माध्यम से भी ऑनलाइन योगदान किए जा सकते है।
- RF (I) को दिए गए सभी योगदान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के तहत 50 प्रतिशत कटौती के लिए पात्र है।

### योगदानों के पुनर्वर्गीकरण के लिए टीआरएफ दिशा-निर्देश

- पुनर्वर्गीकरण के लिए वर्तमान वर्ष के अनुरोध तब ही स्वीकार और संसाधित किए जाएंगे यदि वे उपहार प्राप्ति तिथि से 60 कैलेंडर दिनों के भीतर और एक ही रोटरी वर्ष के भीतर प्राप्त होंगे।
- किसी भी रोटरी संस्थान निधि, परियोजना या कार्यक्रम में किसी अन्य निधि, परियोजना या कार्यक्रम के पूर्व वर्ष के योगदानों के पुन: वर्गीकरण सुधार से जुड़े लेनदेन के अनुरोध को उस वित्तीय वर्ष की समाप्ति के बाद स्वीकार या संसाधित नहीं किया जा सकता।

### प्रमुख दानकर्ता सम्मान

- प्रमुख दानकर्ताओं के रूप में व्यक्तियों की पहचान उनके व्यक्तिगत योगदान के आधार पर होती है। किसी अन्य दानकर्ता या दानकर्ताओं या मिलान योगदान द्वारा आंशिक या पूर्ण रूप से किए गए समर्थन के आधार पर किसी व्यक्ति को किसी मंडल, अन्य निकाय या कॉरपोरेट द्वारा प्रमुख दानकर्ता का दर्जा नहीं दिया जा सकता।
- परिवार द्वारा नियंत्रित किसी कंपनी या एक परिवार-न्यास द्वारा किए गए योगदान के मामले में यह आधिकारिक तौर पर लिखित रूप से प्रदान किया जा सकता है कि न्यास के मालिक या न्यासी को वास्तविक श्रेय दिया जाए।
- केवल एक जीवनसाथी द्वारा दिए जा रहे योगदान को ही एक व्यक्ति के प्रमुख दानकर्ता मान्यता से जोड़ा जा सकता है। पूर्वज या वंशज (दादा-दादी/माता-पिता/भाई-बहन/बच्चों आदि) के योगदानों को प्रमुख दानकर्ता की मान्यता के लिए नहीं जोड़ा जा सकता है। ■

---

**कन्वेंशन 2021**

# मुख्य सम्मेलन से पहले का पूर्व-सम्मेलन

रोटरी अंतरराष्ट्रीय संमेलन में उपस्थित होनेवाले अनुभवी लोगों को पता है कि जल्दी पहुंचना कितना महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि संमेलन शुरू होने से पहले भी, करने के लिए बहुत कुछ होता है। संमेलन से पहले के पूर्व-संमेलन बहुत सारि महत्वपूर्ण जानकारि और साथ ही अन्य रोटरी सदस्यों के साथ जुड़ने के अवसर भी प्रदान करते हैं। एक आभासी आयोजन में परिवर्तित 2021 के इस संमेलन के साथ, यात्रा करना अब एक कारक विषय नहीं हैं, और यह पूर्व-संमेलन समारोह सभी के लिए खुले हैं। मुख्य आयोजन से पहले होनेवाली हर चीज में भाग लेने के लिए यह एक शानदार वर्ष है।

**रोटरेक्टर पूर्व-संमेलन:** यह आयोजन रोटरेक्ट की अपनी समझ को बढ़ाने, अन्य प्रतिभागियों के साथ सुझावों और विचारों को सीखने और साझा करने तथा दुनिया भर के रोटरैक्टर और रोटेरियन के साथ वास्तव में नेटवर्क बनाने का एक मौका प्रदान करता है।

**रोटरी युवा विनिमय अधिकारि पूर्व-संमेलन:** यह आभासी आयोजन आपको रोटरी के सदस्यों और रोटरी यूथ एक्सचेंज में शामिल स्वयंसेवकों के साथ नेटवर्क का अवसर प्रदान करेगी। आपको महत्वपूर्ण ज्ञान भी प्राप्त होगा जो आपको अपने स्थानीय कार्यक्रम को बेहतर बनाने या एक शुरू करने में मदद करेगा।

**अंतरदेशीय समितियों का पूर्व-संमेलन:** यह आयोजन, जिसे शांति के लिए शुरुआती अवसर कहा जाता है, प्रेरणादायक वक्ताओं, व्यावहारिक ब्रेकआउट सत्र, और नेटवर्किंग की सुविधा मुहैया कराने के लिए एक अंतरदेशीय समिति के रिश्ते का विस्तार करने में मदद करने के लिए दुनिया भर में सद्भावना और शांति को बढ़ावा देगा।

'**कन्वेंशन 2021**' 12 से 16 जून को आयोजित किया जाएगा और सभी पूर्व-संमेलन आयोजन 10 से 11 जून को होंगे।

**convention.rotary.org पर आभासी सम्मेलन और पूव सम्मेलन के बारे में जानकारी पाएँ।**

# गुदुर में सामुदायिक सेवा के 58 वर्ष

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3160 के रोटरी क्लब गुदूर ने हाल ही में नेल्लोर जिले के गुदुर शहर में सड़क विक्रेताओं को बड़े छाते बांटे, ताकि उन्हें कठोर धूप या हल्की बारिश से बचाया जा सके। क्लब के सचिव श्रीधर रेड्डी बंडी का कहना है कि बाजार क्षेत्र में चमकीले रंग के छाते रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाएंगे।

क्लब, जिसकी स्थापना 1963 में हुई, का दावा है कि उसने गुदुर में दो श्मशान, एक घड़ी टॉवर और एक रोटरी हॉल का निर्माण किया है।

हमने 1965 में क्लब के सदस्य सनपारेड्डी कृष्णा रेड्डी के उदार योगदान की बदौलत शहर में पहला कॉलेज स्थापित किया। वे याद

करते हैं, आज इसमें 1,000 छात्र हैं। 1981 में क्लब द्वारा निर्मित द्रुरु रामनाम्मा महिला कॉलेज 2,000 युवतियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। वे आगे कहते हैं, दोनों कॉलेजों को अब सरकार को सौंप दिया गया है। ऑलुरु अडिसेशा रेड्डी ने वृद्ध निराशाजनक लोगों की सहायता मासिक किराने के सामान के ज़रिये करने के लिए 2005 में लॉन्च किया गया रोटरी हेल्पेज प्रोजेक्ट अभी भी सक्रिय है।

बाढ़ ग्रस्त इलाके पुरितीपालम स्थित रोटरी नगर में पीडीजी डी भास्कर रेड्डी द्वारा शुरू किए गए मिलान अनुदान सहायता के साथ 30 कंक्रीट के मकान बनाए गए हैं। ■

# हनुमानगढ़ में एक रक्तदान शिविर

रोई मंडल 3090 के रोटरी क्लब हनुमानगढ़ सेंट्रल ने आरएसी हनुमानगढ़ से हाथ मिलाकर रोटरी भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर में कस्बे के 'लाइफ लाइन ब्लड बैंक' के चिकित्सकों व चिकित्सा कर्मचारियों ने मिलकर शिविर में कुल 83 यूनिट रक्त एकत्रित किया।

मुख्य अतिथि ब्लॉक मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (CMHO) डॉ ज्योति ढींगरा और समाजसेवी प्रो. सुमन चावला ने क्रिटिकल मरीजों की आपात जरूरत से भरे ब्लड कैंप के आयोजन के लिए रोटरी की सराहना की। 86 बार रक्तदान के लिए गिनीज रिकॉर्ड रखने वाले अमर नायक इस शिविर में रक्तदाताओं में से एक थे। क्लब अध्यक्ष कपूरी लाल गर्ग व सचिव हेमंत गोयल मौजूद रहे। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# कोयम्बटूर में एक खाली प्लॉट को किचन गार्डन में तब्दील किया गया

**वी मुत्तुकुमारण**

भू-स्वामी की सहमति से, रोटरी क्लब कोयम्बटूर मिडटाउन, रो ई मंडल 3201, द्वारा वाडावल्ली स्थित पांच-सेन्ट खाली भूमि को एक सब्जियों के बगीचे में परिवर्तित कर दिया गया है। क्लब की संचार सेवाओं के सदस्य एस बद्रीनाथ कहते है, फसल के बाद की ताज़ा उपज को उचित मूल्य पर स्थानीय निवासियों को बेच जाएगा।

किचन गार्डन परियोजना जैविक खेती के माध्यम से उगाई गई सब्जियों की आपूर्ति करेगी, रोजगार के अवसर प्रदान करेगी और कोयम्बटूर में खाली भूखंडों में हरियाली की अवधारणा को प्रोत्साहित करेगी। थोड़े समय में ही, यह परियोजना लोकप्रिय बन गई है और बहुत से क्लब इसे देखने के लिए आ रहे है, वह कहते है।

क्लब के अध्यक्ष एस पालनिअप्पन, सचिव हरि भास्कर और अन्य सदस्य इस परियोजना में शामिल थे, जिसे पिछले साल दिसंबर में कानूनी औपचारिकताओं की पूर्ति के बाद शुरू किया गया था। शुरुआत में, क्लब को जंगली गाजर घास खरपतवारों एवं कचरे के ढेरों को साफ करके संतोष करना पड़ा जिसने एक बड़ी चुनौती पेश की थी। वेल्लोर के ठोस और तरल संसाधन प्रबंधन के विशेषज्ञ सी श्रीनिवासन ने परियोजना के कार्यान्वयन में रोटेरियनों का मार्गदर्शन किया। पहले, उन्होंने इस भूखंड पर 100 किस्म की सब्जी एवं भाजी लगाने में मदद की।

अन्य विशेषज्ञों से मिली जानकारी के आधार पर, हमने बैंगन और टमाटर जैसी अन्य सब्जियां भी लगाई। स्थानीय लोगों ने जैविक खाद और पानी जैसे सहयोग की पेशकश की जिससे यह एक सामुदायिक प्रयास बन गया, रोटेरियन जितेंद्र खोना की पत्नी हेमा समझती है। उन्होंने छह महीने पहले किचन गार्डन की शुरुआत की थी और बाद में क्लब अध्यक्ष की पत्नी प्रिया पालनिअप्पन ने बाकी रोटेरियन के साथ इसे अपनाया।

बड़े स्तर पर, इस तरह के सब्जियों के बाग पर 1.5 लाख का खर्च आएगा, लेकिन यह बहुत कम हो सकता है यदि हमारे पास बिना मलबे या कूड़े वाली जमीन हो, हेमा कहती है। पौधों को पानी देने के लिए क्लब जल्द ही परियोजना स्थल पर एक ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित करने की योजना बना रहा है।

गर्मी के बाद, क्लब वाडावल्ली में अन्य खाली भूखंडों में किचन गार्डन परियोजना को दोहराएगा और इस तरह की जैविक खेती से होने वाली आय को समुदाय के लाभ के लिए वापस से इसमे लगाया जाएगा, वह आगे कहती है।

हमें खुशी है कि भूमि को तब तक लाभकारी उपयोग में लाया जाता है जब तक कि उसके मालिक वहाँ पर इमारत का निर्माण नहीं करते। वरना, ऐसे खाली भूखंड असामाजिक तत्वों का आश्रय या जहरीले जीवों के प्रजनन स्थल बन जाते है, बद्रीनाथ कहते है। ■

Go Green

# घर पर 'काला सोना' बनाएं

प्रीति मेहरा

कोई फर्क नहीं पड़ता, भले ही आप बहुमंजिला इमारत की सातवीं मंजिल पर रहें या ग्राउंड फ्लोर पर बने घर में जिसमें बगीचा भी है। बागबानी में रूचि रखने वाला और प्रकृति से प्रेम करने वाला व्यक्ति हरियाली पैदा करने के लिए जगह ढूंढ ही निकालेगा जो मौसमी फूल, जड़ी-बूटियाँ और यहाँ तक कि सब्जियां भी उगा लेते हैं। और यदि आप अपने पौधों के लिए हानिकारक उर्वरकों के बजाय पोषक तत्वों से भरपूर रसोई घर के कचरे से उत्पन्न खाद का प्रयोग करना चाहते हैं तो यह मुश्किल नहीं है। अपनी बालकनी, टैरेस गार्डन, आउटडोर लॉन, या सब्ज़ियों की क्यारी, गमलों में रखे पौधों के लिए बढ़िया ह्यूमस (खाद) उत्पन्न करने के लिए सिर्फ थोड़ा सा प्रयास करना है।

जब गीला कचरा यानी कि रसोई में बचा हुआ खाना और पेड़ पौधों के पत्ते आदि जैविक तरीके से डीकम्पोज (अपघटित) होते हैं, तब खाद बनती है। इसे बनाने के लिए अपने किचन में ऋगीले कचरे के लिए एक अलग डिब्बा या बाल्टी रखें और घर में सभी सदस्यों से सब्जी के छिलके, चाय की पत्ती, ग्राउंड कॉफ़ी और बचा हुआ भोजन इसमें डालने के लिए कहें। फिर कचरे को नियमित रूप से एकत्र कर खाद के डिब्बे में खाली करें जिसे आप बालकनी, छत या बगीचे के एक कोने में रख सकते हैं।

इस सरल तरीके से आप अपने घर के कचरे का लगभग 30 प्रतिशत खाद में परिवर्तित कर सकेंगे और केवल 70 प्रतिशत ही कचरा भराव क्षेत्र में जाएगा। यह सर्वविदित है कि कार्बनिक पदार्थ को कचरा भराव क्षेत्र में डाल देते हैं और शीघ्र विघटित होने के लिए वहां इसे पर्याप्त हवा नहीं मिलती, इसलिए अपशिष्ट के सड़ने से हानिकारक मीथेन गैस पैदा होती है। इस से ग्लोबल वार्मिंग (भूमण्डलीय तापक्रम) में वृद्धि होती है और ये जलवायु परिवर्तन के लिए ज़िम्मेदार है।

इसके विपरीत, जब आप खाद बनाते हैं, तो कचरे के अपघटन की प्रक्रिया में सूक्ष्म जीव सहायता

करते हैं। वे कार्बनिक पदार्थों को भी टुकड़ों में विभाजित करते हैं, पौधों का पोषण करते हैं और उन्हें बीमारियों से दूर रखते हैं। खाद बना कर आप न केवल पर्यावरण का सरक्षण कर रहे हैं, बल्कि ये 'काला सोना, जो इस तरह से बनी खाद मिटटी को कहा जाता है, आपके पौधों की शाखाओं में पोषक तत्वों भेजता है और मिट्टी की नमी बनाए रखता है, और आपको अपने पौधों के लिए संभवतः सर्वश्रेष्ठ उपजाऊ खाद मिलती है।

लेकिन बढ़िया खाद के लिए मिश्रण का उचित अनुपात क्या है ? कम्पोस्टिंग के लिए नाइट्रोजन (हरा) और कार्बन (भूरा) से भरपूर सामग्री की आवश्यकता होती है और दोनों का संतुलित मिश्रण ही सर्वोत्तम खाद बनाता है। नाइट्रोजन आधारित पदार्थ में झूठा भोजन, पत्तेदार सब्जियां, और बगीचे में छंटाई के बाद बची हुई घास शामिल है एंजाइम बनाने के लिए ये पदार्थ कच्चा माल प्रदान करते हैं और सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाने में सहायक होते हैं। कम्पोस्ट का निर्माण कार्बन-युक्त सामग्री से प्राप्त होती है, जैसे सूखे पत्ते, अंडे के छिलके, ग्राउंड कॉफ़ी, चाय की पत्ती, धूल, भूरे रंग के पेपर बैग या लकड़ी से बने कटलरी, आइसक्रीम स्टिक आदि। वे सूक्ष्मजीवों को भोजन प्रदान करते हैं। मिश्रण में एक तिहाई हरा और दो तिहाई भूरे रंग का उपयोग करना सबसे उपयुक्त है।

ये सब तो ठीक है,लेकिन खाद बनाई कैसे जाए? इसका सबसे आसान तरीका है कुछ खाद बनाने के डिब्बे खरीदें। खाद के संतुलित प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए इन्हें भीतर से घुमाया जा सकता है। ये डिब्बे घर पर बनाने की अपेक्षा बाज़ार से खरीदना अधिक सुविधाजनक है। अमेज़न के पास करीब 15 विकल्प हैं, और कुछ कंपोस्ट निर्माता

---

इस सरल तरीके से आप अपने घर के कचरे का लगभग 30 प्रतिशत खाद में परिवर्तित कर सकेंगे।

---

मिश्रण और गुड़ भी देते हैं ताकि डीकंपोज़िंग शीघ्रता से हो सके। इनकी कीमत 1,000-3,000 रुपये है।

प्रत्येक विकल्प के बारे में पढ़ कर खरीदना ही उचित है, अपनी रसोई में उत्पन्न होने वाले कचरे को देखें, अपने बजट को देखें और फिर जो आपको सबसे उपयुक्त लगता है, उसका ऑर्डर करें। खाद के डिब्बे विस्तृत निर्देश के साथ आते हैं कि उन्हें कैसे लगाया जाए, किस समय क्या डालना चाहिए और उपयोग के लिए खाद कब तैयार होगी। आमतौर पर कचरे को खाद में परिवर्तित होने में चार से छह सप्ताह का समय लगता है।

खाद बनाने के कई तरीके हैं, उनमें से कुछ यहां दिए हैं:

- खाद के डिब्बे में सामग्री को छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर डालना चाहिए इससे सड़ने की प्रक्रिया जल्दी होती है ।
- खाद में कीटनाशक उपचारित सामग्री नहीं डालें।
- कचरे की पर्याप्त मात्रा एकत्रित करें ताकि खाद का डिब्बा ऊपर तक पूरा भर जाए। इससे अंदर का तापमान बढ़ता है और अपघटन की प्रक्रिया को गति देता है।
- कीटाणुओं को सक्रिय करने के लिए कुछ देर के लिए डिब्बे को धूप में रखें।
- मिश्रण को हिलाएं और कभी-कभी इसे हवा लगने दें और जिससे खाद निर्माण की प्रक्रिया तेज होगी। कुछ खाद के डिब्बे ये कार्य स्वचालित रूप से भी करते हैं।

सूक्ष्म कीटाणुओं के सक्रीय होने के साथ आपकी 'काले सोने' की फसल तैयार हो रही है। लेकिन पता कैसे चले कि खाद कब तैयार होगी? विशेषज्ञों का कहना है कि खाद में अपना हाथ डाले, यदि यह अंदर से गर्म है, तो खाद तैयार है। कुछ लोगों ने कंपोस्ट थर्मामीटर उपयोग करने का सुझाव भी दिया है। तैयार खाद के ढेर के भीतर का तापमान 140 से 160°F के बीच रहता है या 170°F तक भी पहुँच सकता है।

खाद को भी पकने के लिए उचित मात्रा में हवा और नमी (40-60 प्रतिशत) की आवश्यकता होती है। एक सूखे डिब्बे में ताजा गीला कचरा डाल कर नमी को बढ़ा सकते हैं, इसके विपरीत सूखा कचरा अतिरिक्त नमी को कम कर सकता है। लेकिन ये बारीकियां आम तौर पर अनुभव के बाद ही आती हैं।

अक्सर, बड़े आवासीय परिसरों में खाद का उत्पादन बड़े डिब्बे या गड्ढों में सामूहिक रूप से करते हैं। इस तरतीब से ये सुविधाजनक रहता है। लेकिन जो लोग घर पर खाद बनाना चाहते हैं, उनके लिए तैयार खाद स्वयं ही प्रमाण है, सब्र का फल मीठा होता है। छूने में, दिखने में और इसकी गंध काली उपजाऊ मिट्टी की तरह लगती है, जो सही मायने में 'काला सोना' कहलाने योग्य है।

*लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।*

# Membership Summary

(As on April 1, 2021)

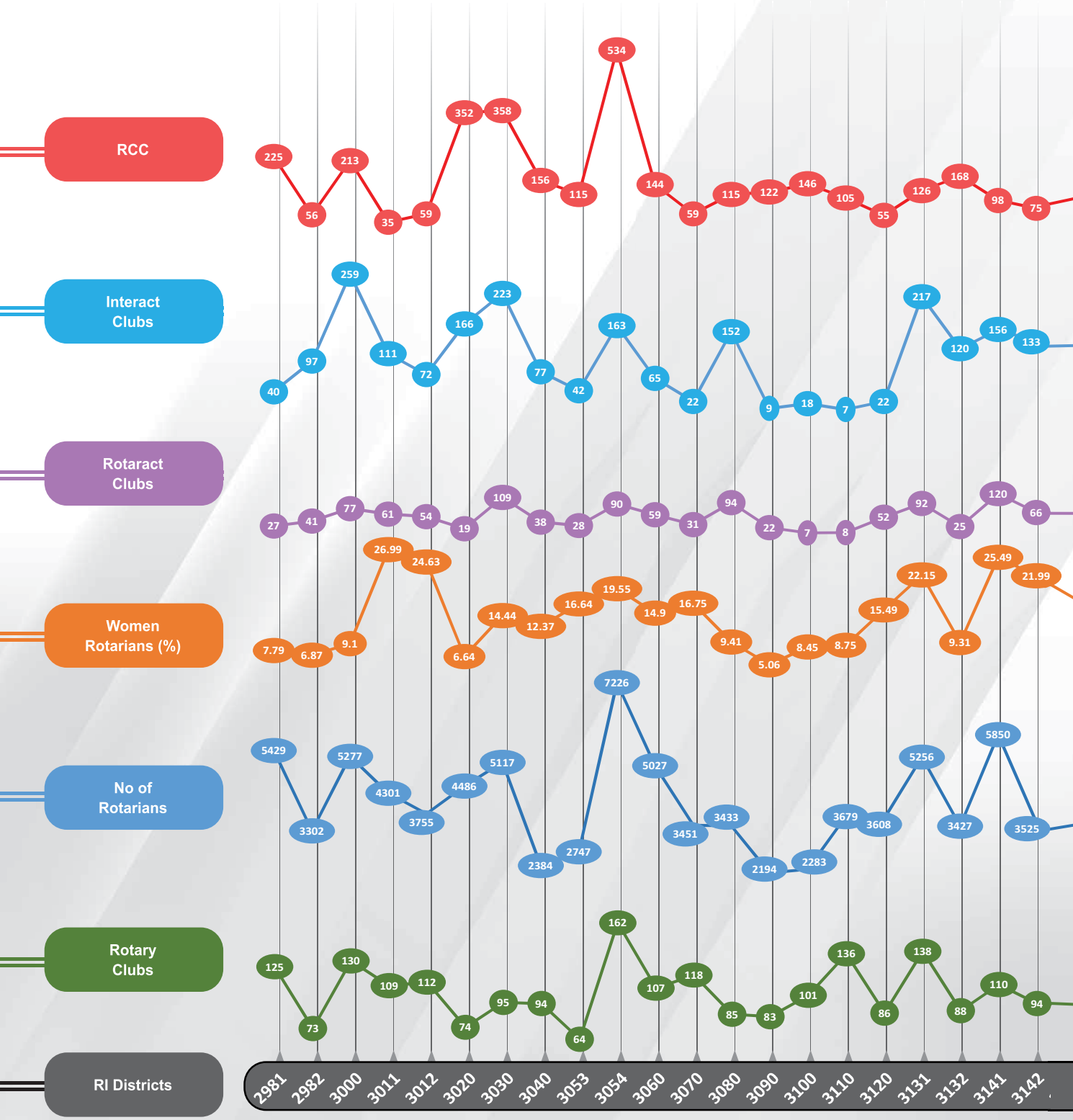

## Rotary at a glance

| | | | |
|---|---|---|---|
| Rotary clubs | : 36,680 | Rotary members | : 1,193,804 |
| *Rotaract clubs | : 9,892 | *Rotaract members | : 222,711 |
| Interact clubs | : 15,880 | Interact members | : 365,240 |
| RCCs | : 11,610 | *As on 16 April 2021* | |

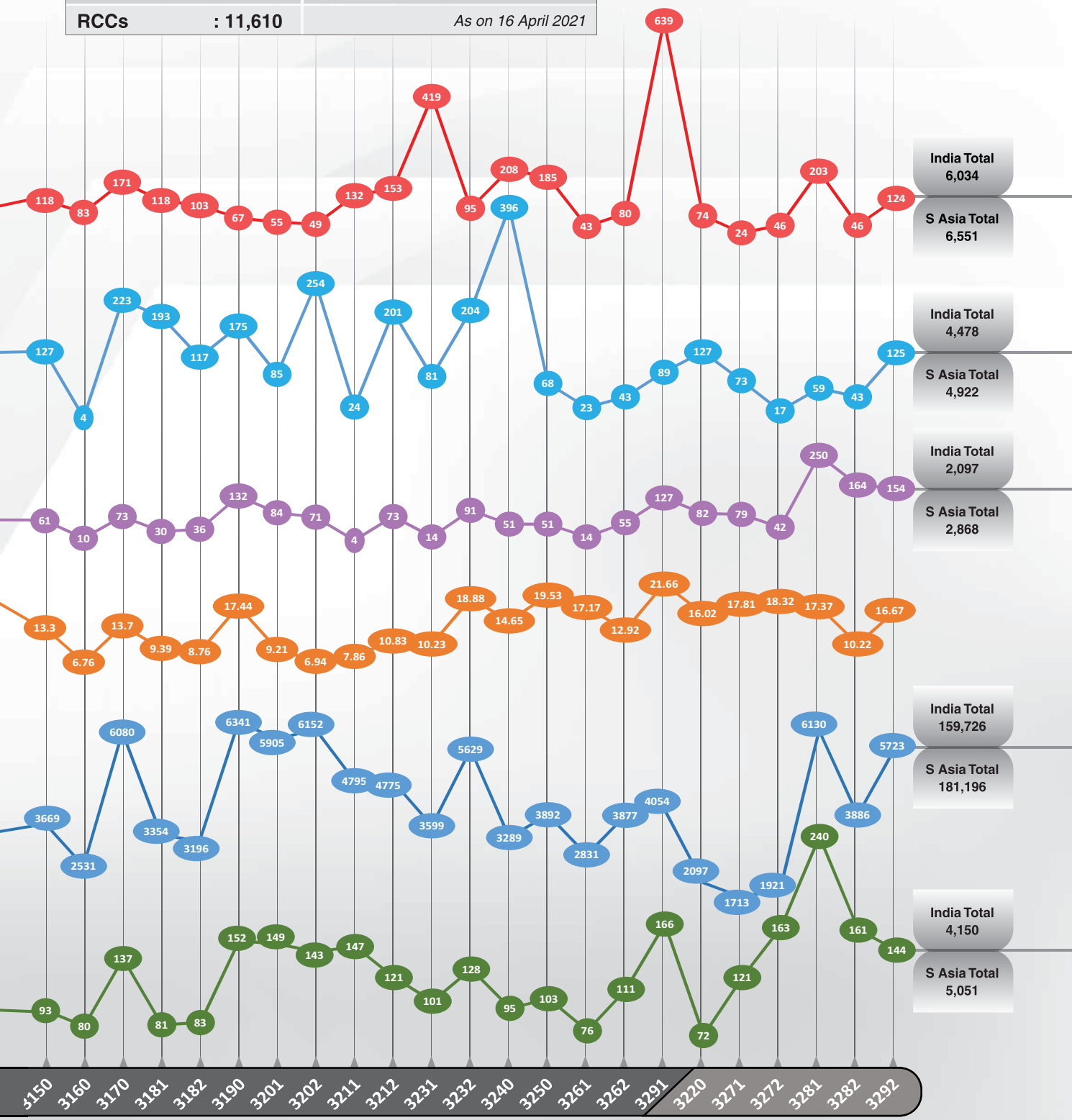


*Source: RI South Asia Office*

संगीत और माधुर्य

# गीता दत्त

# गीतों की बैलेरीना

एस आर मधु

बस उनके नाम का ज़िक्र करें और संगीत प्रेमियों की आँखें नम हो जाएंगी। गीता दत्त एक उत्कृष्ट, अलौकिक आवाज की धनी थीं, और 1940 और 1950 के दशक के अंत में बॉलीवुड को संगीत के कुछ बेहद खूबसूरत नगीने दिए हैं। उनका जीवन और कैरियर छोटा लेकिन शानदार रहा, जिसका दुखद अंत 1972 में हो गया उस वक़्त वो सिर्फ वह केवल 41 वर्ष की थीं।

उनकी आवाज किसी परिचय की मोहताज नहीं है और उससे प्रेम और आराधना की प्रेरणा मिलती है, दिल चीर देने वाली अपनी आवाज की लरजती उदासी से अपने गीतों में वो भावनाओं को पिरो देती थीं। उनकी आवाज खुशी या चंचलता को एक संक्रमण की तरह फैला देती थी। ओ पी नय्यर ने उनकी आवाज़ को एक 'प्रकर्ति का चमत्कार' बताया था। उन्हें एक स्काईलार्क (चातक पक्षी), गीतों की बैलेरीना (नर्तकी) के रूप में संदर्भित किया गया था।

संगीत के इतिहासकार गणेश अनंतरामन कहते हैं कि भावनाओं की अभिव्यक्ति गीता दत्त से बेहतर कोई भी पार्श्वगायक नहीं कर सकता। मन्ना डे ने कहा था कि लता मंगेशकर और आशा भोसले की नक़ल करने

वाले बहुत मिल जायेंगे लेकिन गीता दत्त की नकल हर कोई नहीं कर सकता। फिल्म संगीत समीक्षक राजू भारतन ने कहा था कि गीता गाना नहीं गाती, वह गाने में बह जाती थी।

गीता ने लगभग 1,200 गीत गाए हैं जो ज्यादातर हिंदी में हैं, लेकिन बंगाली और गुजराती में भी गाये हैं - जिनमें कम से कम 50 उत्कृष्ट कोटि के थे। 1947 से दो साल तक वह नंबर 1 गायिका रही, फिल्म *दो भाई* के गीत *मेरा सुंदर सपना बीत गया* के बाद तो वो एक सनसनी बन गई। खोये हुए प्यार की टीस को पहले कभी इतने अद्भुत अंदाज़ में, इतने जादुई तरीके से कभी व्यक्त नहीं किया गया था - जिसे 16 वर्षीय गीता ने एसडी बर्मन के लिए मादक और मिठास भरी आवाज़ आवाज में गाया था। जिसने सारे भारत को वशीभूत कर लिया था। गाने की डिस्क ने बिक्री के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। ये गीत आज भी मोहित करता है।

1949 में *महल, बरसात और अंदाज़* की शानदार सफलता के बाद लता मंगेशकर ने गीता दत्त को नं 1 की पायदान से नीचे धकेल दिया। लेकिन कहा जाता है

*बाएं से: लता मंगेशकर, गीता दत्त और मीना कपूर।*

कि 1950 तक अगर लता को किसी से भय था तो गीता दत्त से था।

## शुरुआत

गीता रॉय चौधरी का जन्म 23 नवंबर 1930 को फरीदपुर शहर (अब बांग्लादेश में) हुआ था। उनके पिता एक रईस ज़मींदार थे। 1942 में भारत छोडो आंदोलन एक जमींदार-विरोधी आंदोलन बन गया था और उनका पूरा परिवार फरीदपुर से मुंबई आ गया तब वे सिर्फ 12 वर्ष की थी। कभी समृद्ध शाली रहे परिवार को घोर तंगी से गुजरना पड़ा था।

उनका परिवार दादर के एक मामूली फ्लैट में रहता था। गीता को गाने और गुनगुनाने का शौक था। संगीतकार हनुमान प्रसाद ने उन्हें एक बार सुना और उस आवाज पर मोहित हो गए। उन्होंने गीता को फिल्म *भक्त प्रहलाद* (1946) में एक कोरस गीत में कुछ पंक्तियाँ गाने का मौक़ा दिया था। गाने से गीता एस डी बर्मन की नज़र में आ गयी, फिर क्या था उनकी प्रतिभा एस डी के निर्देशन में खिल उठी। 1947 में उन्होंने फिल्म *दो भाई* में छह गाने गाए। कामिनी कौशल पर फिल्माए गए *मेरा सुंदर सपना* ने फिल्म को अमर बना दिया और ये गायिका रातों रात लोकप्रिय हो गई।

1950 में गीता ने दिलीप कुमार-नरगिस अभिनीत फिल्म *जोगन* में, मीरा के अद्भुत भजन के साथ फिर से अपनी धाक जमा दी, जिसमें उन्होंने 12 गाने गाए थे । नरगिस की निर्मल सुंदरता, धार्मिकता से परिपूर्ण गीतों की धुन और गीता दत्त की आवाज़ की गहराई ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। *घूँघट के पट खोल* ने तो एक प्रतिष्ठित दर्जा हासिल कर लिया था, लेकिन *मत जा मत जा जोगी, मैं तो गिरधर के घर जाऊं और ऐ री मैं तो प्रेम दीवानी* भक्तिपूर्ण गीतों ने भी छाप छोड़ी थी।

फिर तो संगीतकारों की लाइन लग गयी और उन्होंने कई संगीतकारों के लिए अपनी आवाज़ दी थी। (संगीतकार रोशन के लिए 1950 में बावरे नैन में मुकेश के साथ गाये युगल, *ख़यालों में किसी के*, बेहद खूबसूरत गीत है।)

लेकिन वो भजन और दर्द भरे नग्मों की आवाज के रूप में स्थापित हो गई। हालांकि, 1951 में गुरु दत्त द्वारा निर्देशित फिल्म *बाज़ी* के माध्यम से एस डी बर्मन ने उनकी छवि बदलने की कोशिश की थी, जहाँ उन्होंने शोख,

कहा जाता है कि 1950 तक
अगर लता को किसी से भय
था तो गीता दत्त से था।

भड़कीला और शरारत भरा उत्तेजक गीत *तदबीर से बिगडी हुई तकदीर बना दे* गाया था । यह गीत देव आनंद को चिढ़ाते हुए गीता बाली पर फिल्माया गया था। दोनों गीताओं का प्रदर्शन उत्कृष्ट था। देव आनंद का कहना था कि कई प्रशंसकों ने सिर्फ इस गाने के लिए फिल्म देखी थी और गाना खत्म होने के बाद सिनेमा हॉल छोड़ कर चले गए थे !

यह गाना एक और वजह से खास था। गीत की रिकॉर्डिंग के दौरान उनकी मुलाकात महत्वाकांक्षी निर्देशक गुरु दत्त से हुई थी और वे सांवली, बड़ी बड़ी आंखों और लंबे बालों की सुंदरता के आगे रीझ गए। गुरु का परिवार भी उनकी विनम्रता और स्वभाव से प्रभावित था। वह अक्सर उनके घर जाने लगीं, हारमोनियम बजाती थीं और गाती थीं। इधर गीता का परिवार इस रोमांस को ले कर ज़्यादा उत्साहित नहीं था, इसका एक कारण यह था कि परिवार की जिम्मेदारी गीता पर थी। आखिरकार, 1953 में बंगाली रीति से गीता और गुरु की शादी भव्यता के साथ हुई और लाल बनारसी साड़ी में सजी-धजी दुल्हन ने सभी का मन मोह लिया। शादी में बॉलीवुड संगीत की सितारा हस्तियों ने शिरकत की थी : लता, रफ़ी, किशोर, हेमंत कुमार, तलत महमूद। और उन सभी ने वहां गाया था!

## ओ पी नैयर सम्बन्ध

यदि एसडी बर्मन ने गीता को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचाया तो ओपी नैय्यर ने ये सिद्ध कर दिया कि वो उसी शिखर के लिए बनी थीं। उन्होंने नैयर की पहली फिल्म *आस्मान* (1952) में चार गाने गाए थे, जिसमें शानदार *देखो जादू भरे मोरे नैन और दिल है दीवाना* शामिल थे। फिल्म फ्लॉप हो गई, लेकिन इन गीतों को काफी शोहरत मिली। जब ओ पी एक नवोदित संगीतकार थे तो *बाज* फिल्म के लिए ओ पी को संगीत देने का मौका गुरु दत्त ने गीता दत्त के कहने पर ही दिया था । एक बार फिर, गीता के प्रदर्शन ने ऊंचाइयां हासिल की लेकिन फिल्म फ्लॉप हो गई। लेकिन नैय्यर के संगीत में पिरोये हुए तीन ब्लॉकबस्टर गीत के साथ गुरु दत्त ज़बरदस्त हिट हुए। नैय्यर की विशिष्टता थीं दमदार, ज़िंदादिल, नाज़ुक और साफगोई से आशा का संचार करने वाली धुनें और अपनी आवाज दे कर गीता ने उन धुनों में जान डाल दी।

* फिल्म आर पार (1954) में उन्होंने में *बाबूजी धीरे चलना* के साथ सनसनी मचा दी थीं ये अरब सुंदरी शकीला पर फिल्माया गया था - जो बॉलीवुड इतिहास का सबसे लोकप्रिय नाइट क्लब गीत है। समान रूप से प्रचलित रहे थे ये लो *मैं हारी पिया, हूँ मैं अभी जवान और जा जा जा ओ बेवफा* रहे थे।
* *मिस्टर एंड मिसेज 55* (मधुबाला और गुरुदत्त अभिनीत) का हर गीत खूबसूरत

शादी में बॉलीवुड संगीत की सितारा हस्तियों ने शिरकत की थी : लता, रफ़ी, किशोर, हेमंत कुमार, तलत महमूद। और उन सभी ने वहां गाया था!

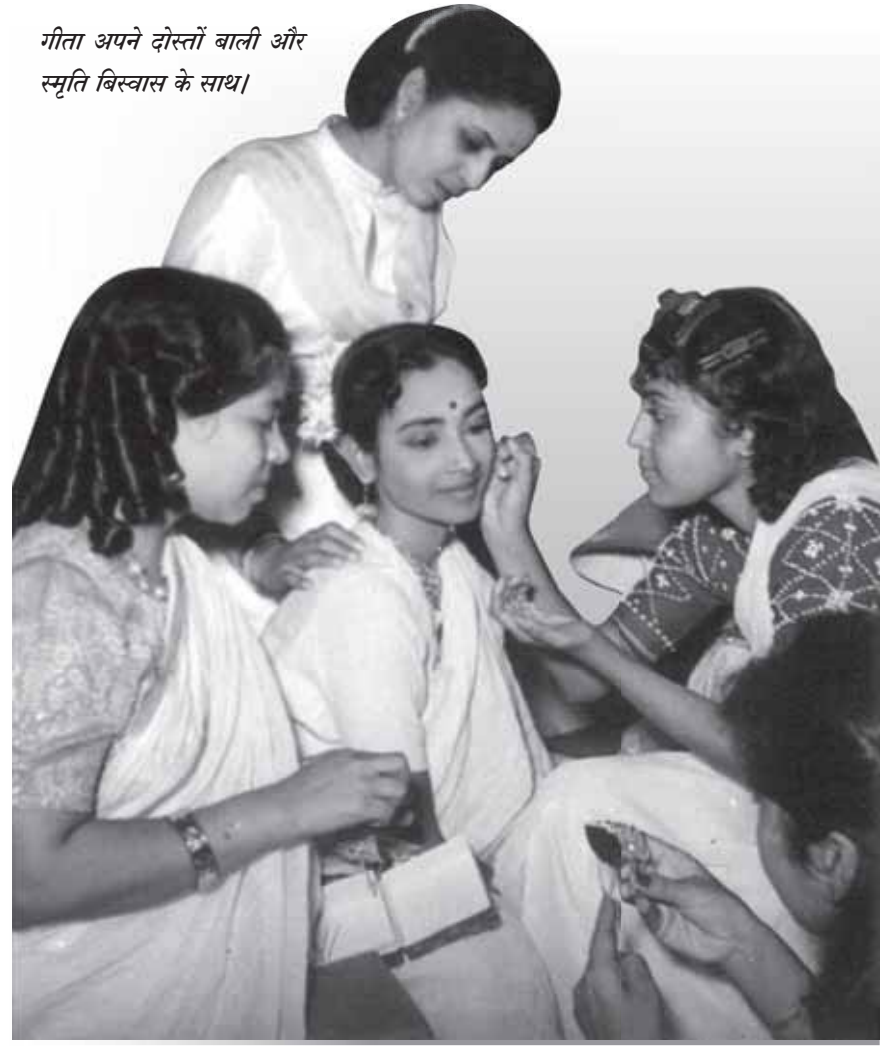

*गीता अपने दोस्तों बाली और स्मृति बिस्वास के साथ।*

*गीता अपनी शादी में लता मंगेशकर और स्मृति बिस्वास के साथ।*

था । गीता के नेतृत्व में एक भव्य समूह गीत था - *ठंडी हवा काली घटा आ ही गयी झूम के*। (राजू भारतन ने टिप्पणी की थीं कि गीता खुद *ठंडी हवा* थी और *काली घटा* में झूम रही थी)। गीता-रफ़ी के दो युगल प्रेम गीत की प्रस्तुति, और प्रेमी से मिलने की तड़प में गाया गया ये सुंदर गीत *प्रियतम आन मिलो* ।

* CID में, नैय्यर ने बॉलीवुड को गीता-रफ़ी का एक गुदगुदाता युगल गीत दिया था *ये है बॉम्बे मेरी जान* (जो बेहद पसंद किया गया था और विश्वविद्यालय के परिसरों में इसकी जम कर नक़ल हुई थी); उसी जोड़ी का (*आँखों ही आँखों में ईशारा हो गया*), और उत्साह से भरी गीता का रोमांटिक हिट *जाता कहाँ है दीवाने* । नैय्यर के निर्देशन में, मधुर कंठ की ये गायिका शोख अल्हडता का पर्याय बन चुकी थी!

गीता ने गुरु दत्त के बैनर के अलावा भी कुछ गानों में भी अपनी आवाज़ का जादू बिखेरा था। जैसे: हेमंत कुमार के लिए 1954 में *शर्त* फिल्म का *ना ये चाँद होगा ना तारे रहेंगे*, और 1956 में *भाई भाई* का गीत ऐ दिल मुझ बता दे, जिसमें उन्होंने किशोर उम्र में उदात्त प्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया था, मदन मोहन के लिए। अद्वितीय गायिका लता ने भाई भाई में आठ गाने गाए थे और गीता ने सिर्फ एक - लेकिन गीता का गीत सबसे ज़्यादा हिट हुआ था !

गुरु दत्त ने समाज द्वारा एक कवि के शोषण पर बनाई फिल्म *प्यासा* 1957 में रिलीज़ की थी। यह एक ऐतिहासिक फिल्म थी जिसमें एस डी बर्मन का शानदार संगीत था। गीता दत्त के भजन *आज सजन मोहे अंग लगा लो*, जो काम वासना और भक्ति दोनों को परिलक्षित करता है - जिसे गीता की संगीत प्रतिभा ने अद्भुत अंदाज़ में निभाया था। निचले सप्तक से शुरू हुआ गीत आश्चर्यजनक रूप से ऊंचाइयों को छूता चला गया । उन्होंने वहीदा पर फिल्माया गया चुहल भरा गीत *जाने क्या तूने* कही की धुन, और रफ़ी के साथ एक चुलबुला रोमांटिक युगल गीत गाया था - *हम आपकी आँखों में।* एक ही फिल्म के जरिए गीता ने बहुआयामी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था।

1953 में जब गीता ने गुरु दत्त से शादी की थी, तब तक वो फिल्मों में स्थापित हो चुकी थीं, जबकि गुरु एक संघर्षरत निर्देशक थे। कहते हैं उन्होंने गीता से पैसे के लिए शादी की थी; उन्होंने गीता से कहा था कि वो अन्य बैनरों के लिए गाना बंद कर दें, ना गाएं । वह स्तब्ध रह गई थी, यह उन्हें ऑक्सीजन से वंचित करने जैसा था। वह छिप कर अन्य संगीतकारों के लिए गाने लगी और जब गुरु को यह पता चला, तो वह आग बबूला हो गए । तीन बच्चे होने के बावजूद उनके विवाह पर काले बादल मंडराने लगे।

वहीदा रहमान ने फिल्म *सीआईडी* के साथ 1956 में गुरुदत्त की ज़िंदगी में प्रवेश किया, और वहीदा के लिए गुरुदत्त के प्रेम प्रसंग गीता

*लता मंगेशकर और राज कपूर के साथ गीता।*

*गीता और गुरुदत्त अपनी शादी के दिन।*

के लिए काफी तकलीफदेह थे। पति के लिए उन्होंने अपने करियर का लगभग समर्पण कर दिया था और वह किसी अन्य महिला के लिए अपने पति को खोते नहीं देख सकती थी। अपना दुःख भुलाने के लिए गीता ने खुद को शराब में डुबो दिया।

गीता को खुश करने के लिए गुरु ने गीता को एक फिल्म में हीरोइन बनाने की पेशकश की। वह खुश हो गई, लेकिन कथित तौर पर वहीदा रहमान को लेकर हुए काफी विवाद और झगड़े के बाद गीता को निकाल दिया।

1957 में, सचिन देव बर्मन से एक बार लता का मनमुटाव हो गया था और दोनों के बीच दरार पैदा हो गई थी। अपने सभी गीतों में उनकी जगह वह गीता दत्त को लेना चाहते थे, लेकिन वह हर दिन शाम 5 बजे तक, गुरु के स्टूडियो से वापस आने से पहले घर लौटना चाहती थीं। यह सचिन जैसे एक कठिन टास्क मास्टर को नामंज़ूर था और उन्होंने आशा भोसले को चुन लिया। तो ओपी नैय्यर ने भी अन्य कारणों से ऐसा ही किया और गीता ने अपने दो चहेते सरक्षकों का समर्थन खो दिया। अगले कुछ वर्षों में गीता की वजह से बढ़ती परेशानियों के कारण अन्य संगीतकारों ने भी किनारा कर लिया।

ओ पी नैय्यर द्वारा तिरस्कृत होना गीता को सबसे ज़्यादा तकलीफदेह गुजरा था शायद इसलिए भी कि नैय्यर के करियर लांच करने की शुरुआत उन्होंने ही की थी, उनके लिए ढेर सारे चार्टबस्टर्स गाए थे। एक दिन उन्होंने ओपी को फोन किया और पूछा कि 'मेरी गलती क्या है, जो आपने मुझे नहीं बुलाया?' एक अन्य रात,

उन्होंने फोन करके पूछा 'क्या आप इस आवाज को पहचानते हैं?' आत्म ग्लानि के चलते ओ पी से कोई जवाब देते नहीं बन पड़ा। सालों बाद, जब आशा ने ओ पी को छोड़ दिया था तो संगीतकार ने कुबूल किया था कि गीता के साथ उनका व्यवहार अनुचित था।

फिर 1958 में आई एक म्यूजिकल ब्लॉकबस्टर, *हावड़ा ब्रिज* जिस में ओ पी नय्यर ने गीता को एक गाना दिया, हेलेन पर एक कैबरे नंबर - *मेरा नाम चिन चिन चूँ*। इस ज़िंदादिल गीत ने धूम मचा दी जिसने लोकप्रियता की दौड़ में आशा के तीन सोलो को पीछे खदेड़ दिया था- जबकि उनमें मधुबाला और आशा भोसले दोनों का एक हस्ताक्षर गीत भी शामिल था, *आइये मेहरबाँ* जिसे निहायत ही खूबसूरत तरीके से कोरियोग्राफ किया गया है।

घर में चल रही उथल-पुथल के बीच, गुरु दत्त ने 1969 में *कागज़ के फूल* बनाई, जिस की हीरोइन वहीदा रहमान थीं। विडंबना यह है कि गीता ने इस फिल्म में एक अविस्मरणीय गीत गाया था, *वक़्त ने किया,* जो प्यार में तड़पती दो आत्माओं के सम्बन्ध में था, जिसे पूर्णता की तलाश में थी और जो पूर्णता उनसे कोसों दूर थी। (एसडी बर्मन का संगीत)। गीता की दर्द भरी आवाज और संतुलित भाव ने इसे घोर निराशा में डूबा हृदय विदारक गीत बना दिया। गीतकार कैफी आजमी, छायाकार वीके मूर्ति और निर्देशक गुरु दत्त ने भी गीत में अपनी जान लगा दी थी । परिणाम : एक अमरत्व का कार्य है जिसका अध्ययन करना सिनेमा के सभी छात्रों के लिए अनिवार्य है। बेहतरीन बॉलीवुड गानों की हर फेहरिस्त में *वक़्त ने किया* गीत का शुमार होना लाज़मी है।

गीता की दर्द भरी आवाज और संतुलित भाव ने गीत, *वक़्त ने किया,* को घोर निराशा में डूबा हृदय विदारक गीत बना दिया।

*एक रिकॉर्डिंग सत्र के दौरान मोहम्मद रफ़ी और संगीतकार ओ पी नय्यर (बीच में) के साथ।*

दुर्भाग्य से, फिल्म बुरी तरह फ्लॉप हुई, और गुरुदत्त भारी कर्ज में डूब गए। आठ महीने के भीतर उन्होंने फिल्म *चौदहवीं का चांद* (1970) के साथ वापसी की। परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, लेकिन दत्त दंपत्ति के बीच दरार बढ़ती चली गई, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि गीता को *चौदहवीं का चाँद* में सिर्फ एक ही गीत दिया गया था।

लेकिन गुरुदत्त की अगली फिल्म *साहिब, बीबी और गुलाम* (1962) में गीता ने अत्यंत तन्मयता से दिल को झकझोर देने वाले दो गीत गाए, लेकिन वो भी संगीतकार हेमंत कुमार की बदौलत। उन्होंने जोर देकर कहा था कि नायिका मीना कुमारी की आवाज गीता ही होगी। *ना जाओ सैयां छुड़ा के बहियाँ* और कोई दूर से आवाज़ दे गीतों के माध्यम से मीना कुमारी के चरित्र को अपनी आवाज़ में गीता ने कितने मार्मिक रूप से चित्रित किया है।

*साहिब, बीबी और गुलाम* आज भी एक क्लासिक के रूप में प्रतिष्ठित हैं और इसने कई पुरस्कार जीते हैं, लेकिन रिलीज होने पर यह व्यावसायिक रूप से विफल रही थी। गुरु परेशान थे। और तभी वहीदा ने गुरु के जीवन से हटने का फैसला किया। माना जाता है इसी वजह से 1964 में, गुरु ने नींद की गोलियों खा कर आत्महत्या कर ली। गीता बिखर गई और ग़मगीन हो गई। उसने लाइव शो के माध्यम से अपने परिवार का सहयोग करने की कोशिश की, लेकिन शराब नहीं छोड़ सकीं।

1971 में, गीता ने आखिरी बार फिल्म *अनुभव* के जरिए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था, जिसके लिए उनके भाई कनु रॉय ने संगीत तैयार किया। तनुजा और संजीव कुमार पर फिल्माया गया *मेरी जां मुझे जां ना कहो,* आज भी सम्मोहित करता है वो आवाज़ सबको चकित कर देती है ।

1972 में गीता छोड़ कर चली गई। वह लीवर सिरोसिस से पीड़ित थीं, और शराब ने उनकी जान ले ली थी । शायद वो जीने की इच्छा ही खो चुकी थी। गीता के प्रतिष्ठित गीतों में शुमार था, *मेरा सुन्दर सपना बीत गया।* अफ़सोस की बात ये है कि यही गीत उनका खुद का स्मृति-लेख बना।

*लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।*

Wordsworld

# Peace on earth, mercy too

**Sandhya Rao**

Why do we engage in war? Is it because very often political leaders don't know what else to do?

The origins of Steve Killelea's interest in peace — and war — can be attributed to a family foundation that worked with the very poor. This afforded him opportunities to visit places ravaged by conflict and interact with those affected. Along the way, he became an inventive and successful businessman. In his book, *Peace in the Age of Chaos*, he refers to a question that, metaphorically speaking, changed his life: 'Which are the most peaceful countries and what can be learnt from them to help those countries that are not?' The realisation that there were no simple answers here led to the launch of the Global Peace Index (GPI) in 2007, by which countries are ranked according to their levels of peacefulness. Research into one thing led to further studying other things, leading to fundamental insights about peace, people, conflicts and their causes.

Knowledge backed by resources prompted Killelea to set up the Institute for Economics and Peace (IEP) in 2008, in Sydney, Australia. As he writes in the introduction to the book, '…understanding what creates peace is very different from understanding the causes of violence, or even how to stop it'. The IEP looked at new ways of thinking. The GPI threw up rich data.

That's how the idea of 'Positive Peace' emerged. In contrast to Negative Peace which is basically the absence of violence, Positive Peace 'represents the attitudes, institutions and structures that create and sustain peaceful societies'. The concept is built on a framework of well-functioning governments, equitable distribution of resources, free flow of information, good relations with neighbours, high levels of human capital, acceptance of the rights of others, low levels of corruption, and a sound business environment.

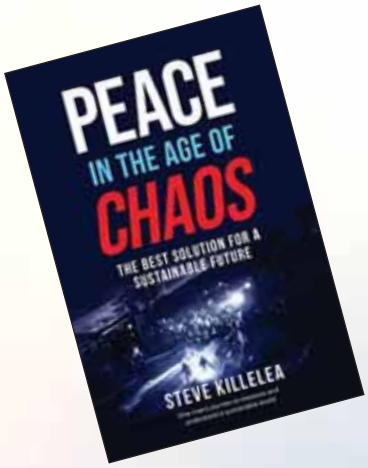


The book draws attention to commonly held perceptions, such as the relationship between terrorism and religion, notions of progress, what constitutes political leadership, ideas of identity, and so on. In one instance, Killelea talks about a project that envisaged providing electricity to a village in Myanmar, in the hopes of making it easier for children to study, women to work at home, farmers to water their fields. However, the local community preferred to light up their pagoda. For them, '…respect for Buddha and his teachings was the best form of merit rather than short-term material gains'. Such experiences led to the realisation that it was important to work with existing values of a society instead of imposing external values on them. As he writes, 'Diversity is a much-celebrated phrase today, but often means accepting a narrow set of Western progressive values.' He and his team decided that the ethnocentric attitude had to go.

Then again, take the issue of immigration. Drawing attention to the nationalist backlash in 2015 when Germany took in about one million refugees, he points out that this constituted only one per cent of the German population, whereas 'Australia has successfully absorbed the equivalent of 1% of its population in immigrants every year

for the past 50 years'. Debunking the connection between religion and terrorism, Killelea quotes from the IEP's 2014 report that '…religion is rarely the key factor in conflict, although it did play a part in about 60% of conflicts. Other factors, such as corruption, state-sponsored terror against its citizens, growing grievances, economic inequality and political instability, are much more closely correlated with conflict. On the positive side, religion can play a constructive role in improving social cohesion'.

Incidentally, the first largescale Positive Peace workshop was run with Rotary International. Killelea recalls how at the start of the workshop, someone said, 'Isn't war just a natural state, and besides, if you are on the winning side, isn't there lots to be gained from it?' Killelea responded by asking the man how many of his family he would willingly see killed for a slice of power. When he asked who wanted to live in these conditions, not one hand went up.

Steve Killelea elaborated on some of the findings and themes of the book in an email interview. Here it is; a few questions have been edited for length.

**Peace is an emotional subject which finds expression in terms of loss or longing. What are some fundamental causes for this?**

Peace has both an internal and external element to it. The internal element is expressed through all major religions where it is a central theme in all. If we look at psychology, again the aim is to improve our inner peace. Whatever the reason this internal drive to be free of afflictive emotions is built deeply into our psyche.

There is also the external perspective on peace and in many ways, it is governed by our internal sense of feelings of security, justice and family. A peaceful environment gives the best opportunity for our progeny to grow up and thrive. Therefore, often the structures of society, especially in democracies, but also other forms of government, create rules to regulate behaviour and, providing individuals stay within these rules, they will be free from persecution and protected from violence.

Studies from anthropology have also found that there are a number of traits that societies share in common. Research has covered 60 societies. Five of these common themes from this research are: love of family, a concept of shared community identity, a sense of justice, some form of ownership rights, and a respect for authority. In many ways, we can see how these traits underpin our desire for peace.

The first largescale Positive Peace workshop was run with Rotary International.

**In the book, you draw attention to the fact that we generally perceive peace in terms of the absence of violence, conflict, aggression. Please elaborate.**

The problem with peace is that it is generally seen as the absence of something, rather than an active thriving state. This is mainly because the negative emotions associated with fear or loss are more immediate, therefore most of the energy goes into stopping the causes of these emotions. The problem is further compounded by our binary way of looking at things, such as war or peace; either you are in it or not. This doesn't help for a more nuanced understanding of peace.

One of my more profound realisations is that when we say we are studying peace we are generally studying conflict, and that what is needed to stop conflict is different than what is needed to create resilient societies that do not fall into violence and can absorb shocks. These latter qualities are known as Positive Peace and that is what *Peace in the Age of Chaos* explores. But what is more profound is that the same qualities that create highly peaceful

societies also create many of the other things that we value, such as better economic performance, better performance on ecological measures, better measures of happiness and well-being, and better measures of inclusion. Therefore, Positive Peace can be seen as creating the optimal environment for human potential to flourish. This positions Positive Peace as central for development. In fact, countries that are improving in Positive Peace when compared to countries that are deteriorating have nearly three times higher GDP growth per annum.

**Why are we so fearful of immigrants, particularly in the West? Are we afraid that what happened to the American Indians and Aborigines and Jarawas and millions of indigenous peoples will happen to 'us'?**

Human emotions run deep and are often in conflict. Most religions are filled with stories of the battle within over conflicting emotions. Most humans feel both love and hate, and often towards the same individual. Reducing complex phenomena to simple narratives can be dangerous.

---

Peace is generally seen as the absence of something, rather than an active thriving state. This is mainly because the negative emotions associated with fear or loss are more immediate, therefore most of the energy goes into stopping the causes of these emotions.

---

Certainly, group identity is important. Immigration, if it is of sufficient numbers, can be seen as a challenge to the group identity and can create push back. However, there are many factors that come into play. In many western countries working conditions and wages are falling. This creates an environment where an influx of people means more competition for jobs and wages, creating a backlash.

Generally, immigration is viewed more favourably than asylum-seekers, therefore setting up procedures so that refugees are brought in as immigrants will lessen some of these tensions. But for many western countries birth rates are falling and without immigration their GDP will shrink. I can't imagine a politician going to an election saying that GDP will only shrink by one percent this year. But this brings up a bigger point about GDP growth being the measure of human progress. Immigration in the west is unlikely to stop anytime in the near future.

**Despite advances in technology that have made us more connected, we are getting increasingly intolerant. How can we get past such attitudes?**

The Internet generally has been a big positive for society. We now have access to information we could have never dreamed of having even 20 years ago; however, there are some downsides. Misinformation and echo chambers are certainly issues, as is hate speech.

I would argue that to move past intolerance we need to become more focused on what we have in common. The more we focus on differences the more likely we are to accentuate differences to the point where we only see people with different views as dangerous.

Steve Killelea

One of the aspects of Positive Peace is that it is systemic. In other words, societies operate as systems and in many ways, this is very different from the current view of how societies operate, which can be expressed as cause and effect. In systems theory, societies are seen as being path dependent where the relationships and flows within the society determine future events. We have found in workshops on Positive Peace that when using a systems approach, groups that have been in conflict come together and can get to common solutions because when looking at a problem the aim is to think forward rather than backwards. Thinking backwards often results in recriminations.

**Is there a way of maintaining a sense of continuity with regards to positive systems that keep the peace? Or will this have to be reinvented every time?**

Systems are self-perpetuating — once they are moving in a particular direction the processes tend to become self-reinforcing. This is what is called virtuous or vicious cycles. As already mentioned, systems are

path dependent, therefore the aim is to nudge the system with multiple interventions from many directions. The Positive Peace framework provides the blueprint for how to do this. What needs to be done will vary from society to society as they are unique and on their own unique path.

Although systems are different there are common approaches and some systems are more similar than others. The Positive Peace framework provides an approach for analysing a system and developing appropriate nudges or interventions to kick-start these virtuous cycles.

**The world appears to be going through a crisis of leadership. Yes, there's one Jacinda Ardern, and there was one Angela Merkel. What makes for a good leader?**

From my perspective good leadership is simple. Leaders need to be highly skilled in whatever they are managing; they must also be compassionate. Often when looking at political leadership we want someone who is tough, who can cut through the issues to be effective, but without well-developed compassion the decisions are more likely to be self-centered or even dangerous. However, compassionate people without appropriate knowledge tend to be ineffective. Therefore, for good leadership, both the head and the heart need to be combined. Often, we just look at the head.

---

For good leadership, both the head and the heart need to be combined.

---

**Is dismantling the military a solution to building more peaceful societies?**

We do not live in a peaceful world and it is unlikely to be truly peaceful anytime soon, therefore we do need the military. The bigger question is what is the right size for the military and how should it be used. One of the key questions is when is military action justified. For example, most people would agree UN-sanctioned peacekeeping operations are justified. If a country is attacked what level of response is deemed appropriate. This is another difficult question to answer. Also, what is the correct size for the military. In many ways this can be a subjective figure based on how free the population of the country is from fear.

If we look back on the last 20 years, most of the major global conflicts could have been avoided. Iraq, Syria or Libya, for instance. The aim was to overthrow ruthless tyrants, but what was left in their place was chaos that caused more human suffering than what preceded the wars. The issue here was not the military but the political leadership that couldn't secure peaceful transitions, therefore future wars need to be approached with extreme caution.

**Do we ever stand a chance of achieving peace?**

Peace is a relative concept – it only stands in comparison to something else. However, we can measure the current level of peace globally or within a country. If we set the target of creating a world that is 10 per cent more peaceful then that is well within the bounds of what most people would consider possible. To do this would mean tackling many of the world's major conflicts and not start any new conflicts. But given the state of international rivalries, there will be more wars. International bodies do help, such as the UN, OSCE and others, but many of these bodies are out of date and need reinvigorating. The UN Security Council would be a good start.

Violence comes at a huge cost. The cost of violence to the global economy was $14 trillion in 2020; this is over 10 percent of global GDP and these figures are conservative. A 10 percent reduction in violence would be equivalent to adding three new countries to the world the size of Ireland, Switzerland and Denmark. Another way of looking at this is that all overseas developmental aid (ODA) in 2020 was equivalent to roughly one percent of the global economic impact of violence.

As I write in *Peace in the Age of Chaos*, the desire to live in a safe, sustainable and prosperous world is universal. I believe it is achievable if we use a more expansive understanding of the concept of peace. It is a peace that is practical, one that recognises threats and believes a level of military action is needed. One of the important qualities of Positive Peace is that it creates societies that are more resilient. In other words, better capable of adapting to their changing environments. This is especially needed in the 21st century as the planet's ecosystems are stretched by the sheer number of people inhabiting it, pandemics, such as Covid-19, or because of the technological changes reshaping work and the way people interact.

Positive Peace, when combined with systems thinking, provides a new and exciting theory of change. It's a new way to conceptualise how societies function and a new approach to solving our most intractable problems.

*The columnist is a children's writer and senior journalist.*

# On the racks

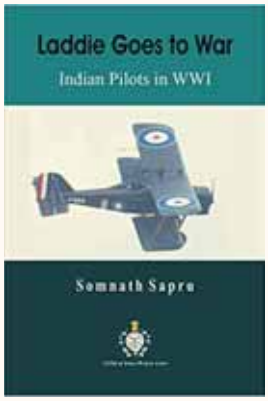


**Laddie goes to War: Indian Pilots in WWI**

Author : **Somnath Sapru**
Publisher : **Vij Books India**
Pages : **340; ₹1,250**

During the first two years of the war the Royal Flying Corps that had been set up as part of the British Army suffered heavy casualties on the Western Front in Europe. The British government was especially looking for volunteers for the flying service. This book is a story of five Indians who volunteered in World War I for flying services in the Royal Flying Corps. Four of them flew combat planes in the Royal Flying Corps in France, Belgium and Italy during the war, at a time when Indians were considered unfit to operate a screwdriver or drive a car. The volunteers including a technician, all from affluent families had no need to volunteer, but they did so and were accepted, trained and sent into battle.

**Durga Nivas - Biography of a building**

Author : **RV Rajan**
Publisher : **Creative Workshop**
Pages : **152; ₹290**

Based on the author's experience of living in a chawl in Mumbai for the first 26 years of his life this book will take the readers into the tiny one-room kholis of Durga Nivas, a fictional chawl in Matunga, Mumbai. The chawl is home to a potpourri of people from different parts of India, who lived in close proximity, sharing joys and sorrows; like one big joint family. Conversations by the common toilets, where people stood in a queue holding an empty paint and *Dalda* tins in their hands, the rumble of trains playing like background music in the complex's courtyard, fights between children escalating into fights between the respective sets of parents; this book brings alive the life of nine families who lived on the first floor of Durga Nivas from the 1940s into the 21st century.

**The Arctic Fury**

Author : **Greer Macallister**
Publisher : **Sourcebooks Landmark**
Pages : **408; ₹2,120**

In 1853 Virginia Reeve is summoned to Boston by Lady Jane Franklin who wants her to lead a group of 12 women to the Arctic. Lady Franklin expects the women to find her lost husband Sir John Franklin, his expedition party and two missing ships. Virginia has experience as a guide leading travellers to Oregon but this is a different journey into one of the world's harshest environments. Each of the women in the group is picked for their individual skills; a real mixture of ages, personalities and backgrounds. The story is about how this diverse group of women get along and undertake this hazardous trip. The story has an alternating timeline — it goes between the journey to the Arctic and eighteen months later in Boston where Virginia is on trial, accused of kidnapping and murdering socialite Caprice Collins.

Compiled by Kiran Zehra

# रोटरी क्लब स्पीक नगर व्यापक स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करता है

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब स्पीक नगर, रो ई मंडल 3212,अपने 47वें चार्टर वर्ष परविभिन्न सेवा परियोजनाएं चला रहा है, जिसमें मुख्य रूप से ध्यान स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने पर है।

पिछले पांच वर्षों से क्लब द्वारा आयोजित किए जा रहे वार्षिक बाल चिकित्सा हृदय शिविरों की वजह से 100 से अधिक बच्चे स्वस्थ जीवन जी रहे है। तूतीकोरिन पब्लिक वेलफेयर सेंटर के सहयोग सेक्लबचेन्नई के अपोलो हॉस्पिटल्स में शिशुओं एवं छोटे बच्चों के लिए हृदय जांच शिविर आयोजित करता है और जरूरतमंद मरीजों के लिए सुधारात्मक सर्जरियाँ प्रायोजित करता है। हम यात्रा, आवास, भोजन और अस्पताल में भर्ती सहित पूरी लागत का ख्याल रखते है, क्लब के पूर्व अध्यक्ष राधाकृष्णन कहते है।

*एक लाभार्थी को कृत्रिम अंग दिया जा रहा।*

इसके कृत्रिम अंग और गतिशीलता सहायता वितरण शिविरों ने पिछले पांच वर्षों में कम से कम 300 शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को लाभान्वित किया है। इन अंगों को रोटरी कोयंबटूर मिडटाउन आर्टिफ़िशियल लिम्ब सेंटर द्वारा रियायती लागत पर निर्मित और प्रदान किया जाता है। केंद्र के तकनीशियन शिविरों में जाकर कृत्रिम अंगों के लिए लाभार्थियों का माप लेते है, एवं अंगों को फिट करने और उपयोगकर्ताओं को चलने के लिए प्रशिक्षण देने में सहायता प्रदान करते है। इस पहल के लिए हर साल क्लब ₹ 5 लाख खर्च करता है। लाभार्थियों की पहचान तूतीकोरिन डिस्ट्रिक्ट रिहैबिलिटेशन सेंटर द्वारा निःशक्तजन एवं पैरालंपिक एसोसिएशन के लिए की जाती है।

*एक बाल चिकित्सा स्क्रीनिंग शिविर।*

इस वर्ष रोटरी क्लब मेलवाती, मलेशिया, रो ई मंडल 3300,के वैश्विक अनुदान समर्थन के साथ शिविर का आयोजन किया गया। AM फाउंडेशन, चेन्नई; SPIC और ग्रीनस्टार फ़र्टिलाइज़र ने क्लब के साथ भागीदारी की। SPIC के तत्कालीन निदेशक डठ्रामाकृष्णन और COO ई बालू ने इस शिविर की अध्यक्षता की जिससे लगभग 80 लोग लाभान्वित हुए।

अरविंद आई हॉस्पिटल्स के सहयोग सेक्लबहर साल नेत्र शिविरों का आयोजन करता है, मोतियाबिंद सर्जरियों को प्रायोजित करता है और वंचित लोगों के लिए चश्मे वितरित करता है। साल में दो बार सामान्य चिकित्सा शिविर और रक्तदान शिविर इसके अन्य लंबे समय से चल रहे स्वास्थ्य कार्यक्रम है।

स्कूली बच्चे हर साल हमारी विज्ञान प्रदर्शनी की प्रतीक्षा में रहते है। हम कई वर्षों से इसे आयोजित कर रहे है और 400 छात्र इसमें भाग लेते है, क्लब अध्यक्ष मुथारासु कहते है। क्लब पिछले छह वर्षों से वार्षिक RYLA की मेजबानी कर रहा है। इसमें 10 महाविद्यालयों की कम से कम 50लड़कियों की भागीदारी रहती है। ■

# यह भी बीत जाएगा

शीला नंबीयार

हम सभी जानते है कि परिवर्तन अनिवार्य है। एक जापानी शब्द है, वाबी-साबी जो मुझे बहुत पसंद है। इसका सीधा सा अर्थ होता है कि कुछ भी स्थायी नहीं है, कुछ भी परिपूर्ण नहीं है, और कुछ भी समाप्त नहीं होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कैसे हम चिंता से पंगु होने के बजाय आगे बढ़ने के सर्वोत्तम संभव तरीके की मदद से परिवर्तन का सामना करते है? हम अपने लाभ के लिए परिवर्तन का उपयोग कैसे कर सकते है?सभी ने कुछ हद तक परिवर्तन का अनुभव किया है विशेष रूप से पिछले वर्ष महामारी के दौरान। सभी को नुकसान और तनाव से जूझना पड़ा।

परिवर्तन रोमांचक या चुनौतीपूर्ण हो सकता है या यह कभी-कभी विनाशकारी भी हो सकता है। नौकरी बदल जाना/खोना, विवाह, तलाक, घर बदलने या एक महामारी जैसे बड़े जीवन परिवर्तन से लेकर नई कार खरीदने, अपने घर का फर्नीचर बदलने या किसी पत्रिका/अखबार की सदस्यता रद्द करने जैसे छोटे परिवर्तन विभिन्न प्रकार की भावनाओं को सामने ला सकते है जो या तो आपको आगे बढ़ा सकती है या आपको शंका से ग्रसित कर सकती है। परिवर्तन हमारे डर को उजागर करता है। खासकर नियंत्रण में कमी के हमारे डर को। हम सभी अपने जीवन पर नियंत्रण की भावना महसूस करना चाहते है लेकिन सच तो यह है कि हमारे पास नियंत्रण करने हेतु ज्यादा कुछ नहीं है। जब हम इसे समझते है और परिवर्तन को अच्छे से स्वीकार करते है, तो हमें परिस्थितियों को अपनाने और उसके साथ चलने में आसानी महसूस होती है।

## वे दृष्टिकोण जो मदद करते है

**परिवर्तन को शालीनतापूर्वक स्वीकार करें:** परिवर्तन जीवन का अनिवार्य हिस्सा है।

**परिवर्तन का स्वागत करें:** यदि आप इस बात को आत्मसात करना सीख जाते है कि परिवर्तन होना अनिवार्य है, तो उसके होने पर आप कम चौंकेंगे और आपको कम आघात पहुँचेगा। इसका मतलब यह नहीं है कि आप हमेशा कुछ बुरा होने की प्रतीक्षा में रहें, जो अपने आप में तनावपूर्ण हो सकता है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि आप हर प्रकार की परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार रहे।

**परिवर्तन से सीखें:** जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हम इससे सीख सकते है। नए कौशल हासिल करें, एक अलग दृष्टिकोण प्राप्त करें और उससे सर्वश्रेष्ठ करें। जब हम कुछ अलग सोचते है या चीजों को अलग तरह से करते है तो हमारा दिमाग लगातार काम करता है। मस्तिष्क की इस क्षमता को न्यूरोप्लास्टी कहा जाता है जो हमें बेहतर अनुकूलन में मदद कर सकती है।

**सकारात्मक पर ध्यान दें लेकिन नकारात्मक के प्रति सजग रहें:** हर परिस्थिति के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलू होते है। जहाँ हमें बदली हुई

स्थिति के नकारात्मक पहलुओं पर स्पष्ट होने की आवश्यकता होती है (शायद आप जिस नए घर में गए हो वो आपके कार्यस्थल से दूर हो), वहीं दूसरी ओर हमें सकारात्मक पहलू पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है (यह एक बढ़िया इलाके में है और आपके बच्चों के स्कूल के करीब है)।

**परिवर्तन के साथ आगे बढ़ें:** विकास का अवसर हमेशा होता है। यदि आप इन अवसरों की तलाश करते है, तो विकास होता है। उदाहरण के लिए, एक शादी या किसी रिश्ते का अंत विनाशकारी लग सकता है लेकिन यह अपने स्वयं के व्यक्तित्व का पता लगाने, एक नई नौकरी पाने, आगे की पढ़ाई करने या एक नए शहर में जाने का अवसर हो सकता है। यह आत्म-अन्वेषण का एक अवसर हो सकता है जो संभवतः एक खराब रिश्ते में कहीं दबकर रह गया हो।

**यह जान लें कि मनुष्य अत्यधिक लचीला हो सकता है:** लचीलापन, संभाल जाने की क्षमता, किसी झटके/परिवर्तन का सामना करना और पहले से बेहतर होना एक कौशल है। कुछ लोग चुनौतियों का सामना करने में निपुण होते है जबकि अन्य इससे आसानी से घबरा जाते है। लचीलापन हालांकि एक सुशिक्षित कौशल हो सकता है। अपने आप पर भरोसा रखें कि चाहे कोई भी परिवर्तन का सामना करना पड़े आप सबका डटकर सामना कर सकते है।

## विचार जो परिवर्तन का विरोध करते है

* यह अद्भुत स्थिति कभी नहीं बदलेगी
* मेरा जीवन हमेशा इसी तरह चलेगा
* यह सब 'मेरा' है और केवल मेरा है।
* मैं इतना ही जानता हूं और इतना ही जानना चाहता हूं
* मेरी बदलने की आयु नहीं रही
* मैं अलग ढंग से नहीं सोच सकता
* मैंने अपने सभी अंडे इस एक टोकरी में रख दिए है। अगर मैंने इसे खो दिया तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा
* यह बहुत मुश्किल है
* मैं इस स्थिति में बहुत सहज हूं। मैं किसी अन्य में सहज नहीं हो सकता
* मैं कुछ और नहीं कर सकता और न ही करूंगा
* मैं नए कौशल सीखने में असमर्थ महसूस करता हूँ
* मैं इसे अपने आप नहीं कर सकता
* मुझे अपने आप पर तरस आता है
* जीवन अन्यायपूर्ण है।

## विकास की मानसिकता रखें

स्टैनफोर्ड में मनोविज्ञान की एक प्रोफेसर कैरोल ड्वेक, अपनी पुस्तक माइंडसेट: दी न्यू साइकालजी ऑफ सक्सेस में 'विकासशील मानसिकता' की बात करती हैं। इसमें वह कहती है, इस मानसिकता में, आप जिस स्थिति का सामना कर रहे है वो विकास का शुरुआती बिंदु है। यह विकासशील मानसिकता इस विश्वास पर आधारित है कि आपके मूल गुण वे चीजें हैं जिन्हें आप अपने प्रयासों के माध्यम से विकसित कर सकते है। परिवर्तन का सामना करने के लिए एक विकासशील मानसिकता आवश्यक होती है। जब आपकी मानसिकता स्थिर होती है तो आप चुनौतियों से बचने की कोशिश करने लगते है, आसानी से हार मान जाते है, प्रयास को व्यर्थ रूप से देखते है, प्रतिक्रिया नकारात्मक हो तो उसे अनदेखा करने लगते है और दूसरों की सफलता से जलने लगते है।

## परिवर्तन के दौरान स्वयं की देखभाल

- उन चीजों का अभ्यास जारी रखें (या विकसित करें) जो आपको स्थिरता प्रदान करें: नियमित व्यायाम जैसे अभ्यासों को परिवर्तन की अवधि के माध्यम से जारी रखा जाना चाहिए। यह सिर्फ एक घंटे की पैदल यात्रा हो सकती है, लेकिन तथ्य यह है कि आप केवल उसी अभ्यास को जारी रखने में सक्षम होते है जिसके आप आदी है और जिसपर आपका नियंत्रण है, जो आपको परिवर्तन के समय स्थिरता प्रदान करेगा। यदि आप नियमित रूप से व्यायाम नहीं करते है तो आप इसकी शुरुआत अभी से कर सकते है। हम सभी जानते है कि व्यायाम से हमारी मनोदशा बेहतर होती है। बदलते समय में एक सकारात्मक मस्तिष्क बहुत मदद करता है।
- सेहतमंद भोजन लें: चिंता होने पर आप ज्यादा खाने या अस्वास्थ्यकर भोजन खाने के आदी हो सकते है। ऐसे समय पर सेहतमंद, पौष्टिक भोजन खाने से भी आप अच्छा महसूस करेंगे और मानसिक रूप से मजबूत बनेंगे। जब आपका दिमाग बहुत सारी व्यर्थ चीजों से भर जाता है तो आपकी याददाश्त कमजोर होना आम बात बन जाती है। यदि आप अक्सर आसक्त रहते है या बिना सोचे समझे खाते है तो आपका वजन बढ़ना लाजमी है। यह सब केवल असुविधापूर्ण परिवर्तन की ओर ले जाता है।
- सामाजिक रूप से जुड़ें: प्रामाणिक रिश्तों से जुड़े रहें। परिवर्तन के समय में करीबी परिवार/दोस्तों का समर्थन मिलना आवश्यक होता है। इसका अर्थ हुआ उनसे जुड़े रहने के प्रयास करते रहना। शोध से पता चला है कि मजबूत सामाजिक समर्थन तनाव को कम करता है।
- पर्याप्त नींद लें: चिंतित या परेशान होने पर नींद कम होना आम बात है। नींद की कमी से सोचने की शक्ति भी प्रभावित हो सकती है, जो आपको उदास कर सकती है जिससे आप अधिक मात्रा में खाने लग जाते है।
- सचेत रहें: कथित तनाव के समय अभिभूत होना और दिमाग का काम न करना आम बात होती है। इस संदर्भ में सचेत ध्यान जैसे अभ्यास आपकी काफी मदद करते है।
- मन हल्का रखे: कभी-कभी किसी स्थिति में हंसने और उसमें हास्य देखने में सक्षम होना अच्छा होता है। यह स्पष्ट रूप से उस स्थिति पर निर्भर करता है (उदाहरण के लिए आप किसी के अंतिम संस्कार में हास्य नहीं ढूँढना चाहेंगे), लेकिन अक्सर, जब हम जीवन के हल्के पक्ष को देखते है और खुद को बहुत गंभीरता से नहीं लेते है तो रास्ते में जो भी स्थिति आती है उसका सामना करना आसान हो जाता है।

आपके दृष्टिकोण के आधार पर परिवर्तन बहुत चुनौतीपूर्ण और संतोषजनक हो सकता है। अनुकूलन और बढ़ने की क्षमता हमारे अंदर आत्मविश्वास की भावना पैदा करती है। सीखें और आगे बढ़ें और यदि आप एक कठिन समय से गुजर रहे है तो याद रखिए कि 'यह भी बीत जाएगा'।

लेखक एक जीवन शैली चिकित्सक है।
*sheela.nambiar@gmail.com*
*www.drsheelanambiar.com*

# Rotary PEOPLE OF ACTION मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब मनोरा पट्टुक्कोटाई - रो ई मंडल 2981

क्लब के अध्यक्ष एम एस सेल्वराज ने क्लब के सिलाई केंद्र में तीन महीने का कोर्स पूरा करने वाले प्रशिक्षार्थियों के दूसरे बैच को प्रमाणपत्र प्रदान किए।

## रोटरी क्लब नासिक ग्रेप सिटी - रो ई मंडल 3030

कोरोना वायरस के प्रसार से सुरक्षा के रूप में लगभग 200 ऑटोरिक्शाओं में सुरक्षा तंत्र विभाजक लगाए गए। इस वितरण अभियान में डीजी शब्बीर शकीर शामिल हुए।

## रोटरी क्लब सेलम - रो ई मंडल 2982

क्लब अध्यक्ष जी कामराज की उपस्थिति में रामकृष्ण मिशन डिस्पेंसरी, सलेम की फिजियोथेरेपी इकाई को ₹35,000 की लागत से एक उपकरण दान किया गया।

## रोटरी क्लब अलवर शौर्य - रो ई मंडल 3053

चौकी शेख सराय में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय को फिनाइल, टॉयलेट क्लीनिंग सॉल्यूशन, हैंडवाश लिक्विड और सैनिटाइजर एवं सैनिटाइजर स्टैंड दान किए गए।

## रोटरी क्लब पंचशिला पार्क - रो ई मंडल 3011

क्लब अध्यक्ष अनिल साहनी ने रोटरी ब्लड बैंक, दिल्ली को प्लेटलेट्स विभाजक उपकरण सौंपे। दानकर्ता अब सभी रक्त समूहों के प्राप्तकर्ताओं को प्लेटलेट्स दान कर सकते है।

## रोटरी क्लब मांडवी - रो ई मंडल 3054

नेचर सिक्योर सोसाइटी के साथ साझेदारी में क्लब द्वारा विंडफार्म समुद्र तट और टोपनसर झील स्थल पर पच्चीस कूड़ेदान लगाए गए।

# मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब सूरत राउन्ड टाउन - रो ई मंडल 3060

एक मंडल परियोजना के तहत तीन स्कूलों को हाथों की धुलाई के स्टेशन दान किए गए और विद्यार्थियों के लिए हाथों की धुलाई का एक प्रदर्शन आयोजित किया गया।

## रोटरी क्लब चांदौसी सिटी स्टार - रो ई मंडल 3100

विश्व शांति दिवस पर मैक्स अस्पताल के सहयोग से एक वाकथॉन का आयोजन किया गया। एसपी (संभल) चक्रेश्वर राज द्वारा उद्घाटन किए गए इस कार्यक्रम में रोटेरियनों के अलावा लगभग 500 लोगों ने भाग लिया।

## रोटरी क्लब धर्मशाला - रो ई मंडल 3070

क्लब के सदस्यों ने स्थानीय स्वास्थ्य विभाग के साथ एक NID पर चार झुग्गी बस्तियों के 80 बच्चों को पोलियो की बूंद पिलाने हेतु भाग लिया।

## रोटरी क्लब आगरा ताज सिटी - रो ई मंडल 3100

मल्होत्रा नर्सिंग होम और स्मृति संस्थान के साथ साझेदारी में एक विशाल चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया और लगभग 200 महिलाओं की जांच की गई। सर्वाइकल कैंसर पर एक जागरूकता सत्र भी आयोजित किया गया।

## रोटरी क्लब शाहबाद मरकंडा - रो ई मंडल 3080

सिद्धार्थ अस्पताल में एक स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया जिसने शहर के बुजुर्गों और बीमारों को लाभ पहुंचाया।

## रोटरी क्लब बलिया - रो ई मंडल 3120

बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, अस्पताल और अन्य स्थानों पर जरूरतमंद लोगों को लगभग 100 कंबल वितरित किए गए।

# Rotary PEOPLE OF ACTION मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब सोलापुर - रो ई मंडल 3132

महिला दिवस पर एक रोटरी साइकिल बैंक परियोजना का उद्घाटन किया गया। पहली पांच साइकिल बी एम पुल्ली कन्या प्रशाला को सौंपी गई। क्लब ने वंचित परिवारों की छात्राओं को उपयोग की जा चुकी छह साइकिलें भी दान की।

## रोटरी क्लब चांदनगर आर सी पुरम - रो ई मंडल 3150

BHEL स्टेडियम में रोटरी के 116वें वर्ष को चिह्नित करने के लिए एक शांति यात्रा का आयोजन किया गया। क्लब के सदस्यों ने जनता के बीच रोटरी और उसकी गतिविधियों के बारे में जागरूकता पैदा की।

## रोटरी क्लब विश्रामबाग - रो ई मंडल 3170

क्लब ने पसायदान स्कूल, सांगली में एक मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता सत्र का आयोजन किया और स्कूल में छात्राओं को सैनिटरी नैपकिन वितरित किए।

## रोटरी क्लब कुशलनगर - रो ई मंडल 3181

जेएसएस डेंटल कॉलेज के साथ क्लब ने दृष्टिबाधित व्यक्तियों को सफेद छड़ियाँ और रेडियो वितरित किए। रोटरी हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में डीएसपी एच एम शैलेन्द्र मुख्य अतिथि थे।

## रोटरी क्लब शिमोगा - रो ई मंडल 3182

रोटरी क्लब फोर्ट कॉलिन्स-ब्रेकफास्ट और फोर्ट कॉलिंस आफ्टर वर्क के साथ एक वैश्विक अनुदान परियोजना (₹78.77 लाख) के माध्यम से रोटेरियन डॉ बी वेंकट राव की याद में एक रोटरी मैमोग्राफी सेंटर का उद्घाटन किया गया।

## रोटरी क्लब कोचीन बीचसाइड - रो ई मंडल 3201

अलुवा के सरकारी अस्पताल को ₹7.75 लाख के कोविड देखभाल उपकरण सौंपें गए। यह परियोजना एस्पिनवॉल की सीएसआर पहल के अंतर्गत की गई थी।

# मंडल गतिविधियाँ

## रोटरी क्लब तिरुनेलवेली टाउन - रो ई मंडल 3212

क्लब अध्यक्ष एम. रामसामी और IMPA, स्थानीय खंड के अध्यक्ष टी शिवसुब्रमण्यन की उपस्थिति में एक वृद्धाश्रम में नेत्रहीन महिलाओं को चादरें दी गई।

## रोटरी क्लब राउरकेला रिवरसाइड - रो ई मंडल 3261

हर के छेंड कॉलोनी में सफाई कर्मचारियों को जैकेट दिए गए। एक अनाथालय-सह-स्कूल को लगभग 100 कंबल वितरित किए गए।

## रोटरी क्लब पर्णमबुत - रो ई मंडल 3231

ग्रीन वैली स्कूल में आयोजित किए गए सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के दौरान खझझ जावेद खान ने स्थानीय पुलिस स्टेशन को रोड बैरिकेड्स सौंपे। रोटेरियन अलियार अमीन अहमद ने बाइक चालकों को हेलमेट दान किए।

## रोटरी क्लब बरीपदा हेरिटेज - रो ई मंडल 3262

मयूरभंज के बिरेश्वरपुर सरकारी हाई स्कूल में एक मौखिक स्वच्छता शिविर में लगभग 70 विद्यार्थियों के दंत रोगों की जांच की गई। इसके बाद एक जागरूकता सत्र आयोजित किया गया।

## रोटरी क्लब पटना कंकरबाग़ - रो ई मंडल 3250

क्लब ने नेत्र निदान नेत्र अस्पताल के 55 रोगियों के लिए मोतियाबिंद सर्जरी का आयोजन किया। पूर्व अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार ने सर्जरियाँ की।

## रोटरी क्लब कलकत्ता यूनिवर्स - रो ई मंडल 3291

शहर में साइकिल चालक महेश कुमार के पड़ाव के दौरान क्लब द्वारा उनका आतिथेय किया गया। वह स्वच्छ, हरित और साक्षर भारत' को बढ़ावा देने के लिए एक एकल मिशन (30 दिनों में 6,000 किमी) पर थे।

*वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित*

# हमारे पोते से मिलने के लिए कोई तकलीफ मायने नहीं रखती

**टीसीए श्रीनिवासा राघवन**

पिछले महीने, एक लंबे अरसे के बाद, हम भाग्यशाली रहे । अपने पोते से मिलने हम स्विट्ज़रलैंड गए थे जिसका जन्म पिछले साल जुलाई में हुआ था। मेरा बेटा वहां के एक विश्वविद्यालय में शोध कर रहा है। लेकिन उस वक्त हम इसलिए जा नहीं पाए थे क्योंकि स्विस सरकार कोई वीज़ा जारी नहीं कर रही थी। फिर अचानक इस साल जनवरी में उन्होंने फैसला किया कि अगर वहां किसी बच्चे का जन्म हुआ है तो उसके दादा-दादी और भाई-बहन मिलने आ सकते हैं। यह एक विशेष प्रयोजन वीजा था, जिसकी अवधि छह महीने थी। आयश्यक कागज़ातों को इकट्ठा करने के बाद हमने आवेदन किय । इसमें बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र और अन्य प्रमाण सम्मिलित थे। एक हफ्ते में वीजा आ गया। अंततः मार्च की शुरुआत में हमने दिल्ली अमीरात एयरलाइन्स से जिनेवा के लिए उड़ान भरी । पहले हम स्विस एयर से जाते थे थे लेकिन इन दिनों दिल्ली से यह उड़ान उपलब्ध नहीं थी।

स्वाभाविक है अमीरात की उड़ान का मार्ग दुबई हो कर था इसलिए ये पहली चेतावनी है। हालांकि - पूरे उड़ान में मास्क से चेहरे को ढकने के बावजूद उड़ान शानदार रही थी - पर दुबई हवाई अड्डे का अनुभव इसके विपरीत था। अन्य दिशाओं से आ कर पश्चिम की ओर जाने वाली उड़ानों के लिए आपको अपनी कनेक्टिंग फ्लाइट के गेट तक जाने के लिए करीब 35-50 मिनट तक पैदल चलना पडेगा । हमें 43 मिनट लगे और 3,978 कदम चले थे। वापसी में भी वही हुआ। सौभाग्य से, दोनों बार, हमारे पास काफी समय था - दो घंटे आउटबाउंड और चार घंटे इनबाउंड। लेकिन आप जानते हैं ? यदि आप इकॉनौमी में यात्रा कर रहे हैं तो आपके बैठने के लिए कोई व्यवस्था नहीं है, सिवाय गेट के पहले वाले प्रतीक्षा क्षेत्र के। और वो क्षेत्र उड़ान से सिर्फ एक घंटे पहले खुलते हैं। रेस्तरां ही एकमात्र विकल्प हैं लेकिन आप वहां चार घंटे कैसे बिता सकते हैं ? बुज़ुर्ग व्यक्तियों के लिए अनुभव अप्रिय है। मेरा मानना है कि फ्रैंकफर्ट हवाई अड्डे पर भी आपको काफी लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।

लेकिन जिनेवा इसके बिलकुल उलट था, कम से कम पैदल चलने की बात करें तो । यह अपेक्षाकृत एक छोटा हवाई अड्डा है, जो कोलकाता या चेन्नई से ज़रा ही बड़ा है। लेकिन पिछले बार की तरह जब हम यहां उतरे, तो इस बार कोई एयरोब्रिज नहीं था। साथ ही बहुत कड़ाके की ठंड थी। हम बसों में चढ़े हुए थे और सोशल डिस्टन्सिंग की किसी को परवाह नहीं थी। बाद में हमने पाया कि बहुत कम लोगों ने मास्क पहनते थे, केवल बंद स्थान में जैसे दुकान के भीतर या ट्रेन में। हमारी उड़ान रात में उतरी थी और हम उबर टैक्सी से लुसाने गए जहाँ मेरा बेटा रहता है। यह जिनेवा से लगभग 80 किमी दूर है। यह देखआश्चर्य हुआ कि स्विस राजमार्ग, अन्य पश्चिम यूरोपीय देशों की तरह रौशन नहीं रहते। चारों तरफ घना अंधेरा था। हमने एक एयर बी एंड बी फ्लैट में तीन दिनों के लिए स्वैच्छिक रूप से क्वारंटाइन रहने का निर्णय किया। यह कोई आनंददायक प्रवास नहीं था क्योंकि हम अपने पोते को देखने के लिए बहुत उत्सुक थे।

> दुबई में हमें एयर सुविधा पर स्व-घोषणा पत्र की दो नहीं चार प्रतियों की आवश्यकता है। दो अतिरिक्त प्रतियों की कीमत 60 धीरम थी करीब ₹1200!

लेकिन इतनी लंबी उड़ान के बाद हम कोई जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। अपने बेटे के फ्लैट में जाने से पहले हमने अपना कोरोना टेस्ट करवाया। यह काफी महंगा है, लेकिन RTPCR परीक्षण की तुलना में ये कुछ भी नहीं जो हमें लौटने से 72 घंटे पहले करवाना था - प्रति व्यक्ति ₹12,000। मुझे बताया गया था, यूके में वे प्रति व्यक्ति 250 पाउंड लेते हैं! यह ईस्टर का सप्ताहांत है, लुसाने के सभी परीक्षण केंद्र पहले से ही बुक थे। इसलिए हमें ट्रेन से 30 किमी की यात्रा कर पास के गाँव जाना पड़ा। इस की कीमत में ₹6,000 और जुड़ गए जो जेनेवा आने जाने की एक टिकट की आधी कीमत के बराबर था। वापसी में, दुबई में दिल्ली के लिए उड़ान भरने से पहले, कई अन्य यात्रियों के साथ, हमें बताया गया था कि हमें एयर सुविधा पर स्व-घोषणा पत्र की दो नहीं चार प्रतियों की आवश्यकता है। दो अतिरिक्त प्रतियों की कीमत 60 धीरम थी करीब ₹1200! जाहिर है, हर कोई यात्रियों से मौके का फायदा उठा रहा था।

लेकिन आप जानते हैं ? हमारे पोते से मिलने के मुकाबले ये कुछ नहीं है। और थोड़े से रुपयों की परवाह कौन करता है? ■

# संक्षेप में

## संयुक्त अरब अमीरात की महिला अंतरिक्ष यात्री

दुबई के प्रधानमंत्री और शासक शेख मोहम्मद बिन राशिद अल-मकतूम ने ट्विटर के माध्यम से अमीराती अंतरिक्ष कार्यक्रम में अगले 2 अंतरिक्ष यात्रियों को नामित किया है, जिसमें देश की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री नोरा अल-मथ्रोशी भी शामिल हैं। नोरा और उनके समकक्ष मोहम्मद अल-मुल्ला को संयुक्त अरब अमीरात में 4,000 आवेदकों में से चुना गया था। वे टेक्सास के ह्यूस्टन में नासा के जॉनसन स्पेस में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। इस फरवरी में, यूएई ने अपने उपग्रह उपग्रह - अमल या होप को मंगल ग्रह की परिक्रमा में लगा दिया है और सन् 2024 तक चंद्रमा की सतह पर एक मानव-रहित अंतरिक्ष यान रखने की उम्मीद की है। सन् 2117 तक मंगल ग्रह पर मानव कॉलोनी बनाने की भी उनकी योजना है।

## सीटी बजाने की भाषा

मेघालय के शिलांग से 65 किलोमीटर दूर स्थित कोंगथोंग गांव में सीटी की एक विशेष भाषा है। सदियों से गांव ने इस सीटी कोड को पोषित किया है जिसे जिंगरवाई इवबेई कहा जाता है जिसे माताएं अपने नवजात शिशुओं के लिए एक सीटी टोन को चुनती हैं। जब बच्चा बड़ा होकर एक व्यस्क बन जाता है तब यह सीटी टोन उसके साथ एक पहचान चिन्ह के रूप में होता है। समुदाय के बुजुर्ग उम्मीद कर रहे हैं कि यूनेस्को के विरासत टैग एवं स्कूल की मदद से वे इस सीटी बजाने की परंपरा को जीवित/जारी रख पाएंगे। मेघालय ने लंबे समय से मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में सीटी नामकरण को शामिल करने की मांग की है। हाल ही में, दक्षिण शिलांग के विधायक सन्बोर शुल्लई ने कल्चरल हेरिटेज ऑफ ह्यूमेनिटी सेंटर को लिखा है जिसमें वह मेघालय की इस मौखिक परंपरा के लिए विरासत टैग की मांग कर रहे हैं जिसमें अभी केवल 700 ऐसे सीटी टोन के दक्ष लोग बचे हैं।

## बिहार, झारखंड स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए बड़ा दान

भारतीय-अमेरिकी युगल रमेश और कल्पना भाटिया जो टेक्सास, अमेरिका से हैं, उन्होंने बिहार झारखंड एसोसिएशन ऑफ नार्थ अमेरिका (इग-छ-) के माध्यम से बिहार और झारखंड में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करने के लिए 1 करोड़ (₹150,000) का दान दिया। इस दान का उपयोग दोनों राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा के प्रयासों हेतु प्रवासी एलुमिनी निशुल्क (झठअछ) के माध्यम से किया जाएगा जो कि इसी समान विचारधारा वाले भारतीय-अमेरिकी चिकित्सकों की एक पहल है, जो बिहार और झारखंड में गरीबों को स्वास्थ्य सेवाओं को प्रदान करने के लिए काम कर रही है।

## एक डेयरी ने 72 घंटे में एक ऑक्सीजन प्लांट बनाया

उत्तर गुजरात के बनासकांठा जिले में बनास डेयरी ने ऑक्सीजन की भारी कमी से उबरने के लिए अपने जिला मेडिकल कॉलेज की मदद हेतु 72 घंटे में ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना की। प्रबंधन ने आत्म-निर्भर बनने का फैसला तब किया, जब पालनपुर में डेयरी समर्थित 'बनास मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट' में 125 कॉविड मरीजों के लिए ऑक्सीजन की कमी हो गई और काफ़ी जद्दोजहद के बाद वे कुछ सिलेंडर का इंतज़ाम करने में कामयाब हो पाए। नए प्लांट में रोजाना 93-96 प्रतिशत की शुद्धता के साथ 680 किलो मेडिकल ग्रेड ऑक्सीजन उत्पन्न करने की क्षमता है और यह एक दिन में 35-40 रोगियों की सेवा कर सकता है।

## मधुमेह पर परामर्श के लिए एक ऐप

इस डरावने समय के दौरान, कोविड संक्रमण होने के डर से हर कोई डॉक्टर के क्लीनिक या अस्पतालों में जाने से बचना चाहता है। जबकि कई नियमित जांच आगे बढ़ाये जा सकते हैं, लेकिन मधुमेह के साथ ऐसा करना हम गंवारा नहीं कर सकते। चेन्नई के एक रामचंद्रन हॉस्पिटल्स के प्रमुख डॉ ए रामचंद्रन कहते हैं, 'इसी को ध्यान में रखते हुए हम 'डायहोम' नाम का एक ऐप लेकर आए हैं, जिसे आप अपने फोन पर डाउनलोड कर सकते हैं और मेरे या हमारे किसी भी डायबिटोलॉजिस्ट के साथ ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं।वह रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल के सदस्य हैं। अपॉइंटमेंट बुक होने के बाद अस्पताल का एक प्रतिनिधि मरीज से ब्लड शुगर की लेटेस्ट रिपोर्ट, दवाइयां/इंसुलिन जो भी कुछ ले रहे हैं उनकी जानकारी, आदि तैयार रखने को कहता है और अगले दिन डॉक्टर को वीडियो कॉल के जरिए मरीज से जोड़ा जाता है। अस्पताल घर पर खून की जांच और दवाओं की डिलीवरी का भी प्रबंध करता है। (अधिक जानकारी के लिए care@diahome.com पर संपर्क करें)

*किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।*

Regn. No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

ADVT.

MAHÉ

Serving
Coastal Food

A Restaurant at Goa
Near Anjuna Beach

Serving
Japanese and Korean Food

A Restaurant at Goa
Near Dolphin Circle, Calangute

ROBOTO
Izakaya & Ramen House

SAJ IN
THE FOREST
at Pench in
Madhya Pradesh.

ROCKSEA
Serving Tapas Food
A Restaurant at Goa
Near Anjuna Beach

SAJ
BY THE
LAKE
MALSHEJ GHAT

LA TIM GROUP
102, Navkar Plaza, Bajaj Road,
Vile Parle (W), Mumbai - 400056.
Tel. No.+91 22 26202299 / 26203434
+91 22 26203399 / 62875252

E : enquiry@sajresort.in • www.sajresort.com sajbythelake rocksea_goa robotogoa mahegoa